CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सार

महामहोपाध्याय
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सार

महामहोपाध्याय
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

मुद्रक

जगदीशप्रसाद, एम. ए., बी-काम.
एज्युकेशनल प्रेस, आगरा

मूल्य : ६.०० रुपये

प्रथम संस्करण : मार्च १९६४

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकाशकीय

ऋग्वेद संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है और आर्यों के धर्म, संस्कृति, सभ्यता और इतिहास का यही एक मात्र मूल स्रोत है।

महामहोपाध्याय पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ने प्रस्तुत ग्रंथ में ऋग्वेद के मंत्रों के आधार पर तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने इस ग्रन्थ की उपादेयता के महत्व को समझ कर इसके प्रकाशन का निर्णय लिया है। शोध-कर्ताओं तथा ऋग्वेद का सार जानने वाले व्यक्तियों को इससे बड़ी सहायता मिलेगी।

पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ वैदिक-साहित्य के जाने-माने विद्वान् हैं। उन्होंने डा० अविनाशचन्द्रदास कृत Rigvedic Culture (ऋग्वेद कालीन संस्कृति) का भी हिन्दी अनुवाद तैयार किया है।

साहित्य अकादमी आभारी है कि रेउ जी ने सुधी पाठकों के लिये यह उपयोगी ग्रन्थ तैयार किया।

विश्वास है कि 'ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सार' पाठकों का आदर प्राप्त करेगी।

शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'
वास्ते निदेशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर (राजस्थान)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में सायण के मतानुसार ऋग्वेद के केवल उन मन्त्रों के आशय दिये गए हैं, जिनमें उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बातों की झलक मिलती है।

इसमें ऋग्वेद के मण्डलों, सूक्तों और ऋचाओं का वही क्रम रक्खा गया है, जो उक्त संहिता में मिलता है। परन्तु बीच में आये स्तुतियों और उपासनाओं आदि से सम्बन्ध रखने वाले मन्त्रों को छोड़ दिया गया है।

इस ग्रन्थ में मत-मतान्तरों के झमेले को छोड़कर, सायण भाष्यानुसार केवल ऋग्वेद में मिलने वाले, उपर्युक्त विषयों से संबद्ध, तथ्यों को ही उपस्थित किया गया है, जिससे सुविज्ञ पाठक स्वयं ही अपना मत निश्चत कर सकें।

वैसे तो ऋग्वेद पर आगे-पीछे अनेक भाष्य लिखे गए हैं परन्तु सायण का भाष्य ही विशेष प्रसिद्ध, प्रचलित और उपयोगी माना जाता है। सायण ने ऋग्वेद-भाष्य के अतिरिक्त अन्य संहिताओं और ब्राह्मणों पर भी भाष्य लिखे थे। इनका लिखा ऋग्वेद संहिता पर का भाष्य यज्ञपरक (आधिदैविक) है।

सायण विजयनगर के राजाओं के मन्त्री थे। इनके पिता का नाम सायण और बड़े भाई का नाम माधव था। सायण ने यह भाष्य अपने बड़े भाई की प्रेरणा से लिखा था, इसी से इसे 'माधवीय-भाष्य' भी कहते हैं। सायण का जन्म विक्रम संवत् १३७३ में, मृत्यु वि० सं० १४४४ में तथा भाष्यों का रचनाकाल वि० सं० १४०७ से १४०६ के बीच माना जाता है।

आशा है इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ने से जनसाधारण को ऋग्वेद के समय की संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार, रहन-सहन, इतिहास-उपाख्यान तथा धारणाओं आदि को मूलरूप में जानने में अवश्य ही कुछ सहायता मिलेगी और इस पुस्तक का इस रूप में पाठकों के सामने उपस्थित करने में यही हमारा मुख्य ध्येय है।

—विश्वेश्वरनाथ रेउ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समर्पण

राजस्थान के प्रसिद्ध चिकित्सक
राज्यरत्न डा० निरञ्जननाथ जी गुर्टू
की
पवित्र स्मृति में सादर और सप्रेम

—लेखक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऋग्वेद में मिलने वाली कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बातें

प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के पहले मन्त्र में अग्नि की स्तुति की गई है और उसे पुरोहित कहा है।

(यहाँ पर अग्नि से उसके अधिष्ठाता तेजोमय देव का तात्पर्य है और उसे पुरोहित इसलिये कहा है कि उसके बिना यज्ञ का संपादन नहीं हो सकता। अग्नि का एक नाम अङ्गिरा भी दिया है। कुछ लोगों का मत है कि अङ्गिरा के वंश के ऋषियों ने ही यहाँ पर अग्निपूजा का प्रचार किया था। इसी से अग्नि को अङ्गिरा कहने लगे।)

२ रे सूक्त के १ ले मन्त्र में वायु की स्तुति है और ४ थे मन्त्र में उसके साथ ही इन्द्र का भी सोम-पान के लिए आह्वान किया गया है। ७ वें मन्त्र में मित्र और वरुण का उल्लेख है।

(ईरानी लोग भी मिथ्र और वरण के नाम से इनको पूजते हैं)

३ रे (अश्वि) सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विनीकुमारों का वर्णन है।

(इनकी उत्पत्ति के विषय में ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १७ वें सूक्त में लिखा है कि सूर्य द्वारा त्वष्टा की कन्या सरण्यू के गर्भ से ये दोनों उत्पन्न हुए थे।) ७ वें मन्त्र में विश्वे देवों का उल्लेख है, और १० वें में सरस्वती शब्द उक्त नाम की नदी और देवी के लिए आया है। ४ थे सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र-द्वेषियों के इस देश और अन्य देशों से दूर हो जाने की कामना की गई है।

(यद्यपि पारसी लोग वेरे—थ्रघ्न के नाम से हमारे वृत्रघ्न-इन्द्र की पूजा करते हैं, तथापि अवेस्ता के दसवें फ़र्गर्द में इन्द्र को पाप-बुद्धि कहा है, और उसके पूजकों को निकाल देने को कहा गया है। इससे आर्यों के इन दलों में मत-भेद हो जाना पाया जाता है।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८ वें मन्त्र में इन्द्र का सोम-पान कर वृत्रासुर को मारना बतलाया है।

(पुराणों के अनुसार इन्द्र ने दधीचि की हड्डी से बनाये वज्र से वृत्र का वध किया था। कुछ विद्वान् वृत्र से मेघ का तात्पर्य लेते हैं। अर्थात्-इन्द्र ने मेघ को क्षत-विक्षत कर वृष्टि करवाई थी। इसी प्रकार वे ऋगवेद में प्रयुक्त अहि शब्द का अर्थ भी मेघ ही करते हैं।)

५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जो 'स्तोम' और 'उक्थ' शब्द आये हैं, सायण ने इनका अर्थ क्रमशः सामवेद के मन्त्र और ऋगवेद के मन्त्र किया है।

६ ठे सूक्त के ५ वें मन्त्र में पणियों द्वारा चुराकर छिपाई गई गायों का इन्द्र द्वारा, मरुद्गण (वायुदेवों) की सहायता से उद्धार करना लिखा है।

(इन्द्र ने इनका सरमा नाम की कुतिया की सहायता से पता लगाया था।)

७ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में जो 'पञ्चक्षितिः' शब्द आया है, उसका अर्थ सायण ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद लिखा है।

(इसी प्रकार द्वितीय मण्डल के दूसरे सूक्त की १० वीं ऋचा में आये 'पञ्च कृष्टिः' और तृतीय मण्डल के ५९ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में आये 'पञ्चजनाः' शब्द का भी यही अर्थ किया है।)

११ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में बलासुर का गाय चुराना और इन्द्र का उसकी गुफा का पता लगाना लिखा है। इसके १३ वें सूक्त को आप्ती (प्रीति-कर) सूक्त भी कहते हैं।

इस सूक्त की १२ ऋचाओं में भिन्न-भिन्न १२ नामों से अग्नि की स्तुति की गई है। वे नाम ये हैं :—१. सुसमिद्ध, २. तनूनपात्, ३. नराशंस, ४. ईडित (इलित), ५. बर्हि, ६. देवीद्वार, ७. नक्त-उषा, ८. देव-द्वय, ९. इडा (ला), (सरस्वती, मही), १०. त्वष्टा, ११. वनस्पति, और १२. स्वाहा।

१४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र, वायु, बृहस्पति, मित्र, अग्नि, पूषा, भग, आदित्य और मरुद्गणों को यज्ञ भाग देने का आदेश है। (बृहस्पति का एक नाम ब्रह्मणस्पति भी है। अनुग्रतेजवाले सूर्य को पूषा कहते हैं। अदिति (देव-माता) की सन्तान आदित्य थे। कहीं इनकी संख्या ६, कहीं ७, कहीं ८, और कहीं १२ मानी गई है।) १८ वें सूक्त की १ ली ऋचा में उशिज्-पुत्र कक्षीवान् का उल्लेख है।

(पुराणों के अनुसार निःसन्तान कलिङ्ग-राज ने पुत्र-प्राप्ति की कामना से अपनी रानी को दीर्घतमा ऋषि के पास जाने का आदेश दिया था। परन्तु

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसने स्वयं न जाकर अपनी दासी उशिज् को अपने वदले भेज दिया । उसी से कक्षीवान् का जन्म हुआ । कक्षीवान् ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ११६ से १२५ तक के सूक्तों के ऋषि हैं ।)

२० वें सूक्त के देवता ऋभुगण हैं ।

(ऋभु सुधन्वा के पुत्र और अङ्गिरा के पौत्र थे । इन्होंने अपने मानसिक बल से इन्द्र के घोड़े को पैदा किया था । सूक्त ११० की ३ री और ४ थी ऋचाओं से ज्ञात होता है कि इस सूक्त के कर्ता ऋभुगण कुत्स के जाति भ्राता थे और इन्होंने अपने कर्मों द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया था ।)

२० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में ऋभुओं का अपने माता-पिता को फिर से जवान बनाना और ६ ठे मन्त्र में ऋभुओं का त्वष्टा के नये चमस के ४ टुकड़े करना लिखा है ।

त्वष्टा (विश्वकर्मा), ऋभुगण का शिष्य और अश्विनी कुमारों का नाना था । त्वष्टा की कन्या सरण्यू ने घोड़ी का रूप धर इन (कुमारों) को जन्म दिया था ।)

२१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में रक्ष या राक्षसों का उल्लेख है और इन्द्र और अग्नि से उनको दुष्टता-शून्य और निःसन्तान करने की प्रार्थना है ।

२२ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में सूर्य का आह्वान है । १४ वें मन्त्र में गन्धर्वों का निवास अन्तरिक्ष में कहा है । १६ वें से २३ वें तक के मन्त्रों में विष्णु का (वामन रूप से) तीन पैरों से सारे जगत् को व्याप्त करना प्रकट किया है ।

(इसके बाद के २४ से ३० वें सूक्त तक के वक्ता शुनः शेप हैं ।)

(ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि राजा हरिश्चन्द्र ने जब अपने पुत्र रोहित के स्थान पर शुनः शेप को वरुण के लिये, बलि देने का प्रबन्ध किया, तब उसने विश्वामित्र की संमति से उपर्युक्त ७ सूक्तों द्वारा देवताओं की स्तुति कर छुटकारा पाया था ।)

२४ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में जो 'ऋक्षाः' शब्द आया है, सायण ने उसका अर्थ सप्तर्षि-नक्षत्र (Great bear) किया है । इस सूक्त का १४ वां मन्त्र यह है :—

अव ते हेलो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः ।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि ॥१४॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अर्थ—हे वरुण ! नमस्कार द्वारा और यज्ञों में हव्य प्रदान करके भी हम तुम्हारे क्रोध को दूर करते हैं। हे असुर ! प्रचेतः ! राजन् ! हमारे लिये यज्ञ में निवास करके हमारे लिये पापों को शिथिल करो।

(इसमें प्रयुक्त असुर शब्द से प्रकट होता है कि पहले आर्य लोग देवताओं के लिए भी असुर शब्द का प्रयोग करते थे।)

इसी प्रकार ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ५३ वें सूक्त की १ ली ऋचा में भी—

"तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतस:।"

अर्थ—हम असुर (बलवान्) और प्रेरक सविता देवता के उस वरणीय धन की प्रार्थना करते हैं।

इसमें भी असुर शब्द सविता, देवता के विशेषण के रूप में आया है! परन्तु इसी वेद में इस (असुर) शब्द का प्रयोग शत्रु और दुष्ट के अर्थ में भी मिलता है।

(किंवदन्ती है कि आर्यों का एक दल जो रुष्ट होकर ईरान या फ़ारस की तरफ़ चला गया था, बराबर असुर (अहुर) पूजक बना रहा और देवों से द्वेष करने लगा। परन्तु दूसरा दल, जो भारत में रहा असुर-द्वेष्टा और देव-पूजक बन गया। इसी प्रथम मण्डल के ३२ वें सूक्त की १२ वीं ऋचा में 'देव' शब्द वृत्र के लिये प्रयुक्त हुआ है, जो असुर माना जाता है।)

२५ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में पक्षियों के आकाश-मार्ग और नौकाओं के समुद्र-मार्ग का उल्लेख है तथा ८ वें मन्त्र से ज्ञात होता है कि आर्य लोग ऋग्वेद काल में भी सौर और चान्द्र वर्षों का अन्तर और उसको दूर करने के लिये अधिक मास का उपयोग जानते थे। १३ वें मन्त्र में सुवर्ण (ज़री) के वस्त्रों या कवच का उल्लेख है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र से प्रकट होता है कि सोम को ओखली में कूटकर उसका रस निकाला जाता था और ६ ठे मन्त्र में ओखली का काठ की होना लिखा है।

३० वें सूक्त की २० वीं ऋचा में उषा का उल्लेख है।

(ग्रीक लोग इसे ही 'इओस' के नाम से पुकारते हैं।)

३१ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का मनु को स्वर्गलोक की कथा सुनाने का उल्लेख है। ११ वें में पुरूरवा के पुत्र नहुष का नाम आया है और १५ वें

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन्त्र में 'वर्मेवस्यूतं' से सिलाई किये हुए कवच का और 'जीवयाजं यजते' से पशु-बलि वाले यज्ञ का उल्लेख है।

३२ वें सूक्त की २ री ऋचा में विश्वकर्मा द्वारा इन्द्र के वज्र का निर्माण करना लिखा है और इसके आगे इन्द्र के और वृत्रासुर के युद्ध का वर्णन है, और १२ वीं ऋचा में देव शब्द वृत्रासुर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

३४ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में (और ४५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में तथा तृतीय मण्डल के ६ ठे सूक्त के ९ वें मन्त्र में) ३३ देवताओं का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त में सूर्य के कार्यों का उल्लेख और उसकी स्तुति है तथा यम के घर को जाने वाले मार्ग का उल्लेख है।

३६ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में होत्राभि : (होताओं द्वारा) लिखा है।

(ये सात माने जाते हैं—१. यजमान (यज्ञ करने वाला), २. होता (मन्त्र पाठी), ३. उद्गाता (मन्त्र गायक), ४. पोता (हव्य तैयार करने वाला), ५. नेष्टा (अग्नि में हव्य डालने वाला), ६. ब्रह्मा (सब पदार्थों का निश्चायक), ७. रक्षक (द्वार रक्षक।)

४१ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में यद्यपि स्पष्ट तौर से जूए का उल्लेख नहीं है। परन्तु भाष्यकार इससे इसी का तात्पर्य लेते हैं।

४४ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में प्रस्कण्व की आयु-वृद्धि की प्रार्थना है।

४७ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में (पिजवन-पुत्र) सुदास का उल्लेख है।

ऋग्वेद के ७ वें मण्डल के १८ वें सूक्त के २५ वें मन्त्र में सुदास के पिता का नाम पिजवन या दिवोदास लिखा है। यही सुदास ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १३३ वें सूक्त का कर्ता था।)

५० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में सूर्य के ७ घोड़ों का उल्लेख है। ११ से १३ तक के मन्त्रों में सूर्य से रोग निवृत्ति की प्रार्थना की गई है।

(इन मन्त्रों का जप करने से ही प्रस्कण्व ऋषि का चर्म-रोग दूर हुआ था।)

५१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिरा, अत्रि और विमद ऋषियों की सहायता करना कहा है। ११६ सूक्त के पहले मन्त्र में लिखा है कि अश्विनी-कुमारों ने विमद की स्त्री को रथ पर बिठा कर उसके पास पहुँचा दिया था।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र में इन्द्र से शर्याति राजा के यज्ञ में सोम-पान करने की प्रार्थना की गई है। १३ वें में इन्द्र का राजा कक्षीवान् को वृचया नाम की युवति स्त्री प्रदान करने का और इन्द्र का वृषणश्व के यहाँ मेना नाम से उसकी पुत्री होने का उल्लेख है।

५२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र द्वारा वृत्रवध का उल्लेख है। इसी के ५ वें मन्त्र में त्रित द्वारा परिधि के भेद और इन्द्र द्वारा बल नामक असुर के भेद का उल्लेख है।

(सायण ने तैत्तिरीय संहिता के आधार पर लिखा है कि अग्नि का पुत्र त्रित जल पीने को जाने पर कुएँ में गिर गया था और असुरों ने उस पर ढक्कन लगा दिया था। परन्तु त्रित उसे भेद कर बाहर आ गया।)

५३ वें सूक्त के ७ से १० तक के मन्त्रों में इन्द्र का नमी की सहायता से नमुचि को मारना, अतिथिग्व राजा के लिये करञ्च और पर्णय नामक असुरों का वध करना, तथा राजा ऋजाश्व द्वारा घेरे हुए वंगृद नामक असुर के १०० नगरों को भेदना, और सुश्रवा पर चढ़ आने वाले २० नरेशों और उनके ६००९९ सैनिकों को हराना, राजा तूर्वयान की रक्षा करना, तथा कुत्स, अतिथिग्व, और आयु राजा को सुश्रवा के अधीन करना लिखा है। (सायण ने तूर्वयान को दिवोदास का ही नाम माना है और पुराणों में आयु को पुरूरवा का पुत्र लिखा है।)

५४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र के तृतीय पाद [वृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः] में असुर शब्द इन्द्र का विशेषण है, और इसका अर्थ बलवान् मिलता है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में यह शब्द ७ बार आया है। यथाः—

(२४ वें सूक्त की १४ वीं ऋचा में यह शब्द वरुण के लिये प्रयुक्त हुआ है। ३५ वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में सूर्य किरणों के लिये आया है। इसी सूक्त की १० वीं ऋचा में सविता के वास्ते है। ५४ वें सूक्त की ३ री ऋचा में इन्द्र के लिये है। ६४ वें सूक्त की २ री ऋचा में मरुतों के हेतु है। १०८ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में ऋत्विजों के लिए है। तथा ११० वें सूक्त की ३ री ऋचा में त्वष्टा के लिए दिया है।)

५४ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में वत्रवध के समय मरुद्गण का इन्द्र को प्रसन्न करना लिखा है।

५६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में 'अयस्' शब्द है। इससे उस समय लोहे के कवच के व्यवहार का होना प्रकट होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

५९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र से वृत्र और शम्बर के वध में अग्नि का भी इन्द्र को सहायता देना प्रकट होता है। ७ वें मन्त्र में शतवनि-पुत्र पुरुणीथ राजा का उल्लेख है।

६१ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र द्वारा तुर्वीति ऋषि के लिए निवास-स्थान बनाने का उल्लेख है। इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र के उत्तरार्ध 'गोर्न पर्व विरदा तिरश्च' का अर्थ सायण ने इस प्रकार किया है :—पशु की तरह वृत्र के शरीर की हड्डियाँ टेढ़े वज्र से काटो' (यहाँ पर कुछ लोग 'गो' से गाय का अर्थ लेते हैं।)

१४ वें मन्त्र में पर्वतों का इन्द्र के डर से निश्चल होना लिखा है। १५ वें मन्त्र में इन्द्र का, सुवश्य के पुत्र सूर्य के साथ के युद्ध के समय एतश की रक्षा करना कहा है।

६२ वें सूक्त के २ रे और ३ रे मन्त्र से इन्द्र और अङ्गिरा लोगों का, सरमा नाम की कुतिया की सहायता से, पणियों द्वारा चुराई, गायों के पता लगाने का उल्लेख है।

६३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र का तरुण कुत्स की सहायता कर शुष्ण नामक असुर को मारना कहा है।

६६ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि को कन्याओं का जार कहा है।

७१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में 'सप्त यह्वीः' सात नदियों का उल्लेख है।

(परन्तु इनके नाम कहीं पर भी नहीं दिये हैं। हाँ, १० वें मण्डल के ७५ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में (१) गङ्गा, (२) यमुना, (३) सरस्वती, (४) शतद्रु (सतलज), (५) परुष्णी (रावी), (६) असिक्नी (चिनाब), (७) मरुद्वृधा (संभवतः चिनाब की पश्चिमी, मरुवर्दवन नाम की, सहायक नदी), (८) वितस्ता (झेलम), (९) सुषोमा (सोहान), और (१०) आर्जीकीया (व्यास) इस प्रकार १० नदियों की स्तुति की गई है।

यास्क परुष्णी से इरावती का सुषोमा से सिन्ध का और आर्जीकीया से विपाशा का अर्थ करते हैं।

७२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में रुद्र शब्द अग्नि के लिये प्रयुक्त हुआ है।

(सायण ने इस पर अपने भाष्य में तैत्तिरीय संहिता से यह कथा उद्धृत की है—देवों और असुरों के युद्ध के समय अग्नि देवों की संपत्ति लेकर भाग

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गये। इसके बाद जब देवों ने उस संपत्ति को अग्नि से जबरदस्ती छीन लिया, तब अग्नि रोने लगे। इसी से अग्नि का एक नाम रुद्र हो गया।)

इसी सूक्त के ६ ठे मन्त्र में २१ यज्ञों का उल्लेख है।

(सायण ने उनके नाम इस प्रकार दिये हैं :—विश्वेदेव सम्बन्धी ७ पाक यज्ञ; अग्न्याधेय, दर्श—पौर्ण मास, आदि ७ हविर्यज्ञ; अग्निष्टोम. अति अग्निष्टोम, आदि ७ सोम यज्ञ।)

७९ वें सूक्त के पहले ३ मन्त्रों में विद्युद् रूप अग्नि का वर्णन है।

८० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में श्येन द्वारा सोम का लाना लिखा है।

(इसका उल्लेख ३रे, ४थे, और ८वें मण्डलों में भी है। ऐतरेय ब्राह्मण की एक कथा से गायत्री का श्येन रूप धारण करना प्रकट होता है।)

१६वें मन्त्र में अथर्वा, मनु और अथर्वा के पुत्र दध्यङ् के यज्ञों का उल्लेख है।

८४ वें सूक्त के १३ वें मन्त्र से प्रकट होता है कि इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों से वृत्र आदि ९०×९=८१० असुरों को मारा था। इसी सूक्त के १५ वें मन्त्र में लिखा है कि इस चलते रहने वाले चन्द्र में अन्तर्हित जो सूर्य तेज है, वह सूर्य की ही एक किरण है।

(इसी से प्रकट होता है कि उस काल में भी आर्यों को यह बात ज्ञात थी।)

८५ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में मरुतो द्वारा कुएँ को ऊँचा उठाने का उल्लेख है।

(इसी प्रकार ११६ वें सूक्त के ९वें मन्त्र में नासत्यद्वय (अश्विनी कुमारों) का गौतम ऋषि के पास, मरुभूमि में, कुआँ उठा लाने और गौतम की प्यास बुझाने के लिए उसे उलटकर उसका पानी बहाने का उल्लेख है।)

८९ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में मनुष्यों की १०० वर्ष की आयु होना लिखा है।

(सायणाचार्य ने इससे पहले के मन्त्र में कहीं आयु पर टीका करते हुए मनुष्यों की आयु ११६ या १२० वर्ष मानी है।)

इसी सूक्त के १० वें मन्त्र में जो 'पञ्चजनाः' शब्द है, सायण ने उसके दो

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अर्थ किये हैं:—एक गन्धर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और निषाद।

(७ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र के 'पञ्चक्षितिः' और १०० वें सूक्त के १२ वें मन्त्र के 'पाञ्चजन्यः' शब्द का भी यही तात्पर्य माना है।)

९३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में 'वृसय' का उल्लेख है।

(कुछ लोग इसे ही इलियड का ब्रिसेस (Brises) मानते हैं।)

१०१ वें सूक्त की १ ली ऋचा में इन्द्र का, ऋजिश्वा राजा के साथ मिलकर, कृष्ण नामक असुर की गर्भवती स्त्रियों को मारना लिखा है, २ री ऋचा में इन्द्र की भुजा-हीन वृत्र या व्यंस, शम्बर, पिप्रु, और शुष्ण को मारने का उल्लेख है और ३ री ऋचा में इन्द्र का पणियों द्वारा चुराई गई अङ्गिरा, आदि की गायों का पता लगाना और दस्युओं को वध करना प्रकट किया है।

१०३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का वृत्र (व्यंस), अहि, और रौहिण नामक असुरों को मारना कहा है।

१०४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कुयव नामक असुर, उसकी दो स्त्रियों, और शिफा नाम की नदी का उल्लेख है।

१०५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वृक का उल्लेख है।

(सायणाचार्य ने इसकी कथा इस प्रकार लिखी है :—त्रित ऋषि के कुएँ में गिरने के पूर्व, उन्हें खाने के लिए एक भेड़िया नदी पार करने गया। परन्तु वह सूर्य की किरणों को देखकर अपने भोजन के समय का न होना समझ वापस लौट गया।)

१०८ वें सूक्त का ९ वां और १० वां मन्त्र करीब-करीब एक ही है। केवल पूर्वार्ध में दो शब्दों में भिन्नता है।

११० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अङ्गिरा का पुत्र कुत्स ऋभुगणों को अपने जाति-भ्राता कहता है।

(यह ऋभुगण सुधन्वा नामक अङ्गिरा के पुत्र हैं। अतः कुत्स और ऋभुगण दोनों ही अङ्गिरा वंश के होने से एक ही वंश के हैं।)

इसी सूक्त के ८ वें। मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुगणों का मरी हुई गौ के चर्म से आच्छादित कर एक नई गाय बनाने, उसे मृत गाय के बछड़े से मिलाने, और वृद्ध माता-पिता को फिर से युवा करने का उल्लेख है। (इसी मण्डल

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के २० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में भी ऋभुगणों का अपने माता-पिता को युवा करना लिखा है ।)

(९४ वें सूक्त के पहले १४ मन्त्रों का, चतुर्थ पाद एक ही है । इसी प्रकार ९६ वें सूक्त के पहले ६ मन्त्रों का, १०० वें सूक्त के पहले १५ मन्त्रों का, १०१ वें सूक्त के पहले ७ मन्त्रों का, १०५ वें सूक्त के पहले १८ मन्त्रों का चतुर्थ पाद अपने-अपने सूक्तानुसार समान है; तथा ९४ वें से ९६ वें और ९८ वें; १०० वें से १०३ वें और १०५ वें; तथा ११५ वें सूक्त के अन्तिम मन्त्रों का उत्तरार्ध एक समान ही है ।)

(९९ वां सूक्त १ मन्त्र का ही है ।)

१११ वें सूक्त के ५वें मन्त्र में समर-विजयी वाज का उल्लेख है ।

११२ वें सूक्त में अश्विनी कुमारों का अनेक जनों की सहायता करना लिखा है ।

(इन सहायता पाने वालों में—रेभ, बन्दन, कण्व, अन्तक, (तुग्र-पुत्र) भुज्यु, कर्कन्धु, वय्य, शुचन्ति, अत्रि, पृश्निगु, पुरुकुत्स, परावृज, ऋजाश्व, श्रोण, वर्तिका, वसिष्ठ, श्रुतर्य, नर्य, (खेल-पत्नी), लँगड़ी विश्पला, (अश्व-पुत्र) वश, (दीर्घतमा की स्त्री) उशिज का पुत्र दीर्घश्रवा, (उशिज-पुत्र) कक्षीवान्, (कण्व-पुत्र) त्रिशोक, मान्धाता, भरद्वाज, दिवोदास, (पुरु कुत्स-पुत्र) त्रसदस्यु, (विरवन-पुत्र) वम्र, कलि, पृथि (वैन), शयु, मनु, स्यूमरश्मि, पठर्वा, शर्यात, शूर, विमद, (पिजवन-पुत्र सुदास, अध्रिगु, ऋतस्तुभ, कृशानु, (इन्द्र-पुत्र) कुत्स, तुर्वीति, दधीति, ध्वसन्ति, पुरुषन्ति थे ।)

(इस सूक्त के पहले २३ मन्त्रों का चतुर्थ पाद एक ही है)

११६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विनों की कृपा से विमद का स्वयंवर में स्त्री प्राप्त करना लिखा है ।

२ रे मन्त्र में इनके रथ के वाहक गर्धभ का उल्लेख है ।

३ रे मन्त्र में तुग्र राजा का वड़े कष्ट से अपने पुत्र भुज्यु को सेना देकर नौका द्वारा समुद्र (स्थितद्वीप) में रहने वाले शत्रु को जीतने के लिए भेजना और उस (भुज्यु) के समुद्र में डूबने पर अश्विनीकुमारों का उसे नाव द्वारा तुग्र के पास पहुँचाना लिखा है ।

८ वें मन्त्र में यन्त्र-गृह में फँसे अत्रि के उद्धार का उल्लेख है । ९ वें मन्त्र में अश्विद्वय का मरु-भूमि में कुआँ लाकर गौतम की प्यास बुझाना कहा है । १० वें में इनका च्यवन ऋषि के बुढ़ापे को दूर करना कहा है ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१२ वें मन्त्र में दधीचि का, घोड़े का मस्तक पहन कर, अश्विद्वय को मधु-विद्या सिखाना लिखा है।

(सायणाचार्य ने लिखा है कि इन्द्र ने अथर्वा के पुत्र दधीचि को मधु-विद्या सिखला कर कह दिया था कि यदि किसी दूसरे को यह विद्या सिखाई, तो तुम्हारा मस्तक काट लूंगा। अश्विनीकुमारों ने मधु-विद्या सीखने की इच्छा से दधीचि का सिर काट कर उसके स्थान पर घोड़े का सिर लगा दिया और उस मुख के द्वारा मधु-विद्या सीखली। इस पर जब इन्द्र ने पहले कहे अनुसार वह घोड़े का मस्तक काट डाला, तब अश्विनीकुमारों ने दधीचि का पहला मस्तक लाकर फिर से उसकी धड़ पर लगा दिया। अन्त में इन्द्र ने उसी घोड़े के सिर की हड्डी से वज्र बनवाकर वृत्रादि असुरों को मारा। पुराणों से इस कथा में कुछ भेद प्रतीत होता है।)

१३ वें मन्त्र से प्रकट होता है कि अश्विनीकुमारों ने ऋषि-कन्या वध्रिमती के स्तोत्र द्वारा पुकारने पर, पुत्र की कामना करने वाली, उस नपुंसक-पतिका को हिरण्यहस्त नामक पुत्र दिया था।

१५ वें में इनके, खेल नरेश की स्त्री विश्पला का पैर कट जाने पर, उसे लोहे की जांघ देने का उल्लेख है।

(इसी सूक्त की १६ वीं ऋचा और सूक्त ११७ वें की १७ वीं ऋचा के शब्दों में तो भिन्नता है, परन्तु भावार्थ एक ही निकलता है कि—ऋजाश्व ऋषि ने मादा भेड़िये के खाने के लिए जब १०० भेड़ों को मार डाला, तब उसके पिता ने नाराज़ होकर, उसे अन्धा कर दिया। परन्तु अश्विनीकुमारों ने उसे फिर से दृष्टि शक्ति दी।

१७ वें मन्त्र में अश्विनीकुमारों का, घुड़दौड़ जीतकर, सूर्य-कन्या सूर्या को प्राप्त करना लिखा है।

(कहा जाता है कि सूर्या राजा सोम को दी जाने वाली थी। परन्तु उसे पाने की सारे ही देवों ने इच्छा की। इससे उसको प्राप्त करने के लिए घुड़-दौड़ जीतने की शर्त रक्खी गई।)

२२ वीं ऋचा में अश्विनों का ऋचत्क के पुत्र शर और श्रान्तश्रयु की सहायता करना लिखा है।

(परन्तु कुछ विद्वान् इन अश्विद्वय को द्यावा पृथिवी, कुछ दिवा-रात्रि, कुछ सूर्य-चन्द्र और कुछ धार्मिक नरेश मानते हैं।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

११७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अश्विद्वय का कृष्ण के पुत्र विश्वकाय के स्तुति करने पर, उसके पुत्र विष्णापु को लाना और कोढ़ के कारण वृद्धावस्था तक अविवाहित रहने वाली घोषा को नीरोग कर पति प्रदान करना कहा है। ८ वें मन्त्र में अश्विनीकुमारों का श्याव के कोढ़ को दूर कर सुन्दर स्त्री देना, कवि के अन्धेपन को दूर करना, और नृषद-पुत्र का बहरापन मिटाना सूचित किया है।

इसके १६ वें मन्त्र में अश्विद्वय का भेड़िये के मुख से वर्तिका पक्षी को छुड़ाना, जाहुष को लेकर पर्वत पर जाना और विश्वाङ् असुर के पुत्र को विषाक्त तीर से मारना लिखा है। २४ वें मन्त्र में इनका वध्रिमती को हिरण्य-हस्त नामक पुत्र देना और तीन टुकडों में विभक्त श्याव ऋषि को जीवित करना बतलाया है।

११६ वें सूक्त में अश्विद्वय का भुज्यु को समुद्र से निकाल कर उसके पिता के पास पहुँचाना, दिवोदास की रक्षा करना, सूर्या को पत्नी रूप में पाना, रेभ और अत्रि की रक्षा करना, वन्दन को युवा और दीर्घायु करना, वामदेव को गर्भ से निकालना, दधीचि के मन को तृप्त करना और पेदु को घोड़ा देना लिखा है। इसी के ६ वें मन्त्र से उशिज-पुत्र कक्षीवान् का उन्हें सोमपान के लिये बुलाना प्रकट होता है।

१२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि हे अश्विद्वय ! घोषा-पुत्र सुहस्ति और भृगु ने तुम्हारी जो स्तुति की थी, वही स्तुति मैं पज्र-वंशी कक्षीवान् भी करता हूँ। ६ठे मन्त्र में अन्धे ऋजाश्व का इनकी स्तुति करके नेत्र पाना वर्णित है।

१२१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का घोड़ी को गौ की माता करना, अर्थात् घोड़ी से गाय पैदा करना लिखा है।

(द्वितीय अष्टक)

१२२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में असुर शब्द रुद्र के लिए प्रयुक्त किया गया है।

(इस अष्टक में इस (असुर) शब्द का प्रयोग १० बार हुआ है।)

इसके ५ वें मन्त्र में उशिज-पुत्र कक्षीवान् द्वारा की गई अश्विद्वय की स्तुति है। इसी में घोषा का, अपने श्वेत-कुष्ट नाश के लिए, अश्विनी कुमारों की स्तुति करना भी कहा है। ८ वां मन्त्र इस प्रकार है :—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः ।
जनो यः पज्रेभ्यो वाजिनीवानश्वावतो रथिनो मह्यं सूरिः ॥८॥

अर्थ—मैं धनवाले देवों के धन की स्तुति करता हूँ। हम मनुष्य हैं, इसलिए रण में शोभा पाने वाले पुत्र पौत्रादि से युक्त होकर, इस धन का उपभोग करें। जो देव अङ्गिरा गोत्री कक्षीवान् को अन्न, घोड़े और रथ देते हैं, उन्हीं की मैं स्तुति करता हूँ।

इसी सूक्त के १३ वें मन्त्र में इष्टाश्व और इष्टरश्मि (राजाओं) का उल्लेख है।

(कुछ विद्वान इष्टाश्व को ही ज़ेन्द (पारसी) धर्म का प्रचारक गुष्टास्प मानते हैं।)

१५ वें मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा मशर्शार के चार पुत्रों और आयवस के तीन पुत्रों की शिकायत की गई है।

१२३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अहना (उषा) का उल्लेख है।

(कुछ लोग इसे ही ग्रीकों की 'ऐथेना' देवी मानते हैं।)

८ वें मन्त्र में उषा का सूर्य से ३० योजन आगे रहना लिखा है।

(सायणाचार्य के मतानुसार सूर्योदय से करीब आधे दण्ड पहले उषा का उदय होता है।)

१२५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् का स्वनय द्वारा प्रस्तुत किये रत्न का ग्रहण करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है :—कक्षीवान् अपना अध्ययन समाप्त कर घर लौटते हुए मार्ग में सो गया। इतने में स्वनय राजा उधर आ निकला और कक्षीवान् के रूप को देखकर उसे अपने घर ले आया, तथा उसके साथ अपनी दस कन्याओं का विवाह कर दिया। इसके साथ ही दहेज़ में १०० निष्क सुवर्ण, १०० घोड़े, १०० बैल, १०६० गायें और ११ रथ दिये। कक्षीवान् ने इन सबको लेकर अपने पिता दीर्घतमा को दे दिया।)

१२६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा भावयव्य के पुत्र स्वनय के लिए अनेक स्तोत्र बनाने का उल्लेख है। २ रे मन्त्र में कक्षीवान् का १०० निष्क, १०० घोड़े और १०० बैल प्राप्त करना लिखा है। ३ रे में स्वनय का कक्षीवान् के लिए भूरे रंग के घोड़ों वाले दस रथ, जिन पर वधुएँ बैठी थीं,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और १०६० गायें भेजना, और कक्षीवान् का उन्हें लेकर अपने पिता को देना कहा है।

४ थे मन्त्र में हज़ार गायों के आगे दस रथों के ४० सुरंग घोड़ों का, पंक्तिबद्ध होकर चलना और कक्षीवान् के नौकरों का, उनके लिए घास का प्रबन्ध कर, उनकी मालिश करना लिखा है।

(इससे प्रत्येक रथ में ४ घोड़ों के जोड़ने का रिवाज प्रकट होता है।)

६ ठे मन्त्र में स्वनय द्वारा एक रमणी (लोमशा) का आलिङ्गन करना और उसका नकुली के समान चिरकाल तक रमण करना प्रकट किया है तथा उसका उस (स्वनय) को बहुत बार भोग प्रदान करना भी कहा है।

७ वें में उक्त रमणी द्वारा स्वनय का संभोग के लिए आह्वान है। वह रमणी अपना कंधार की भेड़ की तरह रोम वाली और पूर्णवया होना भी प्रकट करती है।

१२७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अरणि-मन्थन द्वारा अग्नि का उत्पन्न किया जाना दर्शाया है।

१२९ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में राक्षसों के विनाश के लिए इन्द्र का पैदा किया जाना कहा गया है।

१३० वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में इन्द्र का दिवोदास के लिए (शम्बर के) ९० नगरों का नाश करना और शम्बर को पर्वत से गिराना लिखा है। ८ वीं में इन्द्र का (अंशुमती नदी के तीर पर) कृष्ण नामक असुर की काली चमड़ी उधेड़ कर उसे मारना कहा है।

१३१ वें सूक्त की ३ री ऋचा में स्त्री-पुरुषों का साथ-साथ यज्ञ कर स्वर्ग-गमन की कामना करना बतलाया है।

१३३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में रक्त वर्ण पिशाचों और राक्षसों का उल्लेख है।

१३४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में वायु का यजमान को उसी प्रकार जगाना कहा है, जिस प्रकार निद्रित स्त्री को उसका जार जगा देता है।

१३८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पूषा देवता से प्रार्थना की गई है कि वह प्रार्थी को ऊँट की तरह युद्ध में पार लगावे।

(इससे उस समय ऊँट का भी युद्ध में प्रयोग होना प्रकट होता है।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४ थे मन्त्र में बकरे को पूषा (सूर्य) का वाहन कहा है।

१३९ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में दधीचि, अङ्गिरा प्रियमेध कण्व, अत्रि और मनु को दीर्घजीवी कहा है और अपने जीवन के साथ उनका सम्बन्ध प्रकट कर उन्हें नमस्कार किया है। ११ वें मन्त्र में ११ स्वर्ग के, ११ पृथ्वी के, और ११ अन्तरिक्ष के इस प्रकार कुल ३३ देवों का उल्लेख है।

१४० वें सूक्त के ३ से ५ तक के मन्त्रों और ९ वें मन्त्र में २ काष्ठों से अग्नि का उत्पन्न होना, प्रज्वलित होना, स्फुलिङ्ग उड़ाना, और मार्गों को जला कर काला करना वर्णित है।

१४७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि का ममता के पुत्र दीर्घतमा का अन्धापन दूर करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है कि जिस समय दीर्घतमा गर्भ में था, उस समय उसकी माता (उचथ्य की स्त्री) ममता से (उसके देवर) बृहस्पति ने संभोग किया था। परन्तु उस समय वर्णसंकरता के भय से दीर्घतमा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। इससे क्रुद्ध होकर बृहस्पति ने उसे शाप द्वारा अन्धा कर दिया। इसके बाद दीर्घतमा ने अग्नि की स्तुति कर अपना अन्धापन दूर करवाया।)

१५३ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में मित्रावरुण की कृपा से रातहव्य (राजा) की गायों का दुधारू होना लिखा है।

१५४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विष्णु के वामनावतार के कार्यों का उल्लेख है।

१५५ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में ९४ कलाओं का उल्लेख है।

(वे ये हैं :—संवत्सर १, अयन २, ऋतु ५ (इनमें हेमन्त और शिशिर एक में ही ग्रहण किये गये हैं।) मास १२, पक्ष २४, अहोरात्र ३०, प्रहर ८, और राशियां[1] १२। कुछ विद्वान "चतुर्भिः साकं नवतिं" का अर्थ (९०×४)= ३६० कर के उनसे संवत्सर के दिनों का आशय लेते हैं।)

१५७ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में अश्विनी कुमारों का वैद्य होना कहा है।

१५८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में तुग्र के पुत्र भुज्यु की समुद्र-यात्रा का उल्लेख है। ५ वें मन्त्र में दासों (अनार्यों) द्वारा वृद्ध दीर्घतमा को औंधा

१. राशियों का उल्लेख मानना सन्देहास्पद है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुँह कर फैंकना, त्रित का उसका सिर काटना, और दास का उसके हृदय और कंधों पर चोट पहुँचाना लिखा है।

(अश्विनी कुमारों ने दीर्घतमा को इन सब घातों से बचाया था।)

१६१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुओं का अग्नि के विषय में विचार है। (कहते हैं कि सुधन्वा के ३ पुत्रों ने अपने कर्म से देवत्व प्राप्त कर लिया था। एक बार जिस समय वे सोम-पान कर रहे थे, उस समय देवों ने अग्नि को वहाँ भेज दिया। अग्नि ने जब उनके समान रूप को देखा, तब वह स्वयं भी वैसा ही रूप बनाकर सोम-पान करने लगा। इस प्रकार आये समान रूप वाले चौथे व्यक्ति को देखकर ऋभु लोग उसके विषय में विचार करने लगे।)

१६२ वें सूक्त में अश्वमेध का वर्णन है।

इसमें पहले बकरों को घोड़े के पास ले जाया जाता है। इसके बाद घोड़े को ३ बार अग्नि के पास ले जाते हैं, तथा उसे वृक्ष काट कर बनाये यूप (खंभे) में रस्सी से बांध देते हैं। बन्धन गले, पैरों और सिर पर लगाये जाते हैं। फिर उसे घास दी जाती है। बाद में उसका वध किया जाता है। वध के बाद उसके मांस पर मक्खियां आ बैठती हैं। तथा कुछ मांस छुरे में और मारने वाले के हाथों और नखों में लग जाता है। उस घोड़े का पेट भी चीर दिया जाता है, और फिर उसके मांस को पकाया जाता है। आग में पकाते समय उसका कुछ अंश शूल (सीख) में लगा रह जाता है और मांस रस भी जमीन पर गिरने लगता है। लोग चारों ओर बैठकर उस मांस का पकना देखते हैं, उसकी गंध की प्रशंसा करते हैं और उसका कुछ अंश माँगना चाहते हैं। फिर पक जाने के बाद उसका रस वर्तनों में उलट कर गर्म रहने के लिये ढक दिया जाता है। अश्व के अङ्गों को काटते समय पहले बेत की टहनी से भिन्न-भिन्न स्थानों पर बांध कर, उन्हें छुरी से पूर्व निश्चयानुसार काटते हैं। घोड़े के बगल में चौंतीस टेढ़ी हड्डियाँ (पसलियाँ) होती हैं। वे खड्ग से काटी जाती हैं। अश्व का मारने वाला अश्व के अङ्गों को बिखरने से बचाने के लिए शब्द करता हुआ देख-देखकर एक-एक हिस्सा काटता है और उन हिस्सों के पिण्ड बना कर अग्नि में होमे जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रस्तुत किये गये घोड़े की न तो मृत्यु और न हिंसा ही मानी जाती है। इस अश्व के साथ ही पूर्वोक्त बकरों का भी पुरोडाश बनाया जाता है।

१६३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में यम का उल्लेख है; और १६४ वें सूक्त[1]

१. इस सूक्त के सारे मन्त्र अथर्ववेद में भी मिलते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के दूसरे मन्त्र में एक ही घोड़े का सात नामों से सूर्य के रथ को खींचना लिखा है।

(यह संभवतः सूर्य की श्वेत रश्मि में सात रंगों का होना प्रकट करता है।) ४ से ६ तक की ऋचाओं में संसार की उत्पत्ति के विषय में जिज्ञासा की गई है तथा आत्मा और परमात्मा पर विशेष रूप से प्रश्न हैं। तथा इन बातों का देवों को भी पता न होना माना है। ११ वीं ऋचा में १२ मासों, ३६० दिनों और ३६० रातों का उल्लेख है। १२ वीं ऋचा में ५ ऋतुओं (हेमन्त और शिशिर को एक में मिलाकर), १२ महीनों तथा दक्षिणायन और उत्तरायण का वर्णन है। २० वीं में आलङ्कारिक भाषा में जीवात्मा और परमात्मा के विषय में संकेत हैं। ३० वीं ऋचा में जीवात्मा को अमर कहा है। ४४ वीं ऋचा में अग्नि का पृथ्वी के क्षौर कर्म को करना कहा है। ४५ वीं में ब्राह्मणों को परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी ४ प्रकार की वाक् का ज्ञान होना लिखा है।

१६५ वें सूक्त में इन्द्र और मरुद्गणों का संवाद है। इसमें प्रत्येक ने एक-दूसरे का और अपना महत्व बतलाया है।

१६८ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में पृश्नि द्वारा—मरुद्गणों का जन्म होना और १०वें में मरुद्गणों के लिए मान्दार्य का इस (सूक्तोक्त) स्तोत्र को बनाना लिखा है।

१७० वें सूक्त में इन्द्र और अगस्त्य का संवाद है। इसमें पहले एक दूसरे पर आक्षेप हैं और बाद में इन्द्र की स्तुति है।

१७३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में उद्गाता द्वारा सामगान का उल्लेख है। और २ रे मन्त्र में स्त्री-पुरुषों (मनुष्यों) का यज्ञ करना लिखा है।

१७४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र के लिए 'असुर' शब्द का प्रयोग किया गया है, २ रे मन्त्र में इन्द्र का सुदृढ़ सात पुरों (नगरों) का नष्ट करना और पुरुकुत्स के लिए वृत्रासुर का वध करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र का दासों को मारना और दुर्योणि राजा के लिए कुयवाच का वध करना प्रकट किया है।

१७५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में उसका कर्ता अपने को मनुष्य बतलाकर इन्द्र की प्रार्थना करता है।

१७६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में 'पञ्च-क्षितिः' शब्द आया है, जिसका अर्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद किया गया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१७९ वें सूक्त के १ से ४ तक के मन्त्रों में लोपामुद्रा और अगस्त्य का काम-वासना-पूर्ण संवाद है।

१८२ वें सूक्त के ५ वें और ६ ठे मन्त्रों में अश्विनी कुमारों का डूबते हुए तुग्र-पुत्र को नौका द्वारा बचाने का उल्लेख है।

१८३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में गौतम, पुरुमीड और अत्रि का हव्य ग्रहणार्थ अश्विद्वय को बुलाना लिखा है।

१८५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्यावा-पृथिवी में पहले कौन उत्पन्न हुआ है और ये किस लिए उत्पन्न हुए हैं यह जिज्ञासा की गई है। तथा ८ वें में देवों, बन्धुओं और जामाता के प्रति किये अपराध की क्षमा प्रार्थना है।

१८७ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जल पीने और यव खाने से शरीर के स्थूल होने की कामना की गई है।

१९१ वें सूक्त में विषधरों और उनके स्वभाव का वर्णन कर सूर्य द्वारा उनका नाश होना प्रकट किया है।

(यहाँ पर प्रथम मण्डल समाप्त होता है।)

दूसरे मण्डल के १ ले मन्त्र में अग्नि के जल, पत्थर, वन, और औषधि से उत्पन्न होने की कामना की गई है। २ रे मन्त्र में अग्नि को ही सब प्रकार का ऋत्विक् कहा है। (७ ऋत्विजों के नाम पहले दिये जा चुके हैं। परन्तु बड़े यज्ञों में १६ ऋत्विक् तक होते थे :—जैसे ऋग्वेद के १ होता, २ मैत्रा-वरुण, ३ अच्छावाक्, ४ ग्रावस्तुत्। यजुर्वेद के १ प्रतिप्रस्थिता, २ नेष्टा, ३ उन्नेता, ४ अध्वर्यु। सामवेद के १ उद्गाता, २ प्रस्तोता, ३ सुब्रह्मण्य, ४ प्रतिहर्ता। अथर्ववेद के १ ब्रह्मा, २ ब्राह्मणाच्छसी, ३ पोता, ४ आग्नीध्र।

(इनके अतिरिक्त अथर्ववेद में १ सदस्य, २ दीक्षितापत्नी, ३ शमिता, ४ गृहपति, ५ अङ्गिरा, ६ वैकर्ता और ७ चमसाध्वर्यु को भी ऋत्विक् माना है।)

२ रे सूक्त के १० वें मन्त्र में 'पञ्च कृष्टिः' शब्द से पूर्वोक्त पाँच वर्णों का उल्लेख है।

३ रे सूक्त के ६ ठे मन्त्र में दो स्त्रियों का मिलकर कपड़ा बुनना बताया है।

७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आये अग्नि के विशेषण 'भारत' शब्द का अर्थ भरण कर्ता किया गया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

११ वें सूक्त के १७ वें मन्त्र में इन्द्र से सोम-पान कर दाढ़ी-मूंछ में लगे सोम को झाड़ने की प्रार्थना की गई है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का, त्रित की मित्रता के लिए, त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का वध करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र का, ४० वर्ष तक खोज कर, पर्वत में छिपे शम्बरासुर का पता लगाना और सोते हुए अहि नामक दैत्य को मारना लिखा है।

१३ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में इन्द्र के पास १,००० घोड़े होना और उसका दभीति ऋषि के लिए दस्युओं को मारना लिखा है।

१४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का ९९ हाथ वाले उरण को मारना, और अर्बुद को औंधे मुँह पटक कर नष्ट करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अश्व, शुष्ण, पिप्रु, नमुचि और रुधिक्रा को मारना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शम्बर के नगरों को ध्वस्त करना और वर्ची के १,००,००० पुत्रों को मारना लिखा है। ७ वें में इन्द्र का कुत्स, आयु, और अतिथिग्व के शत्रुओं को मारना लिखा है।

१५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का दभीति ऋषि की रक्षा करना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का सिन्धु को उत्तर वाहिनी बनाना कहा है। ७ वें में इन्द्र का परावृज का लंगड़ापन और अन्धापन दूर कर उसको उसके विवाहार्थ आई हुई कन्याओं के पीछे दौड़ने में समर्थ करना दिखाया है। ९ वें में इन्द्र का सोम-पान कर चुमुरि और धुनि नामक असुरों को मारना और दभीति की रक्षा करना कहा है।

१७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का घूमने वाले पर्वतों को अचल करना और ७ वें मन्त्र में आजीवन अविवाहिता कन्या का माता-पिता से धन की कामना करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र से केवल अपने को धन देने और औरों को न देने की प्रार्थना की गई है।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का अपने सारथि कुत्स के लिए शुष्ण, अशुप और कुयव को वश करना तथा दिवोदास के लिए शम्बर के ९९ नगरों को नष्ट करना कहा है। ८ वें में गृत्समदों का इन्द्र की स्तुति करना और ९ वें में अन्य लोगों को दक्षिणा न देकर, अपने को देने की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं को उनकी चुराई गई गायों के प्राप्त करने का मार्ग बताना और अदन के प्राचीन नगरों

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को नष्ट करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में कृष्ण-वर्ण दास-सेना का उल्लेख है।

२२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में 'देव' शब्द वृत्रासुर के लिए प्रयुक्त है।

२३ वें सूक्त के ३ रे से १७ वें मन्त्र[1] तक वृहस्पति से शत्रु नाश की प्रार्थना की गई है।

२७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में १ मित्र, २ अर्यमा, ३ भग, ४ वरुण, ५ दक्ष, और ६ अंश—इन ६ आदित्यों (सूर्यों) के नाम दिये हैं। १० वें मन्त्र में 'असुर' शब्द वरुण का विशेषण है और उसके लिए कहा गया है कि तुम, देव हो या मनुष्य हो, पर सबके राजा हो। इसी में उससे १०० वर्ष तक देखने देकर पूर्वजों की भोगी आयु का भोग करने देने की प्रार्थना की गई है।

२८ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में वरुण से अपने को पूर्वजों के और अपने ऋण से मुक्त करने की प्रार्थना की है। इसी में ऋण-कर्ता के लिए आलोक का अभाव होना प्रकट किया है। १० वें मन्त्र में अपने को भीरु बताकर वरुण से, बन्धुओं द्वारा कही जाने वाली स्वप्न की भयङ्कर बातों से और चोरों तथा भेड़ियों आदि से बचाने की प्रार्थना की गई है।

२९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आदित्यों से गुप्तप्रस्रविणी स्त्री के गर्भ की तरह अपने पापों को दूर देश में फेंकने की प्रार्थना है।

(२८ वें और २९ वें सूक्तों की अन्तिम ऋचायें एक ही हैं।)

३० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र के शण्डिकों के प्रधान (असुर-पुरोहित शण्डामर्क) को मारने का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में शत्रुओं को मारकर उनका धन अपने को देने की प्रार्थना है।

३२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में सुई से बुनाई करने का सङ्केत है।

३४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में रुद्र द्वारा पृश्नी के गर्भ से मरुतों की उत्पत्ति लिखी है। ३ रे मन्त्र में मरुतों के सुवर्ण के शिरस्त्राण का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में मरुतो द्वारा पृश्नी के अधो भाग का दोहन करना कहा है। १३ वें मन्त्र में मरुद्‌गण की क्षोणी नामक वीणा का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में समुद्र से घोड़े (उच्चैः श्रवा) की उत्पत्ति कही है।

३८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में स्त्रियों का वस्त्र बुनना प्रकट किया है।

---

१. १५ वें मन्त्र में धन-कामना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में चकवा-चकवी का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र में अश्विद्वय से २ कुत्तों की तरह या दो कवचों की तरह अपनी रक्षा करने की प्रार्थना है। ८ वें मन्त्र में गृत्समद द्वारा अश्विद्वय के लिये इन सब स्तोत्रों का बनाया जाना कहा है।

४१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में हजार खंभों वाले स्थान का उल्लेख है।

४२ वें और ४३ वें सूक्तों का देव कपिञ्जल रूपी इन्द्र है। इनमें पक्षियों के शब्द द्वारा शकुन लेने के रिवाज का उल्लेख है।

(पक्षियों की अशुभ ध्वनि सुनने पर उसके अपशकुन को दूर करने के लिए इन सूक्तों का पाठ किया जाता था।)

(यहाँ पर द्वितीय मण्डल समाप्त होता है।)

तीसरे मण्डल के प्रथम सूक्त के १० वें मन्त्र में द्यावा-पृथिवी को सपत्नी लिखा है।

४ थे सूक्त के ८ वें मन्त्र में भारती, इला, और सरस्वती इन तीनों देवियों का आह्वान है।

६ ठे सूक्त के ९ वें मन्त्र में ३३ देवों और उनकी स्त्रियों का उल्लेख है।

११ वें मन्त्र में अग्नि से गो, भूमि और वंश वर्धक पुत्र की कामना की गई है।

(तृतीय अष्टक)

तृतीय मण्डल का ८ वां सूक्त यज्ञ में पशु बाँधने के लकड़ी के स्तम्भ (यूप) से संबन्ध रखता है।

९ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में ३३३९ देवों का अग्नि की पूजा करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र और अग्नि का दासों के ९० नगरों को एक साथ कम्पित करना कहा है।

१४ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अपना मनुष्य होना प्रकट कर अग्नि से हव्य ग्रहण करने और यजमानों की रक्षा के लिए प्रज्वलित होने की प्रार्थना की गई है।

१७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में तीन उषा देवताओं को अग्नि की माता कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में दधिक्रा देव का आह्वान है।

२२ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में धिष्या, प्राणाभिमानी देवों के लिए आया है।

२३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में भरत के पुत्र देवश्रवा और देववात का मन्थन द्वारा अग्नि को उत्पन्न करना लिखा है। ४ थे मन्त्र में अग्नि से दृषद्वती, आपया और सरस्वती नदियों के तटों पर रहने वाले पुरुषों के घरों में प्रज्वलित होने की प्रार्थना की गई है।

२६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अपने को कुशिक-गोत्री बतलाकर, स्वर्ग को जानने वाले अग्नि का आह्वान किया है।

२९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि को इला का पुत्र कहकर उसका अरणि से उत्पन्न होना कहा है। १४ वें मन्त्र में अग्नि का असुर के पेट से पैदा होना लिखा है। १५ वें में कुशिक-गोत्रियों का ब्रह्मा से पहले पैदा होना, उनका अग्नि के स्तोत्र का पाठ करना और उसे अपने-अपने घरों में प्रज्वलित करना कहा है।

३० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र का वृत्र के हाथ-पैर तोड़ कर उसे मारना लिखा है।

१९ वें में इन्द्र से वडवानल के समान बढ़ी हुई अपनी अभिलाषा को पूर्ण करने की प्रार्थना की गई है, और २० वें में कुशिक-गोत्रियों द्वारा इन्द्र के इस स्तोत्र का बनाया जाना लिखा है।

३१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अपुत्र पुरुष का दौहित्र होने की आशा पर जीना और फिर उसके पास जाना कहा है। २ रे में पुत्र और पुत्री के अधिकार का विवेचन है।

(इससे प्रकट होता है कि पुत्र तो पिता के धन का और कन्या केवल मान की अधिकारिणी होती थी।)

५ वें और ६ ठे मन्त्रों में अङ्गिरा लोगों का, इन्द्र और सरमा (देवों की कुतिया) की सहायता से, अपनी चोरी गई गायों का पता लगाने का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में अङ्गिराओं का पहले उत्पन्न हुए पुत्रों के लिए उन गायों का दूध दोहना और उन गायों की रक्षा के लिए वीर पुरुषों को नियुक्त करना कहा है। १६ वें मन्त्र में इन्द्र का जल को उत्पन्न करना और (प्राकारान्तर से) अग्नि, सूर्य और वायु द्वारा उसे शुद्ध करना लिखा है। १९ वें मन्त्र में अङ्गिरा लोगों की तरह अपना इन्द्र का पूजन व नवीन स्तुति करना प्रकट किया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३२ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में इन्द्र का जन्मते ही सोम-पान करना सूचित किया है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र का पुरानी, बीच के समय की और नवीन स्तुतियों से वर्धित होना कहा है। १४ वें मन्त्र में लिखा है कि मैं जब चाहता हूँ इन्द्र की स्तुति करता हूँ और जिस प्रकार नदी के दोनों तटों पर रहने वाले लोग, नौका रोही को पुकारते हैं, उसी प्रकार हमारे माता और पिता के कुल के लोग, दुःख से पार होने के लिए, इन्द्र को पुकारते हैं।

३३ वें सूक्त में विपाशा (व्यासा) और शुतुद्री (सतलज) का पर्वत से निकल कर समुद्र की तरफ जाना, कुशिक-पुत्र विश्वामित्र का स्तुति द्वारा उनसे रुकने की प्रार्थना करना, नदियों का उसे आगामी यज्ञ में मन्त्र रच कर उनकी सेवा करने की सलाह देना, विश्वामित्र का उनसे अपने और अपने रथ और घोड़ों के पार जाने के योग्य होने की प्रार्थना करना, नदियों का, जिस प्रकार माता पुत्र को स्तन-पान कराने और युवती पुरुष को आलिङ्गन करने को अवनत होती है, उसी प्रकार विश्वामित्र को पार जाने देने के लिये अवनत होना, विश्वामित्र का, भरत कुलवालों द्वारा, आगे पार की जाने वाली, उन दोनों नदियों की सर्वत्र स्तुति करने की प्रतिज्ञा करना, भारतों का उन नदियों को पार करना, आदि कहा है।

(सायण ने लिखा है कि एक बार विश्वामित्र, पिज़वन नरेश के पुत्र सुदास के यहाँ पुरोहित का कर्म संपादन कर, तथा बहुतसा धन लेकर सतलज और व्यासा नदियों के संगम पर पहुँचे और उस पार जाने के लिए उन्होंने ३ मन्त्रों से उन नदियों की स्तुति की। इस पर नदियों ने उनसे वार्तालाप कर अपना जल घटा दिया और उन्हें पार जाने की आज्ञा दे दी।)

३४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का दास को जीतना, ४ थे मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं को, शत्रु सेना को हराने में सहायता देना, ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का माया द्वारा दस्युओं को नष्ट करना और ९ वें में इन्द्र का दस्युओं को मारकर आर्य-वर्णों की रक्षा करना कहा है।

३६ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अध्वर्यु लोगों का, इन्द्र के लिये, हाथों से सोम-लता का दोहन और पत्थर से उसके रस का शोधन करना लिखा है।

३७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में विश्वामित्र ने अपने द्वारा वृत्र-हन्ता इन्द्र का आह्वान करना प्रकट किया है।

३८ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में चंचल-केशों वाले गन्धर्वों का उल्लेख है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विश्वामित्र ने यज्ञ में कही जाने वाली इन्द्र की इस स्तुति का अपने से उत्पन्न होना, २ रे मन्त्र में इन्द्र की, सूर्य से भी पहले उत्पन्न हुई, स्तुति का अपने पितरों से आना और ३ रे मन्त्र में अश्विद्वय की स्तुति करने में अपनी जीभ के अग्र भाग का नाचना कहा है।

४० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विश्वामित्र ने अपने द्वारा इन्द्र का बुलाया जाना और ६ ठे मन्त्र में इन्द्र द्वारा वर्धित अन्न का अपने को प्राप्त होने की इच्छा करना प्रकट किया है।

४१ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र से अपने यज्ञ के तीनों सवनों में किए गये स्तोत्रों और उक्थों में रमण करने की प्रार्थना है।

४२ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में कुशिक वंशियों का इन्द्र को बुलाना प्रकट किया गया है।

४३ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में श्येन का सोम को लाना कहा है।

४५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में कहा है कि—हे इन्द्र। जैसे पिता समझदार पुत्र को धन का भाग देता है वैसे ही पुत्र को हमें दो और पके फलों के लिए जिस प्रकार लग्गी वृक्ष को हिलाती है, उसी प्रकार तुम हमारी इच्छा को पूर्ण करने वाला धन दो।

४८ वें सूक्त के २ रे और ३ रे मन्त्रों में इन्द्र का जन्मते ही सोम-पान करना कहा है।

५० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में गौ, अश्व, और धन पाने की इच्छा प्रकट कर, कुशिक वंशियों द्वारा इस स्तोत्र का कहा जाना लिखा है।

५२ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र के लिए दही मिला सत्तू बनाने और भुना जौ तैयार करने का उल्लेख है।

५३ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में भोजों का सुदास राजा का याजक होना कहा है और मरुतों से प्रार्थना की गई है कि वे, स्तोत्र-कर्ता विश्वामित्र को धन देते हुए, अन्न को वर्धित करें। ९ वें मन्त्र में विश्वामित्र का सिन्धु के वेग को रोकना और विश्वामित्र द्वारा करवाये गये (पिजवन के पुत्र) सुदास के यज्ञ के समय इन्द्र का कुशिक गोत्रियों के साथ प्रिय व्यवहार करना कहा है। १२ वें मन्त्र में (विश्वामित्र का) अपने द्वारा इन्द्र की स्तुति का किया जाना कहा है और आगे कहा है कि स्तोता विश्वामित्र का यह स्तोत्र भरत कुल वाले पुरुष की रक्षा करे। १४ वें मन्त्र में इन्द्र से (अनार्य-देश) की कट

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(दक्षिण मगध) की गउओं को और सूदखोरों के धन को अपने को देने की प्रार्थना है।

१६ वें मन्त्र में रथ में लगी खदिर और शीशम की लकड़ी को मज़बूत करने की और अपने को रथ से न फेंकने की प्रार्थना है। २३ वें मन्त्र में (वसिष्ठ के सेवकों को) विश्वामित्र कहते हैं :—"हे पुरुषो" ! तुम विश्वामित्र के सामर्थ्य को नहीं जानते और उसे पशु मानकर ले जा रहे हो। विद्वान् मूर्ख को हास्यास्पद नहीं करता; गधे के सामने घोड़ा नहीं ले जाया जाता (अर्थात् वसिष्ठ मेरे समकक्ष नहीं है)।

५४ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में विष्णु और उनके वामनावतार का उल्लेख है।

५५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि से प्रार्थना की गई है कि देवता, पितर और सूर्य हमें न मारें। ५ वें मन्त्र में औषधियों का बिना वीर्य-संयोग के फलवती होना देवताओं की महिमा कहा है। २२ वें में अपने को इन्द्र का सखा बतला कर उस इन्द्र से उसके धन में भाग पाने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त की सारी ही ऋचाओं का अन्तिम–पाद—'महद्देवाना-मसुरत्वमेकम्'–ही है। इसका अर्थ-साधारणतया 'देवों का महान् बल एक ही है'—होता है, और इससे सारे ही देवों का परमात्मा का रूप होना प्रकट होता है।)

५८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अश्विद्वय से पणियों की बुद्धि को नष्ट करने की प्रार्थना है। ६ ठे मन्त्र में 'जह्नावी' शब्द आया है जो गङ्गा के लिए ही है।

५९ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में पञ्चजनों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषादों) का मित्र देवता के लिए हव्य प्रदान करना लिखा है।

६० वें सूक्त के २ रे और ३ रे मन्त्रों में सुधन्वा के पुत्र ऋभुओं का चमस को विभक्त करने, गो-चर्म से ढककर नवीन गऊ बनाने, इन्द्र के दो घोड़ों को उत्पन्न करने, मनुष्य होकर भी अपने कर्मों से देवत्व प्राप्त करने, इन्द्र के सखापन को पाने तथा अमरत्व प्राप्त करने का उल्लेख है।

६२ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में होत्रा (अग्नि-पत्नी) और भारती (सूर्य-पत्नी) से अपनी रक्षा करने की प्रार्थना है। १० वां मन्त्र गायत्री मन्त्र है।

(यहाँ पर तृतीय मण्डल समाप्त होता है)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चतुर्थ मण्डल के १ ले सूक्त के ५ वें मन्त्र में अग्नि से वरुण-कृत जलोदर रोग से बचाने की प्रार्थना है। १३ वें मन्त्र में अपने पितरों (अङ्गिरा के प्राक्कालीन वंशजों) द्वारा अग्नि की परिचर्या के बल पर, अन्धकार से—गायों को बाहर करना प्रकट किया है। १६ वें में अङ्गिरा-वंशजों द्वारा पहले-पहल वाणी के शब्दों को जानना और २१ छन्दों को प्राप्त करना कहा है। १८ वें में अङ्गिराओं का पणियों द्वारा चुराई गई गायों का पता लगाने का उल्लेख, और अग्नि से वरुण-कृत उपद्रवों को दूर करने की प्रार्थना है।

२ रे सूक्त के ६ से १० वें मन्त्र तक अग्नि का अपने सेवकों को धनवान् करना कहा है। १५ वें मन्त्र में सात व्यक्ति (१ वामदेव और ६ अङ्गिरा) अपने को प्रथम बुद्धिमान् व्यक्ति और आदित्य के पुत्र बतलाते हैं। १७ वें मन्त्र में स्तोताओं का, जिस प्रकार धौंकनी द्वारा लोहे को निर्मल किया जाता है, उसी प्रकार यज्ञ के द्वारा अपने जन्म को सफल करना कहा है।

३ रे सूक्त के १६ वें मन्त्र में अपने को विद्वान् और कवि बतलाकर अपने द्वारा बनाये वाक्यों का स्तोत्रादि के साथ पढ़ना कहा है।

४ थे सूक्त के १ ले मन्त्र में अग्नि से, व्याध के जाल को विस्तृत करने के समान, अपने तेज को विस्तृत करने और राजा के अपने मन्त्री के साथ हाथी पर बैठकर गमन करने के समान, अपने तेजः पुञ्ज के साथ गमन करने की प्रार्थना है। ११ वें मन्त्र में कहा है कि हे अग्नि ! जिस स्तोत्र से (अपने आपस में) बन्धुता उत्पन्न हुई है, वह पिता गोतम के पास से हमारे पास आया है। १३ वें मन्त्र में अग्नि का अन्धे दीर्घतमा के अन्धेपन को दूर करने का उल्लेख है।

५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में, जिस प्रकार खंभा छप्पर को धारण करता है, उसी प्रकार अग्नि का द्युलोक को धारण करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में लिखा है कि भ्रातृ-हीना कुपथ-गामिनी अथवा पतिद्वेषिणी दुष्टाचार वाली-स्त्री की तरह अग्निद्वेषी असत्य-वक्ता पापी गहरे गर्त—(नरक) को उत्पन्न करता है।

७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अप्नवान्, आदि भृगुवंशियों द्वारा अग्नि का पहले पहल प्रज्वलित करना सूचित किया है। ८ वें में अग्नि को यज्ञ और देवों का दूत कहा है।

११ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में अग्नि का रात्रि में प्रदीप्त होकर सेवा करना बतलाया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में—सूर्य के भ्रमणादिक कार्यों के रहस्य को कोई नहीं जानता–यह बात सूचित की है।

१५ वें सूक्त के ७ से १० वें मन्त्र तक सहदेव के पुत्र सोमक से दो घोड़े पाने की सूचना और अश्विद्वय से उसे दीर्घायु करने की प्रार्थना है।

१६ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र का सरमा की सहायता से पणियों द्वारा चुराई गई गायों का पता लगाना और अङ्गिराओं द्वारा स्तुत होना लिखा है। ६ वें में इन्द्र का (रुरु के पुत्र) कुत्स की सहायता करना कहा है। १० वें मन्त्र में इन्द्र और कुत्स के एक से रूप को देखकर शची (इन्द्राणी) का विस्मित होना लिखा है। ११ वें में इन्द्र और कुत्स का एक रथ में बैठना, १२ वें मन्त्र में इन्द्र का कुत्स के लिए शुष्ण को मारना, कुयव को मारना और सूर्य के चक्र को छिन्न करना, १३ वें में इन्द्र का पिप्रु और मृगय को मारना, विदथि के पुत्र ऋजाश्व को कैद करना, पचास हजार कृष्णवर्ण वालों (दासों) को मारना और शम्बर के नगरों को नष्ट करना लिखा है। १८ वें मन्त्र में इन्द्र से वामदेव के यज्ञ की रक्षा करने की प्रार्थना है। २१ वें मन्त्र में इन्द्र का पूर्ववर्ती ऋषियों द्वारा और अपने द्वारा स्तुत होना प्रकट कर, अपने द्वारा उसके नवीन स्तोत्र के बनाने का उल्लेख किया है।

१७ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में इन्द्र का सूर्य के चक्र को प्रेरित करना और युद्धार्थ जाने वाले एतश को रोकना कहा है।

(सायण ने लिखा है कि स्वश्व नरेश के पुत्र की इच्छा से, सूर्य की उपासना करने पर सूर्य ने उसके पुत्र के रूप में जन्म लिया था। इसके अन-न्तर सूर्य और एतश ऋषि के बीच युद्ध हुआ। इस पर एतश ने विजय कामना से इन्द्र की स्तुति की। इससे प्रसन्न होकर इन्द्र ने सूर्य के चक्र को तोड़ डाला और एतश की रक्षा की।)

१५ वां मन्त्र केवल एक पाद का ही है। १६ वें मन्त्र में लिखा है कि—हम बुद्धिमान् स्तोता गौओं, अश्वों, अन्न, स्त्री और मित्रता को चाहते हैं। अतः लोग जैसे कुएँ में जल-पात्र को झुकाते हैं, वैसे ही हम इन्द्र को झुकावेंगे।

१८ वें सूक्त में गर्भ में रहे वामदेव का इन्द्र और अदिति के साथ का संवाद है।

(सायण ने लिखा है कि वामदेव माता के योनि-मार्ग से जन्म न लेकर

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माता के पार्श्व-भाग को तोड़ कर निकलना चाहता था। इस कारण उसकी माता ने उसे समझाने के लिये इन्द्र और अदिति को बुलाया था)

१ ले मन्त्र में इन्द्र वामदेव से कहते हैं कि अनादि काल से सारे देवता भी योनि-मार्ग से ही जन्म लेते आये हैं। इसलिए तुम भी इसी मार्ग से बाहर आओ। माता को मारने का कार्य न करो। २ रे मन्त्र में वामदेव उस मार्ग को दुर्गम वतलाकर पार्श्व-भेदन करके निकलने को कहते हैं। ३ रे मन्त्र में वामदेव इन्द्र का कहा न मान कर इन्द्र की शिकायत करते हैं कि इन्होंने त्वष्टा के घर में वहुत से धन द्वारा खरीदे सोम को बलात् पी लिया था। ४ थे में वे इन्द्र के दीर्घ-काल तक अदिति के गर्भ में रह कर उसे कष्ट देने की शिकायत करते हैं। इस पर अदिति इन्द्र का अतुलनीय होना प्रकट करती है।

५ वें और ६ ठे मन्त्र में भी अदिति इन्द्र का महत्त्व प्रकट करती है और बढ़ती हुई नदियों की ध्वनि को 'अलला' शब्द से सूचित कर, उसे भी इन्द्र की महिमा का द्योतक कहती है। ७ वें मन्त्र में वह कहती है कि (ब्राह्मण) वृत्र के वध से उत्पन्न हुए इन्द्र के पाप को जल ने फेन रूप से धारण किया था। ८ वें मन्त्र में वामदेव इन्द्र से कहते हैं कि युवती अदिति ने प्रमत्त होकर तुमको जना था, कुपवा (राक्षसी) ने प्रमत्त होकर तुमको निगल लिया था। ९ वें में वामदे व ने व्यंस (राक्षस) द्वारा इन्द्र के जवड़े का उखाड़ना और इन्द्र का उसे मारना कहा है। ११ वें में अदिति इन्द्र से कहती है कि हे पुत्र ! ये देव तुझे त्याग रहे हैं और इन्द्र विष्णु से कहते हैं कि यदि तुम वृत्र को मारना चाहते हो तो अधिक वली वनो।

१२ वें मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र। तुम्हारे अतिरिक्त माता को किसने विधवा किया, तुम्हें किसने मारना चाहा, कौंन तुमसे अधिक सुख दे सकता है, जिससे कि तुमने पैर पकड़ कर अपने पिता का वध कर डाला।[1]

१३ वें मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र—हमने (वामदेव ने) जीवन का अन्य उपाय न होने से कुत्ते की अँतड़ी को पका कर खाया। हमने इन्द्र के अतिरिक्त अन्य देवता को सुखदाता नहीं पाया। हमने अपनी स्त्री को असंमानित होते देखा। इसके वाद इन्द्र हमारे लिए मीठा जल लाये।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का, तुर्वीति और वय्य राजाओं के लिए, पृथ्वी को अन्न-जल से पूर्ण करना कहा है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र का अग्रु के पुत्र

१. यह कथा तैत्तरीय संहिता में है (६।१।३।६)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को दीमकों के स्थान से बाहर कर उसके अन्धेपन को दूर करना और उसके कीट-भुक्त अङ्गों को फिर से ठीक करना लिखा है। १० वें मन्त्र में (सूक्त कर्ता वामदेव का) इन्द्र के पहले के कर्मों को जानकर कहना प्रकट किया है। ११ वें मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र ! तुम पहले के ऋषियों और हमारे द्वारा स्तुत होकर स्तोताओं के अन्न को बढ़ाते हो। हे इन्द्र ! हम तुम्हारे लिए नया स्तोत्र बनाते हैं, जिस से हम रथ वाले होकर सदा तुम्हारी सेवा करते रहें।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि जिस प्रकार स्त्री—अभिमानी पुरुष स्त्री की प्रशंसा करता है, उसी प्रकार हम, नवीन ऋषियों द्वारा स्तूयमान इन्द्र की स्तुति करते हैं। ११ वां मन्त्र १९ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र के समान ही है।

(इसी प्रकार २१ वें, २२ वें, २३ वें और २४ वें सूक्तों के ११ वें (या अन्तिम) मन्त्र पूर्वोक्त १९ वें और २० वें सूक्तों के ११ वें (या अन्तिम) मन्त्र के समान ही हैं। अर्थात् इन सूक्तों के अन्तिम मन्त्र एक ही हैं।)

२२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में परुष्णी (रावी) नदी का उल्लेख है।

२६ वें सूक्त के प्रथम ३ मन्त्रों में वामदेव (अथवा इन्द्र) ने आत्मा की स्तुति की है। उसमें अपने को ही प्रजापति, सविता, कक्षीवान्, उशना आदि कह कर अर्जुन-पुत्र कुत्स को अलंकृत करने, आर्य को भूमि देने, आदि कामों का उल्लेख है। ४ से ७ वें मन्त्र तक श्येन पक्षी का स्वर्ग से मनुष्यों के लिये सोम लाना लिखा है।

२७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में सोम लाते समय श्येन और सोम-रक्षकों के बीच के युद्ध का वर्णन है। ४ थे मन्त्र में सोम-हरण के सम्बन्ध में अश्विद्वय के भुज्यु (नाम के राजा) को अपहरण करने की उपमा दी गई है।

२८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र द्वारा द्रोह रखने वाले सूर्य के रथ के चक्र को छीन लेना लिखा है। ४ थे और ५ वें मन्त्रों में दासों के विद्रोह और पणियों के गायों के चुराने का उल्लेख है।

३० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का युद्ध रत कुत्स के लिए सूर्य के रथ चक्र का अपहरण करना कहा है। ११ वें मन्त्र में इन्द्र का उषा देवी की गाड़ी को तोड़ कर विपाशा नदी के तीर पर गिराना और उषा का दूर देश में जाना, १३ वें में इन्द्र का शुष्ण के नगरों को नष्ट करना, १४ वें में इन्द्र का

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुलितर के पुत्र दास शम्बर को मारना, १५ वें में इन्द्र का दास वर्चि के ५०० और १००० अनुचरों को मारना, १६ वें में इन्द्र का अग्रु-पुत्र परावृत्त को स्तोत्र भागी बनाना, १७ वें में इन्द्र का ययाति के शाप से अनभिषिक्त राजा यदु और तुर्वष को अभिषेक के योग्य बनाना, १८ वें में इन्द्र का, सरयू नदी के पार रहने वाले, आर्यत्वाभिमानी अर्ण और चित्ररथ (राजाओं) को मारना, २० वें में इन्द्र का दिवोदास को शम्बर के पत्थर से बने १०० नगरों को देना, २० वें में इन्द्र का दभीति के लिये तीस हजार राक्षसों को वध करना लिखा है।

३२ वें सूक्त के ६ वें और १२ वें मन्त्रों से गोतम नाम वाले ऋषियों का इन्द्र की स्तुति करना और २४ वें मन्त्र से रथ में (घोड़ों के अतिरिक्त) बैलों का जोड़ा जाना प्रकट होता है।

३३ वें सूक्त में ऋभुओं के अपने माता-पिता को युवा करने, आदि कामों का उल्लेख है।

३४ वें से ३७ वें सूक्त तक ऋजु, विभु, वाज, और इन्द्र की प्रशंसा और स्तुति है।

३६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में ऋभुओं द्वारा दिये अश्विनी कुमार के त्रिचक्र रथ का बिना घोड़ों के अन्तरिक्ष में घूमना लिखा है।

३७ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में निष्क (स्वर्ण-मुद्रा) का उल्लेख है।

३८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में त्रसदस्यु का द्यावा-पृथिवी से धन पाकर याचकों को देना, और २ रे मन्त्र में द्यावा पृथिवी का दधिक्रा (अश्व रूपी अग्नि) देव को धारण करना कहा है। ५ वें मन्त्र में वस्त्र चुराने वाले चोर की उपमा काम में ली गई है। ६ ठे मन्त्र में घोड़े की लगाम का उल्लेख है। ७ वें में युद्ध में अश्व के प्रयोग की सूचना है। ९ वें और १० वें मन्त्रों में दधिक्रा का मनुष्यों द्वारा स्तुत होना और दधिक्रा का पञ्चजनों (ब्राह्मण से लेकर निषाद तक) को बढ़ाना कहा है।

४० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अङ्गिरा गोत्रोत्पन्न जिष्णु का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र से प्रकट होता है कि सवारी के घोड़े के गले, कक्ष, और मुख पर (साज के) बन्धन लगते थे।

४२ वें सूक्त के ८ वें और ९ वें मन्त्रों में लिखा है कि दुर्गह के पुत्र पुरुकुत्स के बन्दी हो जाने पर सप्तर्षि इस देश के पालक हुए थे और उन्होंने

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यज्ञ द्वारा इन्द्र और वरुण को प्रसन्न कर पुरुकुत्स की स्त्री के लिए त्रसदस्यु को प्राप्त किया था। यह त्रसदस्यु अर्ध देवता और इन्द्र तुल्य था।

(सायण ने लिखा है कि पुरुकुत्स के कैद हो जाने पर उसकी स्त्री ने अपने राज्य की अव्यवस्था को मिटाने के लिए स्वयमागत सप्तर्षियों की पूजा की थी, और उनके इन्द्र और वरुण का यज्ञ करने से रानी ने त्रसदस्यु को पाया था।)

४५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में तीन तरह के अन्न और सोम-रस पूर्ण चर्म-पात्र का उल्लेख है। ३ रे में भी सोम-रस पूर्ण चर्ममय पात्र का ज़िक्र है।

४७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में स्वर्गप्राप्ति की अभिलाषा से सोम-दान का उल्लेख है।

५३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में 'असुर' शब्द सूर्य के विशेषण के रूप में आया है, और इसका अर्थ बलवान् किया गया है। २ रे मन्त्र में 'द्रापि' शब्द कवच के लिए आया है।

५५ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में (व्यापार से) धन कमाने के लिए समुद्र-यात्रा का उल्लेख है।

५७ वें सूक्त में कृषि-कर्म का वर्णन है। इस सूक्त में जो 'शुन' शब्द है वह सुखदाता देवता इन्द्र या वायु के लिए माना गया है।

(शौनक 'शुन' से इन्द्र और 'सीर' से वायु का तात्पर्य लेते हैं। यास्क 'शुन' का अर्थ वायु और 'सीर' का अर्थ आदित्य करते हैं।)

७ वें मन्त्र में सीता शब्द हलकी रेखा के लिए है।

५८ वें सूक्त में विशेषतर घी की स्तुति है। इसके ४ थे मन्त्र में इन्द्र का दूध, सूर्य का दही और देवों का घी को उत्पन्न करना लिखा है।

(यहाँ पर चौथा मण्डल समाप्त होता है)

पाँचवे मण्डल के १ ले सूक्त के १२ वें मन्त्र में अत्रिवंशियों का और कविष्ठर ऋषि का अग्नि के स्तोत्र का उच्चारण करना कहा है।

२ रे सूक्त के १ ले मन्त्र में पुत्र को रथ के चक्र से निहित देख माता का उसको, पिता को न देकर, स्वयं गुहा-मध्य में धारण करना और लोगों का उसे फिर से अरणि स्थान में देखना कहा है। २ रे मन्त्र में उक्तकुमार का अरणि से उत्पन्न होना और उसको धारण करने वाली को पिशाची कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शाटचायन और ताण्ड्य ब्राह्मणों में इस सम्बन्ध में यह कथा मिलती है।

(एक वार इक्ष्वाकु-वंशी राजा त्र्यरुण और उसका पुरोहित वृश एक ही रथ पर जा रहे थे। वृश रथ चला रहा था। मार्ग में खेलता हुआ एक कुमार उस रथ के चक्कों से दबकर मर गया। इस पर कुमार की मृत्यु के लिए कौन अपराधी है, इसका निर्णय करवाने को वे दोनों वृद्ध इक्ष्वाकुओं के पास गये। उन्होंने रथ संचालक वृश को दोषी ठहराया। इस पर पुरोहित वृश ने 'वार्शसाम्नात' के द्वारा उस कुमार को फिर से जीवित कर दिया। परन्तु साथ ही इक्ष्वाकुओं को पक्षपाती कह कर उनके घरों से अग्नि के तेज के निकल जाने का शाप दिया। इस पर जब इक्ष्वाकुओं को पाकदिकार्यों में असुविधा होने लगी, तब उन्होंने पुरोहित वृश को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। वृश ने उनके घर आकर देखा कि ब्रह्म-हत्या का पाप त्रसदस्यु राजा की भार्या होकर पिशाच-रूप से अग्नि के तेज को अपहरण कर वस्त्र में छिपाये हुए है। इस पर ऋषि ने उसे प्रसन्न कर उस तेज को फिर से अग्नि के बीच रख दिया। इससे पाकादि में फिर पूर्ववत् सुविधा हो गई।)

६ ठे मन्त्र में शत्रुओं का अग्नि को मनुष्यों के बीच छिपाना कह कर, उसकी अत्रि-गोत्री वृश के स्तोत्र से मुक्ति चाही है। ७ वें मन्त्र में अग्नि का यूप से बँधे अपनी स्तुति करने वाले शुनः शेप को मुक्त करना प्रकट किया है। ११ वें मन्त्र में सूक्त-कर्ता अपने द्वारा अग्नि के लिए इस स्तोत्र का बनाया जाना प्रकट करता है।

३ रे सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि का दम्पती (भार्या और पति) को एक मनवाले बनाने का उल्लेख है।

४ थे सूक्त के ९ वें मन्त्र में अग्नि से प्रार्थना की गई है कि जिस प्रकार नाविक नौका से नदी पार करता है, उसी प्रकार तुम हमें पापों से पार कर दो और अत्रि की तरह हम से स्तुत होकर हमारी रक्षा करो। १० वें मन्त्र में कहा गया है कि हम मरणशील अमर अग्नि का, स्तुति द्वारा, आह्वान करते हैं।

५ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में देवियों से यज्ञ को पूर्ण करने की कामना की गई है। ६ ठे मन्त्र में रात्रि और उषा की स्तुति है। ८ वें मन्त्र में इला, सरस्वती और मही नामक देवियों की स्तुति है।

७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में ऋत्विजों से बल के पुत्र अग्नि के लिए अन्न

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रदान करने और उसकी स्तुति करने की प्रार्थना है। २ रे मन्त्र में कहा है कि ऋत्विग् लोग, जिसे प्राप्त कर प्रसन्न होते हैं, यज्ञ-गृह में जिसे पूजित कर प्रदीप्त करते हैं, और जिसके लिए जन्तुओं को उत्पन्न करते हैं, वह अग्नि कहाँ है ?

८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अङ्गिरा के पुत्र अग्नि से कहा गया है कि हम तुम्हारी स्तुति करके तुम्हारे निकट उपस्थित होते हैं, तुम यजमान के अन्न द्वारा प्रसन्न होओ।

(चतुर्थ अष्टक)

९ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में धौंकनी का उल्लेख है।

१२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में 'असुर' शब्द अग्नि के विशेषण के रूप में आया है। इसका अर्थ बलशाली किया है।

(इस अष्टक में यह शब्द १२ बार आया है। ११ स्थानों पर इसका सम्बन्ध देवों से है और १ स्थान पर असुर वृत्र से।)

१८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि से अत्रि-पुत्र द्वित को वल देने की प्रार्थना है। ५ वें मन्त्र में कहा गया है कि हे अग्नि ! तुम्हारी स्तुति के अनन्तर जो धन-दाता मुझे ५० घोड़े देते हैं, तुम उन धनी पुरुषों को खूब अन्न दो।

१९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अग्नि से वव्रि ऋषि की दशा को सुधारने की प्रार्थना है।

२२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विश्वसामा ऋषि को अत्रि की तरह अग्नि की पूजा करने का उपदेश है।

२३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्युम्न ऋषि अग्नि से ऐसे पुत्र की प्रार्थना करते हैं, जो स्तोत्र से युक्त (स्तोता) होकर, युद्ध में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे। ४ थे मन्त्र में विश्वचर्षणि ऋषि के लिए सामर्थ्य की प्रार्थना है।

२५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वसुयु ऋषि को अग्नि की स्तुति करने की सलाह दी गई है।

२७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में त्रिवृष्ण के पुत्र त्र्यरुण राजर्षि का दो बैल जुड़ा शकट और दस हज़ार सुवर्ण दान कर ख्याति-लाभ करना कहा है। २ रे मन्त्र में त्र्यरुण द्वारा, सौ सुवर्ण, बीस गायें, और दो घोड़ों वाला रथ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दिये जाने के कारण अग्नि से उसे सुखी करने की प्रार्थना है। ३ रे मन्त्र में त्र्यरुण के समान ही त्रसदस्यु की दानशीलता का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र में अश्वमेध राजा की दानशीलता दिखलाई है, और अग्नि से उसे यज्ञ करने की बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना है। ५ वें और ६ ठे मन्त्र भी अश्वमेध राजा के दान और कल्याण से सम्बन्ध रखते हैं।

२८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विश्ववारा का, देवों की स्तुति करते हुए, पुरोडाश से युक्त स्रुक् को लेकर और पूर्वाभिमुख होकर अग्नि के पास जाना कहा है। ३ रे मन्त्र में अग्नि से दाम्पत्य को सुनियमित करने की प्रार्थना है। (इनसे उस समय स्त्रियों का भी वेदाध्ययन और पति के साहचर्य से यज्ञ-संपादन करना प्रकट होता है।)

२९ वें सूक्त के २ रे, ३ रे और ४ थे मन्त्रों में इन्द्र का वृत्र को मारना सूचित किया है। ५ वें में इन्द्र का, एतश के लिए, सूर्य के घोड़ों की गति-रोध करने का उल्लेख है। ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का शम्वर के ९९ नगरों को एक ही समय नष्ट करना और मरुतों का त्रिष्टुप् छन्द में इन्द्र की स्तुति करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में अग्नि का इन्द्र के लिए सौ महिषों को पकाना कहा है। ८ वें में इन्द्र का तीन सौ महिषों का मांस भक्षण करना और तीन पात्रों में भरे सोम-रस का पान करना वर्णित है।

९ वें मन्त्र में इन्द्र और उशना का कुत्स के घर जाना, इन्द्र का देवों और कुत्स के साथ एक रथ पर बैठना, और शुष्ण को मारना लिखा है। १० वें मन्त्र में इन्द्र का सूर्य के रथ के दो चक्कों में से एक चक्के को अलग करना और दूसरे को कुत्स को देना प्रकट किया है। ११ वें में गौरिवीति ऋषि का इन्द्र के स्तोत्रों को बनाना, इन्द्र का विदथि के पुत्र ऋजिश्वा के लिए पिप्रु नामक असुर को वश करना, १२ वें में नौ महीनों और दस महीनों में समाप्त होने वाले यज्ञों के कर्ता अङ्गिरा लोगों का, इन्द्र की स्तुति कर, असुरों द्वारा छिपाई हुई गायों का पता पाना प्रकट किया है। १५ वें मन्त्र में अपने द्वारा इन्द्र के नवीन स्तोत्रों की रचना का उल्लेख है।

३० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र के विषय में शङ्का की गई है कि वह कहाँ है? और उसे किसने देखा है? २ रे मन्त्र में इन्द्र के विषय में की गई शङ्काओं का निवारण है। ७ वें मन्त्र में अपना इन्द्र की स्तुति करना प्रकट किया है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र का, नमुचि नामक दास को मारकर, अपने साथ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मैत्री करना और उस समय मरुतों के प्रभाव से द्यावा-पृथिवी का चक्र की तरह घूमने लगना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में दास (नमुचि) का स्त्रियों को युद्ध का शस्त्र बनाना, इन्द्र का उसकी उपेक्षा कर उसमें की दो स्त्रियों को अपने घर में रख लेना, और नमुचि से लड़ने जाना कहा है। ११ वें मन्त्र में इन्द्र का नमुचि द्वारा अपहृत गायों को छुड़ा कर बभ्रु को देना, १२ वें से १५ वें मन्त्र तक ऋणञ्चय राजा के सेवक रुशम देश-वासियों का अपने को (बभ्रु को) गायें, अलङ्कार, वस्त्र, घर और सुवर्ण-कलश देना सूचित किया है।

३१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र का असुर शुष्ण की युवती को ग्रहण करना लिखा है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र का यदु और तुर्वश को जल देना, कुत्स पर आक्रमण करने वाले शुष्ण को मार कर कुत्स को घर पहुँचाना, तथा उशना (भार्गव) और देवों का उन दोनों का सम्मान करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र और कुत्स का एक रथ पर बैठना और शुष्ण को उसके जलीय स्थान से हटाना कहा है। १० वें मन्त्र में अवस्यु ऋषि के घोड़े पाने का उल्लेख है। ११ वें मन्त्र में इन्द्र का, एतश ऋषि के साथ होने वाले सूर्य के संग्राम में, सूर्य के रथ को रोककर उसका एक चक्का छीन लेना और उससे शत्रुओं को मारना लिखा है।

३२ वें सूक्त के ३ रे और ४ थे मन्त्रों में इन्द्र का वृत्र के क्रोध से उत्पन्न हुए शुष्ण को मारना कहा है। १२ वें मन्त्र में बताया है कि हे इन्द्र! हमने जो तुम्हारी प्रशंसा सुनी है, वह मिथ्या प्रतीत होती है, और स्तोताओं को तुम से क्या मिलता है?

३३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सम्वरण ऋषि अपने को दुर्बल बतला कर इन्द्र से बल प्राप्ति की प्रार्थना करता है। ८ वें मन्त्र में गिरिक्षित-कुलोत्पन्न पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु का सम्वरण को १० घोड़े देना, ९ वें में मरुताश्व के पुत्र विदथ का अपने को (सूक्त कर्ता को) लाल घोड़े देना, और १० वें में लक्ष्मण के पुत्र ध्वन्य का घोड़े प्रदान करना कहा है।

३४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का मृग नामक असुर को मारने को उद्यत होना, ४ थे मन्त्र में इन्द्र का माता-पिता और भाई को मारने वाले यष्टा का भी हव्य ग्रहण करना, और पाप से विचलित न होना, ५ वें मन्त्र में इन्द्र का बन्धुओं का पोषण न करने वाले के साथ संगति न करना और ९ वें में इन्द्र से अपना अग्निवेश के पुत्र शत्रि नामक राजर्षि की स्तुति करना कह कर उसके लिए शुभ कामना प्रकट की गई है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में पुरुवसु का इन्द्र की स्तुति करना कहा है और ६ ठे मन्त्र में श्रुतरथ राजा के दान का और उसके प्रति प्रजा की भक्ति का उल्लेख है।

३९ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में अत्रि-पुत्रों का इन्द्र के लिए स्तोत्रोच्चारण करना कहा है।

४० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में सूर्य का स्वर्भानु द्वारा आच्छादित होना (ग्रहण से आच्छादित होना), ६ ठे में इन्द्र का उस (स्वर्भानु) की माया को दूर करना और अत्रि का ४ ऋचाओं के द्वारा अन्धकार से ढके सूर्य को फिर से प्रकाशित करना, ७ वें में सूर्य का, अत्रि और वरुण से, अन्धकार करके, अपने को, निगलने को उद्यत, असुर से बचाने की प्रार्थना करना, और ८ वें तथा ९ वें मन्त्रों में अत्रि (और उसके पुत्र) का सूर्य की सहायता करना कहा है।

४१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मित्र, वरुण, अर्यमा, आयु, इन्द्र, ऋभुक्षा, मरुद्गण और रुद्र से अपनी की हुई स्तुति को ग्रहण करने की प्रार्थना है।

५ वें मन्त्र में मरुतों से उशिज-पुत्र कक्षीवान् के होता अत्रि के, अश्वों द्वारा सुखी होने की कामना की गई है। ११ वें में रुद्र-पुत्र मरुतों और भग-देव, आदि की स्तुति के विषय में प्रश्न है। १७ वें में मनुष्यों द्वारा सन्तान आदि की प्राप्ति के लिए देवों की उपासना का उल्लेख है। १९ वें में इडा और उर्वशी की स्तुति है।

(इस सूक्त का २० वां मन्त्र एक पाद का ही है और उसमें ऊर्जव्य राजा का उल्लेख है।)

४२ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में भग, सविता, इन्द्र ऋभुक्षा, वाज और पुरन्धि नामक देवों से अपने यज्ञ में उपस्थित होने की प्रार्थना है। ६ ठे मन्त्र में मरुत्वान् की इन्द्र के विषय में उक्ति है कि इन्द्र जैसा बली न तो पूर्व वालों में, न पीछे वालों में और न नयों में ही कोई हुआ है।

४३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सात नदियों के आह्वन की सम्मति दी गई है। ६ ठे मन्त्र में 'ग्ना' देवी का उल्लेख है। १५ वें मन्त्र में स्त्री-पुरूष का साथ साथ अग्नि को अन्न प्रदान करना कहा है। १६ वां मन्त्र एक पाद का है।

४४ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में क्षत्र, मनस, अवद, यजत, सध्रि और अव-त्सार ऋषियों द्वारा सविता से अन्न पाने का उल्लेख है। ११ वें मन्त्र में विश्व-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वार, यजत और मायी ऋषियों का परस्पर सोमपान की मनुहार कर अधिक पान द्वारा अधिक मत्त होना लिखा है। १२ वें मन्त्र में सदापृण, यजत, बाहुवृक्त, श्रुतवित् और तर्य ऋषियों का शत्रु संहार करना और विश्वेदेवों की उपसना करना प्रकट किया है। १३ वें में यजमान (अवत्सार) के यज्ञ में सुतम्भर ऋषि का फलों की रक्षा और यज्ञ-कार्य को उन्नत करना कहा है।

४५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में (अङ्गिराओं की स्तुतियों से) इन्द्र का स्वर्ग से वज्र गिरा कर पणियों द्वारा चुराई गायों का उद्धार करना, ३ रे मन्त्र में अपने स्तुति करने तक वृष्टि का होते रहना और कर्मानुष्ठान से अङ्गिराओं का श्रान्त होना और ६ ठे मन्त्र में मित्रों के साथ स्तोत्र पाठ करने की इच्छा करना कहा गया है। इसी में कक्षीवान् का वन में जाकर स्तोत्र द्वारा जल प्राप्त करना भी कहा है। ७ वें मन्त्र में 'नवग्वों' और 'दशग्वों' द्वारा की गई इन्द्र की पूजा का, यज्ञ में आकर सरमा की गायों का पता लगाने का, और अङ्गिराओं की सफलता का उल्लेख है। ९ वें मन्त्र में सूर्य को 'सप्ताश्व' (सात घोड़ों वाला) कहा है। ११ वें में जल के लिए स्तोत्र का पाठ करने और 'नवग्वों' के दशमासीय यज्ञ करने का उल्लेख है।

४६ वें सूक्त की २ री ऋचा में अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु और मरुत् से बल-प्रदान करने की तथा नासत्यद्वय रुद्र, देवपत्नियों, पूषा, भग, और सरस्वती से अपनी पूजा से प्रसन्न होने की प्रार्थना है। ३ री ऋचा में इन्द्र, अग्नि मित्र, वरुण, अदिति, आदित्य, द्यावा, पृथिवी, मरुद्‌ण, पर्वत, जल विष्णु, पूषा, ब्रह्मणस्पति और सविता का आह्वान करना प्रकट किया है। ४ थी में, विष्णु, वायु और सोम से सुख प्रदान की प्रार्थना है और ऋभुगण, अश्विद्वय, त्वष्टा और विभु से ऐश्वर्य चाहा है। ५ वीं में कुछ पूर्वोक्त देवों के साथ अर्यमा का भी उल्लेख है। ६ ठी ऋचा में पर्वतों और नदियों से रक्षा की प्रार्थना है। इसी में भग और अदिति से भी प्रार्थना की गई है। ७ वीं ऋचा में पृथ्वी और अन्तरिक्ष में रहने वाली देव-पत्नियों से प्रार्थना की गई है। ८ वीं ऋचा में ग्ना, इन्द्राणी, अग्नायी अश्विनी, रोदसी, वरुणानी और ऋतुओं की अधिष्ठात्री देवियों से स्तोत्र-श्रवण और हव्य-भक्षण करने की प्रार्थना है।

५० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में यज्ञ के पशु का उल्लेख है।

५१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र से सोम में दही का मिलाया जाना प्रकट होता है। ८ से १० मन्त्रों तक का चतुर्थपाद एकसा ही है और उसका अर्थ जैसे यज्ञ में अत्रि रमण करते हैं, वैसे ही हे अग्नि! तुम भी अभिषुत सोम में रमण करो-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होता है। १५ वें मन्त्र में लिखा है कि हम भी सूर्यऔर चन्द्र की तरह कल्याण प्रद मार्ग में संचरण करें और अपने अक्रुद्ध हुए बन्धुओं से फिर मिलें।

५२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में श्यावाश्व को मरुतों की पूजन करने की सलाह है। ९ वें मन्त्र में परुष्णी नदी का उल्लेख है। १७ वें मन्त्र में ४९ मरुतों से गायों और घोड़े देने की प्रार्थना के साथ ही, इनके यमुना के तीर पर प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की गई है।

५३ वें सूक्त के १ ले और २ रे मन्त्रों में मरुतों के विषय में प्रश्न हैं। ४ थे में मरुतों के आभूषणों में माला, उरोभूषण और वलय (कड़े) गिनाये हैं। ९ वें में रसा, अनतिभा, कुभा, सिन्धु और सरयू नाम की नदियों का उल्लेख है।

५४ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में मरुतों से श्यावाश्व को धन और अन्न देने की प्रार्थना है। १५ वें मन्त्र में सौ हेमन्त ऋतुओं को पार करने अर्थात् सौ वर्ष से अधिक जीने की कामना है।

५६ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में अरुप (सूर्य के घोड़े) रोहित (अग्नि के घोड़े, और हरि (इन्द्र के घोड़े) के नाम हैं और मरुतों से उन्हें भिन्न भिन्न रथों में जोड़ने की प्रार्थना है। ९ वें मन्त्र में 'मीह्लषी' का नाम है।

(इसे मरुतों की माता और रुद्र की पत्नी मानते हैं।) इसी सूक्त के ८ वें मन्त्र का 'रोदसी' शब्द भी इसी का पर्यायवाची माना गया है।

५७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मरुतों के शस्त्रों में छुरी, धनुप, वाण और तूणीर का उल्लेख है।

६० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में श्यावाश्व का अग्नि की स्तुति करना प्रकट किया है। ५ वें में मरुतों का पिता रुद्र और माता पृश्नि (गो देवता) कही गई है।

६१ वें सूक्त की तीसरी ऋचा में लिखा है कि जिस प्रकार संभोग के समय रमणी ऊरूद्वय को विवृत करती है उसी प्रकार मरुद्गण अश्वों को, भागने के लिऐ ऊरुद्वय को विवृत करने को बाध्य करते हैं। ४ थे मन्त्र में अग्नितप्त ताम्र की तरह मरुतों का प्रदीप्त होना कहा है। ५ वें मन्त्र में श्यावाश्व कहता है कि, तरन्त की रानी शशीयसी ही मुझे घोड़े गायें आदि देती है। ६ ठे से ८ वें मन्त्रों तक शशीयशी और तरन्त की प्रशंसा है। ९ वें मन्त्र में श्यावाश्व को शशीयसी के दिये घोड़े को पुरुमीह्ल के पास पहुँचने का कहा है। १० वें मन्त्र में विददश्व के पुत्र पुरुमीह्ल का भी तरन्त के समान ही श्यावाश्व को

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गायें आदि देना कहा है। १७ वें मन्त्र में रात्रि देवी की प्रार्थना है और रथवीति का भी उल्लेख है। १८ वें मन्त्र में कहा गया है कि सोम-यज्ञ के पूर्ण होने पर रथवीति को सूचित करना कि तुम्हारी पुत्री के प्रति मेरी (श्यावाश्व) की कामना कम नहीं हुई है। १६ वें मन्त्र में रथवीति का निवास गोमती के तीर पर और घर पर्वत (हिमालय) पर बताया है।

(इस विषय में सायण ने यह कथा लिखीं है:—

दर्भ पुत्र रथवीति ने अत्रि-वंशज अर्चनाना को अपना होता बनाया था। उसने रथवीति की कन्या को देख कर रथवीति से उसका विवाह अपने पुत्र श्यावाश्व के साथ कर देने को कहा। राजा ने इस सम्बन्ध को ठीक समझ अपनी रानी से पूछा। उसने उत्तर दिया कि हमारे वंश की कन्याओं का विवाह ऋषियों के साथ होता आया है। परन्तु श्यावश्व ऋषि नहीं है। इस पर श्यावाश्व ने उस कन्या को प्राप्त करने के लिऐ उग्र तप प्रारम्भ किया। एक दिन श्यावाश्व भिक्षा माँगने को जाते हुए तरन्त की रानी शशीयसी के यहाँ जा पहुँचा। इस पर रानी उसे अपने पति के पास ले गई। राजा ने श्यावाश्व का यथोचित आदर कर बहुत सा धन दिया और शशीयसी ने उसे गायें और भूषण दिये इसके बाद तरन्त ने श्यावाश्व को अपने छोटे भाई पुरुमीह्ळ के पास भेजा। मार्ग में उसकी भेंट मरुद्गणों से हो गई। इस पर श्यावाश्व डर गया और उनकी स्तुति करने लगा। इससे प्रसन्न होकर मरुतों ने उसे ऋषि का पद दिया। इसके प्रभाव से वह सूक्त-द्रष्टा ऋषि वन गया। इस पर रथवीति और उसकी रानी ने अपनी कन्या उसे ब्याह दी।)

इस ६१ वें सूक्त में इसी कथा से सम्बन्ध रखने वाली बातें प्रकट की गई हैं।

६२ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में हजार खंभों वाले घर का उल्लेख है। ८ वें मन्त्र में 'दिति' और 'अदिति' शब्द आये हैं।

६४ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में मित्र और वरुण से अर्चनाना पर प्रसन्न होने की प्रार्थना की है।

६६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में मित्र और वरुण का रातहव्य की स्तुति से वल प्राप्त करना कहा है। ६ ठे मन्त्र में मित्र और वरुण के राज्य में गमन करने की इच्छा प्रकट की गई है।

६७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में अत्रि गोत्रोत्पन्न स्तोता अपने को अल्प बुद्धि वतलाकर मित्र और वरुण की स्तुति करना प्रकट करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

७० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में स्तोता अपने को समृद्ध वतलाकर दूसरे के धन का उपभोग न करने की घोषणा करता है।

७२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अत्रि के समान ही अपना भी मित्र और वरुण का आह्वान करना प्रकट किया है।

७३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अश्विनीकुमारों का सूर्य को प्रदीप्त करना कहा है। ६ ठे मन्त्र में अत्रि का, अग्नि के ताप को सुख-सेव्य समझ कर अश्विनीकुमारों का उपकार मानना प्रकट किया है।

७४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अत्रि का अश्विनीकुमारों के स्तोत्र का पाठ करना सूचित किया है, और ५ वें मन्त्र में अश्विनीकुमारों का वृद्ध च्यवन को युवा बनाना कहा गया है।

७५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विनीकुमारों को मधुविद्या जानने वाला कहा है।

७८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अत्रि का, अश्विनीकुमारों की स्तुति कर तुषाग्नि कुण्ड से मुक्ति पाना प्रकट किया है। ५ वें मन्त्र में सतप्ववध्रि काठ के सन्दूक से कहते हैं कि प्रसवोद्यत स्त्री के गर्भ-मुख की तरह तुम भी फैल जाओ और अश्विनी कुमारों से कहते हैं कि तुम हमें मुक्त करो।

(सायण ने लिखा है कि सप्तवध्रि ऋषि का भाई उसे स्त्री-संसर्ग से बचाने के लिये रात्रि में संदूक में बन्द कर देता था। इससे दुखित हो सप्तवध्रि ने अश्विनीकुमारों की स्तुति की। अतः उन्होंने आकर संदूक का ढक्कन खोल दिया। सप्तवध्रि वाहर निकल आया और स्त्री से मिलकर फिर संदूक में वैठ गया।)

९ वें मन्त्र में दस महीने तक माँ के पेट में रहे बालक के जन्म ने और उसकी माता के जीवित रहने की प्रार्थना है।

७९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में उषा का शुचद्रथ के पुत्र सुनीथि के अन्धकार को दूर करने का उल्लेख है। इसी में उससे वय्य के पुत्र सत्यश्रवा के अन्धकार को भी दूर करने की प्रार्थना है। ३ रे मन्त्र में उषा का सत्यश्रवा के अन्धकार को दूर करना सूचित किया है।

८१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में श्यावाश्व सविता की स्तुति करता है।

८३ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में पर्जन्य से वृष्टि वन्द करने की प्रार्थना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में एवयामरुत् ऋषि के स्तोत्रों के मरुतों और विष्णु के सामने उपस्थित होने की प्रार्थना है। इस सूक्त के अगले (२ से ९) मन्त्रों में भी एवयामरुत् कृत स्तुति है।

श्री सूक्त इसी सूक्त का परिशिष्ट समझा जाता है।

(यहाँ पर पाँचवाँ मण्डल समाप्त होता है।)

छठे मण्डल के ७ वें सूक्त के ६ ठें मन्त्र में सात नदियों का उल्लेख है।

९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में कहा है कि हम ताने-बाने को नहीं जानते। निरन्तर चेष्टा द्वारा बनाये जाने वाले वस्त्र को भी नहीं जानते। इस लोक में रहे किस पिता द्वारा शिक्षित पुत्र अपर जगत् की बात कहने में समर्थ होता है?

१० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में दीर्घतमा की माता ममता का उल्लेख है। ४ थे में अग्नि का रात्रि के अन्धकार को दूर करना कहा है। ७ वें मन्त्र में १०० हेमन्त ऋतुओं (१०० वर्ष) तक जीवित रहने की इच्छा प्रकट की गई है।

(उस समय हेमन्त से वर्ष का आरम्भ माना जाता था।)

११ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में 'पञ्चजना:' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

१३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि से अनेक प्रकार के धनों की उत्पत्ति बतलाई है।

१५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में भृगुओं का अग्नि को घर में स्थापित करना और भरद्वाज का अग्नि की पूजा करना बतलाया है। ९ वें मन्त्र में अग्नि को देवों का दूत कहा है। १७ वें मन्त्र में अथर्वा ऋषि का अग्नि मन्थन करना प्रकट किया है।

१६ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में (दुष्यन्त-पुत्र) भरत का अग्नि-स्तवन करना कहा है। ५ वें में अग्नि से, दिवोदास को दिये धन की तरह, भरद्वाज को भी धन देने की प्रार्थना है। ९ वें में मनु का उल्लेख है। १३ वें मन्त्र में संसार के धारण कर्त्ता पद्म-पत्र पर, अथर्वा द्वारा, अग्नि की उत्पत्ति सूचित की है। १४ वें मन्त्र में अथर्वा के पुत्र दध्यङ् ऋषि का अग्नि को प्रज्वलित करना सूचित किया है। १५ वें मन्त्र में पाथ्योवृषा ऋषि का अग्नि को समुद्दीपित करना बतलाया है। १९ वें में अग्नि का दिवोदास के शत्रुओं को नष्ट करना प्रकट किया है। ३३ वें में भरद्वाज ने अग्नि से धन प्राप्ति की इच्छा की है। ३९ वें मन्त्र में अग्नि का (त्रिपुरासुर के) पुरों को जलाना कहा है।

१७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अंगिराओं द्वारा स्तुत इन्द्र का पणियों द्वारा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चुराई गायों को प्रकट करना कहा है। ३ रे मन्त्र में इन्द्र से पूर्व समय में किये सोम-पान की तरह अपने सोम का भी पान करने, (मेघाच्छन्न) सूर्य को प्रकट करने तथा पणियों द्वारा अपहृत गायों का पता लगाने की प्रार्थना है। ६ ठे में इन्द्र का अङ्गिराओं के साथ मिलकर, गायों को गोष्ठ से वाहर करना सूचित किया है। १० वें मन्त्र में त्वष्टा का हजार धार वाले और सौ पर्वो (गाँठों) वाले वज्र का बनाना और इन्द्र का उससे वृत्र को मारना कहा है। ११ वें में पूषा और विष्णु का इन्द्र के लिए १०० भैंसों को पकाना और मद-कारक ३ सोम-पात्रों को भरना कहा है। १४ वें मन्त्र में भरद्वाज का इन्द्र से धन-संपत्ति और नौकर मांगना व्यक्त किया है।

१८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं के साथ मिलकर वला-सूर को मारना कहा है। ८ वें में इन्द्र का चुमुरि, धुनि, पिप्रु, शम्बर और शुष्ण को मारना लिखा है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र का शुष्ण से कुत्स की और शत्रुओं से आयु और दिवोदास की रक्षा करना और शम्बर के धन को (स्तोता) अतिथिग्व को देना प्रकट किया है।

२० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र के सहायक कुत्स के सामने से सेना सहित पणि का भागना और इन्द्र का शुष्ण की माया को नष्ट करना कहा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का शुष्ण को मारना और रथ हांकने वाले कुत्स को अपने रथ को वढ़ाने को कहना प्रकट किया है। ६ ठे में इन्द्र का नमुचि को मारना और सोये हुए सर्प के पुत्र नमी ऋषि की रक्षा करना वतलाया है। ७ वें में इन्द्र का पिप्रु के किलों को तोड़ना और ऋजाश्व को अमित धन देना प्रकट किया है। ८ वें में इन्द्र का (राजा) द्योतन के लिए वेतसु, दशोणि, तूतुजि, तुग्र और इभ नाम के असुरों को वश करना कहा है। १० वें में इन्द्र का पुरू कुत्स को धन देना और शरत् नामक असुर की, या शरत्कालीन, सात पुरियों को नष्ट करना सूचित किया है। ११ वें में इन्द्र का पुत्र उशना का उपकार करना और नववास्त्व नामक असुर को मारना कहा है। १२ वें में इन्द्र का धुनि को मारकर जल को मुक्त करना, और तुर्वश और यदु को समुद्र पार कराना सूचित किया है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र का धुनि और चुमुरी को मारना और दभीति का इन्द्र को हवि से तृप्त करना सूचित किया है।

२१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में भरद्वाज द्वारा स्तवन करना प्रकट किया है। ३ रे में मनुष्यों द्वारा स्वर्ग के लिए यज्ञ करना सूचित किया है। ५ वें में इन्द्र के प्राचीन, मध्यकालीन और नवीन स्तोताओं का होना वतलाया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८ वें में अपने को इन्द्र का नवीत्र स्तोत-कर्त्ता और इन्द्र का अपने पूर्वजों का बन्धु होना कहा है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र से अपने को वरुण, मित्र, इन्द्र, मरुद्गण, पूषा, विष्णु, अग्नि, सविता, औषधियों और पर्वतों की स्तुतियों के अभिमुख करने की प्रार्थना है।

२२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पुराकाल के ९ महीनों के यज्ञ करने वाले अपने सात पूर्वजों (अङ्गिरा, आदि) का इन्द्र की स्तुति करना प्रकट किया है। ७ वें मन्त्र में कहा है कि हे इन्द्र ! हम प्राचीन ऋषियों की तरह ही नवीन स्तुतियों द्वारा तुम्हारा स्तवन करते हैं।

२३ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में भरद्वाज का इन्द्र की स्तुति करना प्रकट किया है।

२५ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में भरद्वाज ने इन्द्र से संग्राम में शत्रुओं को मारने में प्रोत्साहन देने और अन्न व निवास प्रदान करने की प्रार्थना की है।

२६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में वाजिनी-पुत्र भरद्वाजों का गायों के लिये युद्ध करते समय इन्द्र पर निर्भर रहना सूचित किया है। ३ रे मन्त्र में इन्द्र से भरद्वाज को अन्न लाभ के लिए प्रेरित करने की प्रार्थना, तथा उस (इन्द्र) के कुत्स के लिए शुष्ण को और अतिथिग्व (दिवोदास) के लिए शम्बर को मारने का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र में इन्द्र का शत्रुओं के साथ १० दिनों तक लड़ते रहने वाले वृषभ राजा की सहायता करना, वेतसु राजा का सहायक होकर तुग्र को मारना (अथवा वेतसु और तुग्र नामक असुरों को मारना) और तुजि राजा के ऐश्वर्य को बढ़ाना बतलाया है। ५ वें में इंद्र का शम्बर की सेनाओं को और शम्बर को मारना तथा दिवोदास की रक्षा करना कहा है। ६ ठें मन्त्र में इन्द्र का सोमरस पीकर दभीति के लिए चुमुरी को मारना, पिठीनस को राज्य देना और अपनी बुद्धि से साठ हजार योद्धाओं का नाश करना लिखा है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र से प्रतर्दन के पुत्र क्षत्रश्री को बल और धन देने की प्रार्थना है।

२७ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का वरशिख के पुत्रों को मारना, ५ वें में इन्द्र का वरशिख के पुत्रों को मारना और चायमान राजा के पुत्र अभ्यवर्ती को धन देना तथा हरियूपा के पूर्व में रहने वाले (वरशिख के गोत्र में उत्पन्न) वृचीवान् के पुत्रों का वध करना सूचित किया है। ६ ठें मन्त्र में इन्द्र द्वारा यव्यावती (हरियूपा) के निकट (वरशिख के) एक सौ तीस पुत्रों को मारना

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिखा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र का, देववात-वंशी अभ्यवर्ती के लिए, वरशिख के पुत्रों को वश करते हुए, सञ्जय के लिए तुर्वश को देना कहा है। ८ वें मन्त्र में चयमान के पुत्र अभ्यवर्ती का स्तोत्र कर्ता (भरद्वाज) को स्त्रियों से युक्त रथ और २० गायें देना बतलाया है और पृथु के वंशज अभ्यवर्ती की इस दक्षिणा को किसी के भी द्वारा अनपहार्य कहा है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में गायों की रक्षा की प्रार्थना की गई है और कहा गया है कि यजमान जिन गायों से देवताओं के लिए यज्ञ करते हैं या जिनको दान करते हैं, वे उनके साथ चिरकाल तक रहें। ५ वें मन्त्र में गायों की कामना की गई है। इस मन्त्र में यह भी लिखा है कि गायें सोम-रस का भक्षण दें। (इससे सोम-रस में दूध, दही या घी का मिलाया जाना प्रकट होता है) अगले ३ मन्त्रों में भी गायों और वृषों को कामना और शुभ-कामना तथा गायों से (गव्य द्वारा) अपने क्षीण अङ्गों की पुष्टि कामना की गई है।

३१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र का कुत्स के साथ होकर शुष्ण से लड़ना कुयव को मारना और सूर्य के रथ के एक पहिये का हरण करना बतलाया है। ४ थे मन्त्र में इन्द्र का शम्बर के १०० नगरों को नष्ट करना तथा दिवोदास और भरद्वाज को धन देना कहा है।

३२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अपने द्वारा इन्द्र के स्तोत्रों का पढ़ा जाना, २ रे में अङ्गिराओं का इन्द्र की स्तुति करना और ३ रे में इन्द्र का अङ्गिराओं के साथ मिलकर शत्रुओं का नाश करना आदि कहा है।

३३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं के साथ होकर पणियों को मारना, और ३ रे में इन्द्र का शत्रुता करने वाले दासों और विश्वरूपादि आर्यों को नष्ट करना प्रकट किया है।

३४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में सैकड़ों हजारों स्तोताओं का इन्द्र की स्तुति करना कहा है।

३५ वें सूक्त के पांचों मन्त्रों में इन्द्र से अपने को अर्थात् भरद्वाजों को पुरस्कृत करने, आदि की प्रार्थनायें और अन्त में अङ्गिराओं को तृप्त करने की प्रार्थना है।

४३ वें सूक्त की १ ली ऋचा में इन्द्र का दिवोदास के लिए शम्बर को वश करना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४४ वें सूक्त की १३ वीं ऋचा में इन्द्र का प्राचीन और नवीन स्तोत्रों से परिवर्धित होना बतलाया है।

४५ वें सूक्त की १ ली ऋचा में इन्द्र का तुर्वश और यदु को दूर देश से लाना, २४ वें मन्त्र में इन्द्र का कुवित्स की गोशाला में जाना और छिपी गायों को प्रकट करना, ३१ वें मन्त्र में बृबु (शिल्प-कला के आचार्य) का, (गाङ्गयः) गङ्गा के ऊँचे तटों के समान, ऊँचे स्थान पर रहना, ३२ वें में बृबु का स्तोत्र-कर्ता को एक हजार गायें देना और ३३ वें में अपने द्वारा दाता बृबु की प्रशंसा का किया जाना सूचित किया है।

४६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में स्तोता रण-स्थल में इन्द्र से सहायता की प्रार्थना करता है। ७ वें में पञ्चक्षितिः शब्द आया है। ८ वें में स्तोता शत्रुओं को जीतने के लिए इन्द्र से तृक्षु, द्रुह्यु और पुरु का बल मांगता है। ९ वें में लकड़ी, ईंट और पत्थर (त्रिधातु) से बने घर का उल्लेख है।

४७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का, सोम-रस से प्रसन्न हो, वृत्र का विनाश और शम्बर की ९९ पुरियों को नष्ट करना कहा है। २० वें में स्तोता गर्ग, दस्युओं को आश्रय देने वाले गो-हीन देश में पहुँचकर, बृहस्पति से गायों का पता लगाने में और इन्द्र से मार्ग का अनुसन्धान करने में सहायता मांगता है। २१ वें मन्त्र में इन्द्र का, प्रतिदिन सूर्य रूप से उदित हो, रात्रि को दूर करना और उदव्रज देश में वर्चि और शम्बर नामक धनार्थी दासों को मारना कहा है। २२ वें में प्रस्तोक का इन्द्र के स्तोताओं को सुवर्ण पूरित १० कलश और १० घोड़े देना, और अतिथिग्व द्वारा शम्बर को जीतकर पाये धन का दिवोदास द्वारा स्तोत्र कर्ताओं को दिया जाना प्रकट किया है। २३ वें में दिवोदास के दान का वर्णन है। २४ वें में (अपने भ्राता) अश्वत्थ का पायु को घोड़ों वाले १० रथ और अथर्व गोत्र वालों को १०० गायें देना प्रकट किया है। २५ वें में भरद्वाज के पुत्र का सबकी भलाई के लिए संपत्ति लेना और सञ्जय के पुत्र का उसकी पूजा करना बतलाया है। २६ वें और २७ वें मन्त्रों से रथों का गोचर्म से बाँधा जाना और ढका जाना प्रकट होता है।

४८ वें सूक्त के १९ वें मन्त्र में पूषा से प्रार्थना की गई है कि जिस प्रकार तुमने प्राचीन काल में मनुष्यों की रक्षा की थी, उसी प्रकार इस समय हमारी भी रक्षा करना। २२ वें में कहा है कि एक ही बार स्वर्ग और एक ही बार पृथ्वी उत्पन्न हुई और प्रश्नि (गाय) से एक ही बार दूध निकाला गया।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

५० वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में जल को माताओं से भी श्रेष्ठ चिकित्सक बताया है। १० वें में अश्विद्वय का अत्रि को अन्धकार से छुड़ाना सूचित किया है। १२ वें से १४ वें मन्त्रों तक रुद्र, सरस्वती, विष्णु, वायु ऋभुक्षा, वाज, विधाता, सविता, भग, अग्नि, त्वष्टा, स्वर्ग, समुद्र, पृथ्वी, अहिर्बुध्न्य, अज–एक पाद् और विश्वेदेव की स्तुति है। १५ वें में लिखा है कि भरद्वाज गोत्र वाले मेरे पुत्र इसी प्रकार के स्तोत्रों से स्तुति करते हैं।

५१ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में देवों से अपने को भेड़ियों से बचाने की प्रार्थना है। ८ वें मन्त्र में नमस्कार की प्रशंसा है। १२ वें में भरद्वाज-गोत्र वाला स्तोता एक दिव्य घर के लिए प्रार्थना करता है।

५२ वें सूक्त की १ ली ऋचा में अतियाज के यज्ञ की निन्दा कर उसके यष्टा की अमङ्गल कामना की है। २ रे मन्त्र में मरुतों से अपने स्तोत्र की निन्दा करने वाले को नष्ट करने की प्रार्थना है। ३ रे मन्त्र में सोम को अपनी उपेक्षा करने के लिए उलाहना दिया गया है।

५३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में पूषा से कृपण को दान के लिए उद्यत करने की प्रार्थना है।

५५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में छाग-वाहन वाले पूषा की, जिन्हें लोग वहन का जार कहते हैं, स्तुति करना प्रकट किया है। ५ वें में पूषा को रात्रि रूपिणी माता का पति और वहन (उषा) का जार कह कर उसकी स्तुति की गई है, ।

६१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सरस्वती का वध्र्यश्व को दिवोदास नामक पुत्र देना और दान विमुख पणि का संस्कार करना कहा है। १० वें मन्त्र में सरस्वती को सात बहनों (नदियों) से युक्त कहा है। १२ वें में सरस्वती को त्रिलोक व्यापिनी, सात नदियों से युक्त और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा निषादों को समृद्धि देने वाली बतलाकर, उसे युद्ध में बुलाई जाने योग्य कहा है।

(पञ्चम अष्टक)

६२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में भरद्वाज ने अपना अश्विद्वय की स्तुति करना और उन्हें बुलाना प्रकट किया है। २ रे मन्त्र में अश्विनी कुमारों का जल के लिए, घोड़ों को मरुदेश को लंघा कर ले जाना प्रकट किया है। ६ ठे मन्त्र में अश्विद्वय का तुग्र-पुत्र भुज्यु को (उसकी नौका के डूब जाने पर) समुद्र पार कराना सूचित किया है। ११ वें मन्त्र में अपना अश्विद्वय की स्तुति करना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

६३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में स्तोम का अश्विद्वय को अपनी तरफ घुमाना बतलाया है। २ रे में अश्विद्वय से प्रार्थना की गई है कि वे शत्रु से हमारे घर की रक्षा करें। ९ वें मन्त्र में लिखा है कि पुरय की दो घोड़ियाँ और समीढ की सौ गायें और पेरुक का पका अन्न मेरे पास है। शान्त नामक राजा ने अश्विद्वय के स्तोताओं को घोड़े जुड़े दस रथ और पुरुष दिए हैं। १० वें में राजा पुरुपन्था का हजारों घोड़े देना प्रकट कर अश्विद्वय से भरद्वाज के लिए भी प्रार्थना की गई है।

६५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में उषा देवी से प्रार्थना है कि, जिस विप्र में उक्थ (मन्त्र) हैं, ऐसे मेरे समान व्यक्ति को पूर्व के अनुसार धन दो। ५ वें में उषा की कृपा से अङ्गिराओं का गायों को छोड़ना प्रकट किया है। ६ ठे में उषा से, भरद्वाज की तरह स्तुति करने वाले, अपने को पुत्रादि से युक्त धन देने की प्रार्थना है।

६६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मरुतों के सुवर्ण से सजे रथों का उल्लेख है। ७ वें में मरुतों के रथ का घोड़ों और सारथि के विना चलना प्रकट किया है।

६८ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अपने को इन्द्र और वरुण का स्तोता कहा है। ८ वें में अपने द्वारा इन्द्र और वरुण की स्तुति का किया जाना कहा है। ९ वें मन्त्र में वरुण को सम्राट की उपाधि से भूषित किया है।

६९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अपना इन्द्र और विष्णु की स्तुति करना और उन्हें हवि प्रदान करना कहा है।

७० वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में पिता-माता रूपिणी द्यावा-पृथिवी से अपने को अन्न देने की प्रार्थना है।

७३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में बृहस्पति का अन्धकार को और असुर-पुरों को नष्ट करना कहा है।

७५ वें सूक्त में कवच, धनुष, वाण, तूणीर, सारथि, रथ, घोड़े हाँकने के कोड़े और धनुष की प्रत्यञ्चा की चोट से कलाई को वचाने के लिए उस पर बाँधे जाने वाले चमड़े का वर्णन, प्रशंशा और स्तुति है।

वाण के विषय में लिखा है कि उसके पीछे पर लगे रहते हैं और उसका अग्र भाग लोहे का होता है तथा ये गाय की चर्म की तांत से बंधे रहते हैं। किसी-किसी वाण के आगे के हिस्से में विष भी लगा रहता है। जब तूणीर

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में से बाण बाहर खींचा जाता है तो आपस की रगड़ से "चिश्वा" शब्द की सी ध्वनि सुनाई पड़ती है।

(यहाँ पर छटा मण्डल समाप्त होता है)

सातवें मण्डल के १ ले सूक्त के १९ वें मन्त्र में अग्नि से प्रार्थना है कि हमें निःसन्तान न करना, खराब कपड़े न देना, कुबुद्धि न देना, भूख न देना, राक्षस के हाथ में न देना और हमें न घर में मारना न वन में मारना। २१ वें मन्त्र में अग्नि से औरस पुत्र की रक्षा की प्रार्थना है। २२ वें मन्त्र में अग्नि से कहा गया है कि तुम्हारी दुर्बुद्धि भ्रम से भी हमारे पास न आवे।

२ रे सूक्त के ३ रे मन्त्र में आये असुर शब्द का अर्थ बलवान किया है और यह अग्नि का विशेषण है।

(पाँचवें अष्टक में यह (असुर) शब्द भिन्न-भिन्न देवों के लिए ६ बार, वीर पुत्र के लिए १ बार और वर्ची नामक असुर के लिए १ बार कुल ८ बार आया है।)

३ रे सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का जौ की तरह काष्ठ का भक्षण करना कहा है। ७ वें मन्त्र में अग्नि से १०० लोह मय पुरियों द्वारा अपनी रक्षा करने की प्रार्थना है।

४ थे सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि की उत्पत्ति दो काष्ठों (की रगड़) से बतलाई है। ७ वें में अन्य जात (दत्तक) पुत्र की अनिच्छा प्रकट की है। ८ वें में अन्योदर्य (दत्तक) के लिए लिखा है कि वह सुख-दाता होने पर भी पुत्र रूप में नहीं माना जा सकता; क्योंकि वह फिर अपनी जगह चला जाता है, इसलिए हमें नवीन पुत्र दो।

५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि के पुरु के पास जाकर प्रज्वलित होने के कारण, उसके शत्रुओं की अखिल प्रजा का, भोजन छोड़कर, आना कहा है। ६ ठे मन्त्र में अग्नि का दस्युओं (अनार्यों) को उनके स्थानों से निकालना प्रकट किया है।

६ ठे सूक्त के ५ वें मन्त्र में अग्नि का नहुष (राजा) को कर-दाता करना बतलाया है।

८ वें सूक्त के ६ ठे और ७ वें मन्त्रों में १०० गायों का विभाग करने वाले और हजार गायों वाले वसिष्ठ को अग्नि के इस सूक्त का कर्ता कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि का जल से उत्पन्न होकर औषधियों में प्रवेश करना बतलाया है। ६ ठे मन्त्र में वसिष्ठ का अग्नि को प्रज्वलित करना प्रकट किया है।

१५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पञ्चजनों का उल्लेख है। १४ वें मन्त्र में सौ लोहमय पुरियों को बना कर अपनी रक्षा करने की प्रार्थना है।

१६ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में अग्नि से १०० पुरियों द्वारा अपनी रक्षा करने की प्रार्थना है।

१८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में वसिष्ठ द्वारा इन्द्र का स्तोत्र बनाया जाना कहा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का, सुदास के लिए, तेज धारावाली (परुष्णी) नदी के जल को पार करने योग्य कर देना कहा है। ६ ठे मन्त्र में भृगुओं और द्रुह्युओं का धन के लिए तुर्वश और सुदास को मिलाना और इन्द्र का पहले (तुर्वश) को मारना और दूसरे को जल से उबारना कहा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र का आर्यों की गायों को शत्रुओं से छुड़ाना सूचित किया है। ८ वें में शत्रुओं द्वारा परुष्णी नदी के तटों को खोद डालना और सुदास का चयमान के पुत्र कवि को मारना सूचित किया है। ९ वें में इन्द्र का परुष्णी के तटों को ठीक करने पर उसके जल का गन्तव्य स्थान को जाना तथा इन्द्र का सुदास के शत्रुओं को मारना प्रकट किया है। ११ वें मन्त्र में सुदास का कीर्ति के लिए, दो स्थानों के २१ मनुष्यों को मारना लिखा है। १२ वें मन्त्र में इन्द्र का श्रुत, कवष, वृद्ध, और द्रुह्यु को पानी में डुबोना कहा है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र का पूर्वोक्त व्यक्तियों के सब नगरों और सात रक्षा-साधनों को नष्ट करना और अनु के पुत्र के घर को तृत्सु को देना सूचित किया है। १४ वें मन्त्र में इन्द्र का अनु और द्रुह्यु की गायों को चाहने वाले ६६०६६ संवन्धियों को सुदास के लिए मारना कहा है। १५ वें मन्त्र में तृत्सुओं का युद्ध से भागना और बाधा मिलने पर अपनी भोग्य वस्तुओं को सुदास को दे देना वतलाया है। १६ वें और १७ वें मन्त्रों में इन्द्र का सुदास की सहायता करना कहा है। १८ वें में इन्द्र से भेद को मारने की प्रार्थना है। १९ वें में इन्द्र का भेद को मारना यमुना और तृत्सुओं का इन्द्र को सन्तुष्ट करना और अज, शिग्रु और यक्षु जनपदों का इन्द्र को घोड़ों के सिरों का उपहार देना प्रकट किया है। २० वें में इन्द्र का मन्यमान के पुत्र देवक को और शम्बर को मारना सूचित किया है। २१ वें में पराशर और वसिष्ठ का इन्द्र की स्तुति कर राक्षसों से अवध्य होना बताया है। २२ वें मन्त्र में अपना, इन्द्र की

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्तुति करके, देववान् के पौत्र और पिजवन के पुत्र सुदास की २०० गायों और २ रथों को पाना बतलाया है। २४ वें में सुदास की सातों लोकों में होने वाली प्रशंसा का उल्लेख कर, नदियों का युद्ध में युध्यामधि को मारना लिखा है। २५ वें मन्त्र में मरुतों से दिवोदास अथवा पिजवन की तरह उसके पुत्र सुदास की रक्षा करने की प्रार्थना है।

१९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का, अर्जुनी के पुत्र कुत्स को धन देकर दास, शुष्ण और कुयव को वश करना कहा है। ३ रे मन्त्र में इन्द्र से सुदास, पुरुकुत्स के पुत्र त्रस दस्यु और पुरु की रक्षा करने की प्रार्थना है। ४ थे मन्त्र में इन्द्र का दभीति के लिये दस्यु, चुमुरि और धुनि को मारना प्रकट किया है। ५ वें में इन्द्र का, शम्बर की ९९ वें पुरियों को नष्ट कर, १०० वीं पुरी पर अधिकार करना तथा वृत्र और नमुचि को मारना कहा है। ६ ठे मन्त्र में सुदास पर इन्द्र की कृपा का उल्लेख है, ८ वें में इन्द्र से सुदास को सुख देने और तुर्वश और याद्व (यदुवंशी) को वश करने की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का पिता (कश्यप) और माता (अदिति) से उत्पन्न होना कहा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र से कहा गया है कि, जो धन पूर्व वाला (पिता या बड़ा भाई) पिछले वाले (पुत्र या छोटे भाई) को देता है, जो धन छोटा बड़े को देता है और जो धन पिता से प्राप्त कर पुत्र दूर देश जाता है—इन तीनों प्रकार के धनों को हमें दो। ९ वें में इन्द्र के लिए सोम का, रस-वर्षण के रूप में, रोना और अपने को इन्द्र का स्तोता कहा है। १० वें मन्त्र में भी अपने को इन्द्र का स्तोता बतलाया है।

२१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र से शिश्न-देवों लिङ्ग-भक्तों से अपने यज्ञ की रक्षा करने की प्रार्थना है।

२२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में पत्थर से सोम का रस निकालना बतलाया है। ३ रे मन्त्र में वसिष्ठ इन्द्र से अपनी वनाई स्तुति का सुनने को कहते हैं। ९ वें मन्त्र में प्राचीन और अर्वाचीन ऋषियों का इन्द्र के स्तोत्र बनाना प्रकट किया है।

२३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वसिष्ठ अपने को इन्द्र की स्तुति करने को कहते हैं। ६ ठे में वसिष्ठों का इन्द्र की पूजा करना प्रकट किया है।

२४ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में स्वर्ग का आकाश में होना सूचित किया है। ६ ठे में इन्द्र से वीर पुत्र और अन्न माँगा गया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र से अपने शत्रु-पुरुषों को मारने की प्रार्थना है। ३ रे में शिप्र (उष्णीष=साफ़े) वाले इन्द्र से सुदास की रक्षा करने को कहा गया है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र का अपने स्तोताओं को द्युलोक और भूलोक में प्रतिष्ठित करना कहा है।

३१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र को १०० यज्ञों का करने वाला कहा है।

३२ वें सूक्त के १९ वें मन्त्र में केवल इन्द्र को ही अपना बन्धु और पिता लिखा है। २० वें मन्त्र में त्वष्टा का काष्ठ चक्र को नमन (तैयार) करना बतलाया है।

३३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वसिष्ठ के पुत्रों का सिर के दक्षिण भाग में चोटी रखना कहा है। २ रे मन्त्र में लिखा है कि वसिष्ठ के पुत्र, वयत् के पुत्र पाशद्युम्न का तिरस्कार कर, चमस से सोम-पान करते हुए, इन्द्र को ले आये। इन्द्र ने भी पाशद्युम्न को छोड़ वसिष्ठ पुत्रों का ही वरण किया।

(सायण ने लिखा है कि एक समय वसिष्ठ-गण सुदास राजा को यज्ञ करवा रहे थे। उसी समय वयत्-पुत्र पाशद्युम्न ने भी यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। परन्तु जब इन्द्र पाशद्युम्न के यज्ञ में सोम-पान करने लगे, तब वसिष्ठ-गण अपने मन्त्र बल से इन्द्र को उठा कर सुदास के यज्ञ में ले आये।)

३ रे मन्त्र में वसिष्ठ-पुत्रों का सिन्धु (नदी) को पार करना, भेद को मारना और अपने मन्त्र बल से, दाशराज्ञ के युद्ध में, इन्द्र को सुदास की रक्षा में समर्थ करना कहा है। ४ थे मन्त्र में मनुष्यों के स्तोत्र से पितरों की तृप्ति होना और वसिष्ठ-गोत्रियों की शक्वरी ऋचाओं और उत्तम शब्दों से इन्द्र का बल पाना लिखा है। ५ वें मन्त्र में वसिष्ठ पुत्रों का दस राजाओं के साथ के युद्ध में इन्द्र को ऊपर उठाना, इन्द्र का वसिष्ठ के स्तोत्र को सुनना और तृत्सुओं के लिए विस्तृत लोक देना कहा है। ६ ठे में वसिष्ठ का तृत्सुओं (भरतों) का पुरोहित होना और इससे तृत्सुओं की सन्तान का बढ़ना बतलाया है। ७ वें मन्त्र में अग्नि, वायु और सूर्य का संसार को जल देना और वसिष्ठ-गणों का आदित्य, आदि तीन आर्य प्रजाओं को जानना कहा है। ८ वें में वसिष्ठ-गणों की महिमा प्रकट की है। ९ वें मन्त्र में वसिष्ठ-गणों का हजार शाखाओं वाले संसार में भ्रमण करना और उनका यम के द्वारा परिधि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(वस्त्र-जगत्प्रवाह) को बुनते हुए—मातृ रूपिणी अप्सरा के पास जाना कहा है। १० वें मन्त्र में मित्र और वरुण का वसिष्ठ को देखना, उस समय वसिष्ठ का एक जन्म होना और अगस्त्य का वसिष्ठ को वासस्थान से लाना कहा है। ११ वें मन्त्र में वसिष्ठ का मित्र और—वरुण का पुत्र होना, वसिष्ठ का उर्वशी का मानस-पुत्र होना, उस समय मित्र और वरुण का वीर्य स्खलन होना और विश्वेदेवों का पुष्कर के मध्य वसिष्ठ को धारण करना व्यक्त किया है। १२ वें मन्त्र में वसिष्ठ का यम द्वारा विस्तीर्ण वस्त्र (संसार-प्रहाव) को बुनने की इच्छा से उर्वशी अप्सरा से उत्पन्न होना सूचित किया है। १३ वें मन्त्र में मित्र और वरुण का, स्तुति द्वारा प्रार्थना किये जाने पर, कुम्भमें एक साथ वीर्य गिराना और उस घड़े से (अगस्त्य का) उत्पन्न होना और लोगों का उसी कुम्भ से वसिष्ठ की उत्पत्ति बतलाना कहा है। १४ वें मन्त्र में (तृत्सुओं से) वसिष्ठ का मान करने को कहा गया है।

३४ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वरुण को राष्ट्रों का राजा कहा है।

३५ वें सूक्त में अन्य देवों के साथ ही गाय, घोड़ा, ओषधि, पर्वत, नदी, जल, दिशाओं, और वृक्ष आदि से शान्ति की प्रार्थना की गई है।

३६ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में सिन्धु को नदियों की माता और सरस्वती को सातवीं नदी कहा है।

३७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में ऋभुओं से दूध, दही और सत्तू मिले सोम-रस को पीने की प्रार्थना है।

३८ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में वाजी देवों से, सोम-पान से मत्त होकर, देवयान से जाने की प्रार्थना है।

३९ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में भग, अश्विनी कुमारों और इन्द्र की पूजा करने का आदेश है।

४१ वें सूक्त के १ से ६ मन्त्रों तक अन्य देवों के साथ भग नामक देव की स्तुति है।

४४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में दधिक्रा आदि के साथ वरुण के पिङ्गल वर्ण अश्व की स्तुति है। ४ थे मन्त्र में अश्वों के मुखिया दधिक्रा का, अङ्गिराओं से सहमत होकर, रथ के अग्र भाग में लगना सूचित किया है।

४६ वें सूक्त में रुद्र की स्तुति और उससे अपने को तथा अपने पुत्र और पौत्रों को न मारने की प्रार्थना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४७ वें सूक्त में जल और सिन्धु-गण की स्तुति है और वसुओं के साथ इन्द्र का सोम से मत्त होना सूचित किया है।

४८ वें सूक्त में ऋभुगणों की स्तुति है।

४९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अन्तरिक्ष में उत्पन्न होने वाले, नदियों में प्रवाहित होने वाले, खोद कर निकाले जाने वाले और स्वयं उत्पन्न होकर समुद्र की ओर जाने वाले जलों से रक्षा की प्रार्थना है।

५० वें सूक्त में अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाले अनेक तरह के विषों से रक्षा की प्रार्थना है।

५४ वें सूक्त में वास्तोष्पति (गृह-पालक) देव की स्तुति है।

५५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सरमा (देव-कुक्कुरी) के वंशज वास्तोष्पति की स्तुति है। ३ रे में सारमेय से अपने पास न आकर चोरों और डाकुओं के पास जाने की प्रार्थना है। ४ थे मन्त्र में सारमेय से कहा हैकि तुम सूअर को फाड़ो सूअर तुम्हें फाड़े। तुम हमें बाधा न दो, सो जाओ। ५ वें मन्त्र में कहा है कि हे सारमेय। तुम्हारी माता सोवे, पिता सोये, तुम सोओ, गृह स्वामी सोवे, बन्धु गण सोवें और चारों तरफ के मनुष्य सोवें। ६ ठे मन्त्र में लिखा है, जो व्यक्ति यहाँ है, जो घूमता है, जो हमें देखता है, हम उन सबकी आँखें फोड़ डालेंगे। वे सब हर्म्य (घर) के समान निश्चल हो जायँगे।

७ वें मन्त्र में कहा है कि हम समुद्र से ऊपर उठने वाले सूर्य की सहायता से सब को सुला देंगे।

८ वें मन्त्र में प्रकट किया है कि जो स्त्रियाँ आँगन में सोती हैं, जो सवारी पर सोती हैं, जो तल्प (बिस्तर) पर सोती हैं और जो पुण्यगन्धा हैं, उन सबको हम सुला देंगे।

५६ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में मरुतों को श्वेत-वर्ण बतलाया है। १३ वें मन्त्र में मरुतों के कंधों पर खादि (वलय) और छाती पर रुक्म नामक आभूषण बतलाये हैं।

५८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में मरुतों को देवलोक (स्वर्ग) में सबसे बुद्धिमान् कहा है।

५९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में वसिष्ठ, मरुतों को सोम-पान के लिए बुलाते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

७ वें मन्त्र में नील-पृष्ठ हंसों की उपमा दी गई है। १२ वां मन्त्र 'मृत्युञ्जय' मन्त्र है।

(इसमें उर्वारुक का अर्थ ककड़ी है।)

६० वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में सूर्य का अपने रथ में सात हरे घोड़ों को जोतना लिखा है।

६१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में मित्र और वरुण का पृथ्वी और द्युलोक की प्रदक्षिणा करना प्रकट किया है। ६ ठे में मित्र और वरुण के लिए नये स्तोत्र बनाने की कामना की गई है।

६६वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वरुण, मित्र और अर्यमा का वर्ष, मास, दिन, यज्ञ, रात्रि और ऋचा को बनाना कहा है।

६८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में अत्रि से महिष्वत् को अलग करने की प्रार्थना है। ६ ठे मन्त्र में अश्विद्वय का जर्जरित च्यवन को मृत्यु से लाकर रूप देना बताया है। ७ वें में अश्विद्वय का, दुष्ट मित्रों द्वारा समुद्र के बीच छोड़े, भुज्यु को पार लगाना बतलाया है। ८ वें मन्त्र में अश्विद्वय का क्षीण होते हुए वृक ऋषि को धन देना, और शयु ऋषि की बात सुनना प्रकट किया है।

६९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में रथ पर सारथियों के बैठने के तीन स्थान कहे हैं।

७० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में घर्म (गरमी) से वृष्टि का होना सूचित किया है।

७१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में अश्विद्वय का च्यवन का बुढ़ापा दूर करना, पेद्रु राजा के लिए युद्ध में शीघ्र गामी घोड़ा भेजना, अत्रि को पाप और अन्धकार से बचाना, और जाहुप को गया हुआ राज्य फिर से दिलाना कहा है।

७२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में वसिष्ठ अपने और अश्विनी कुमारों के बन्धुओं का एक ही होना बतलाते हैं।

७३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में वसिष्ठ अश्विद्वय की स्तुति करते हैं।

७६ वें सूक्त के ६ ठे और ७ वें मन्त्रों में वसिष्ठ गणों का प्रातः काल जागकर, उषा की स्तुति करना कहा है।

८० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में उषा का लज्जा-हीना युवती की तरह सूर्य के सामने आना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मनुष्यों का युद्ध में झंडे के साथ जाना और युद्ध में मरने पर स्वर्ग प्राप्त करना बतलाया है। ३ रे मन्त्र में सैनिकों का धान्यों को नष्ट करना और उनके कोलाहल का आकाश तक फैलना जताया है। ४ थे मन्त्र में इन्द्र और वरुण का भेद को मारकर सुदास की रक्षा करना और तृत्सुओं के स्तोत्रों को सुनना प्रकट किया है। ६ ठे और ७ वें मन्त्रों में दस राजाओं से आक्रान्त सुदास और तृत्सुओं को बचाना और ८ वें मन्त्र में इन्द्र और वरुण का जटावाले तृत्सु-गणों के देश में, १० राजाओं से घिरे, सुदास की रक्षा करना कहा है।

८६ वें सूक्त में वरुण की स्तुति है। उसमें अपने किये अपराध की जिज्ञासा और उसका प्रायश्चित करने की इच्छा प्रकट की गई है। इसके ६ ठे मन्त्रमें पाप का आत्म-दोष से न होना कह कर उसका भ्रम, क्रोध, जुए, अज्ञान, आदि से होना, या ज्यायान् (ईश्वर) के कनीयस् (अल्पज्ञ) पुरुष को कुपथ में ले जाने से होना कहा है। आगे कहा है कि दैवगति से स्वप्न में भी पाप हो जाता है।

८७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सूर्य का रात्रि को दिन से अलग करना बतलाया है।

८८ वें सूक्त में वसिष्ठ द्वारा वरुण की स्तुति की गई है। इसके ३ रे मन्त्र में वरुण का वसिष्ठ को नौका पर चढ़ाना कहा है।

८९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वरुण से अपने को मट्टी के घरों को न देने की प्रार्थना है। ४ थे मन्त्र में समुद्र-जल में रहते हुए भी अपने को प्यास लगना प्रकट किया है (क्योंकि समुद्र का जल अपेय होता है) ५ वें में वरुण से, अपराधों के कारण, अपने को नहीं मारने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के प्रथम चार मन्त्रों का अन्तिम पाद एकसा ही है।)

९५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सरस्वती नदी के लिए लोहमय पुरी की उपमा दी है। २ रे में सरस्वती का नहुष के लिए घी और दूध दोहना (देना) प्रकट किया है।

९७ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में बृहस्पति और इन्द्र को पार्थिव और दिव्य धन के स्वामी कहा है।

९८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का असुरों की माया को नष्ट करना सूचित किया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

९९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में विष्णु की अतुलनीयता बतलाकर उनका पृथ्वी की पूर्व दिशा को धारण करना कहा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र और विष्णु का शम्बर की ९९ पुरियों को नष्ट करना और असुर वर्चि के सैकड़ों हजारों वीरों को मारना बतलाया है।

१०० वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में विष्णु (के वामन-अवतार) का पृथ्वी पर तीन चरण-क्षेप करना कहा है।[1]

१०३ वें सूक्त में अनेक प्रकार के मेंढकों का और उनके कार्यों का वर्णन है। इसमें लिखा है कि मेंढक साल भर सोता है। सूखे चर्म की तरह सरोवरों में सोया मेंढक वर्षा के जल से बोल उठता है। वर्षा होने पर मेंढक जिस प्रकार पुत्र 'अक्खल' शब्द करता हुआ पिता के पास जाता है, उसी प्रकार दूसरे मेंढक के पास जाता है। वर्षा होने पर मेंढक छलांगें मारते हैं और भूरे और हरे दोनों जातियों के मेंढक साथ-साथ शब्द करते हैं। मेंढक एक दूसरे की ध्वनि का अनुकरण कर जब छलांगें भरते हैं, तब उनके शरीर के जोड़ ठीक हो जाते हैं। मेंढकों में किसी की आवाज गाय जैसी और किसी की बकरे जैसी होती है। अतिरात्र नामक सोम-याग में स्तोता जिस प्रकार शब्द करते हैं, उसी प्रकार का शब्द, भरे तालाब में, ये मेंढक भी करते हैं। इस सूक्त का अन्तिम मन्त्र यह है :—

गोमायुरदादजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्रतिरन्त आयुः ॥१०॥

अर्थ—गाय की तरह शब्द करने वाले मेंढक हमें धन दें। बकरे की तरह शब्द करने वाले मेंढक हमें धन दें। भूरे (धूम्र-वर्ण वाले) मेंढक हमें धन दें। हरे रंग वाले मेंढक हमें धन दें। हजारों ओषधियों को उत्पन्न करने वाली वर्षा-ऋतु में सैंकड़ों गायें देते हुये मेंढक हमारी आयु बढ़ावें।

१०४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र और सोम से ब्राह्मणों से द्वेष करने वाले क्रव्यादों (राक्षसों) को मारने की प्रार्थना है। १४ वें मन्त्र में लिखा है कि हे अग्नि! यदि मैं असत्य दवों वाला हूँ और वृथा देवों के निकट जाता हूँ, तो मुझे मारो, अन्यथा मेरे प्रति क्यों क्रुद्ध होते हो? १५ वें मन्त्र में लिखा

१. शौनक के मतानुसार स्नान व उपवास कर और पूर्वाभिमुख होकर, इससे आगे के (१०१ वें और १०२ वें) सूक्तों का जप करने से पांच रात्रियों के पश्चात् अवश्य ही वृष्टि होती है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है कि यदि मैं (वसिष्ठ) राक्षस हूँ या पुरुष की आयु नष्ट करता हूँ, तो अभी मर जाऊँ, अथवा जो मुझे वृथा ही राक्षस कहता है, उसके १० वीर पुत्र मर जायँ। १६ वें में कहा है कि जो राक्षस मुझ अराक्षस को राक्षस कहता है और जो राक्षस अपने को पवित्र समझता है, उसे इन्द्र मार डाले और वह जीवों में अधम होकर पतित हो। १७ वें मन्त्र में लिखा है कि रात्रि में राक्षसी उल्लू की तरह छिपकर चलती है। (इस सारे ही सूक्त में इन्द्र से राक्षसों और राक्षसियों के विनाश की प्रार्थना है। इसके २१ वें मन्त्र में फरसा और मुग्दर का तथा २२ वें में उल्लू, कुत्ते, चकवे, बाज़ और गृध्र का उल्लेख है।

(यहाँ सातवाँ मण्डल समाप्त होता है।)

आठवें मण्डल के १ ले सूक्त के ५ वें मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र ! मैं तुम्हें सौ, हज़ार या दस हज़ार में भी नहीं बेच सकता। ९ वें मन्त्र में इन्द्र के दस योजन चलने वाले घोड़ों का उल्लेख है। १७ वें मन्त्र में सोम को जल से धोकर पत्थर से कूटना बतलाया है। २१ वें में सोम को मादक कहा है। २५ वें मन्त्र में इन्द्र के सफेद पीठ वाले और मयूर वर्ण के घोड़ों का उल्लेख है। ३० वें मन्त्र में मेध्यातिथि से बार-बार अपनी (राजर्षि आसङ्ग) की स्तुति करने को कहा है और अपने को सबसे अधिक देने वाला बतलाया है। ३१ वें मन्त्र में अपने को यदुवंशी और पशुओं वाला प्रकट किया है। ३२ वें मन्त्र में हिरण्मय चर्मास्तरण के दान का उल्लेख है। ३३ वें में प्लायोग के पुत्र आसङ्ग का १०,००० गायें दान कर सब दानियों से श्रेष्ठ हो जाना सूचित किया है। ३४ वें मन्त्र में पुरुषेन्द्रिय का वर्णन है। वह मन्त्र इस प्रकार है :—

अन्वस्य स्थुरं ददृशे पुरस्तादनस्थ अरुरवरम्बमाणः।
शश्वती नार्यभिचक्ष्याह सुभद्रमर्य भोजनं बिभर्षि ॥३४॥

अर्थ—(आसंग के) आगे स्थूल देखा जाता है। वह हड्डी से रहित, बड़ा और नीचे की ओर लटक रहा है। (आसंग की भार्या) शश्वती ने उसे देखकर कहा—हे आर्य ! आप बहुत उत्तम भोग के साधन को धारण करते हो।

(कहा जाता है कि प्लायोग नामक राजा का पुत्र आसंग शाप के कारण स्त्री हो गया था। अन्त में मेध्यातिथि के प्रभाव से वह फिर पुरुष हो गया। अङ्गिरा की कन्या शश्वती आसंग की पत्नी थी। इस मन्त्र की ऋषि वही शश्वती मानी जाती है।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२ रे सूक्त के १२ वें मन्त्र में सोम की मादकता की तुलना सुरा की मादकता से की है। २० वें मन्त्र में इन्द्र से कहा गया है कि बुलाये जाने पर कुत्सित जामाता की तरह संध्या काल न करना। ४० वें में मेष रूप से जाते हुए इन्द्र का, स्तुति-कर्ता कण्वपुत्र, मेध्यातिथि को पाना लिखा है। ४१ वें मन्त्र में विभिन्दु (राजा) का अपने को पहले चालीस हज़ार और फिर आठ हज़ार धन देना प्रकट किया है।

३ रे सूक्त के १२ वें मन्त्र में इन्द्र का पुरु के पुत्र, रुशम, श्यावक और कृप नामक राजाओं की रक्षा करना सूचित किया है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का वृत्र, अर्बुद और मृगय को मारना कहा है। २१ वें और २२ वें मन्त्रों में कुरुयाम के पुत्र पाकस्थामा का दान देना बतलाया है। २३ वें मन्त्र में तुग्र-पुत्र भुज्यु का उल्लेख है। २४ वें मन्त्र में दानी पाकस्थामा को पिता का योग्य पुत्र कह कर उसकी स्तुति की है।

४ थे सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का स्तोताओं के स्तोत्रों द्वारा राजा आनुक के पुत्र के लिए और तुर्वश के लिए प्रेरित होना सूचित किया है। २ रे मन्त्र में इन्द्र का रुम, रुशम, श्यावक और कृप नामक राजाओं के साथ प्रमत्त होना और कण्वों का स्तोत्र द्वारा इन्द्र का आह्वान करना प्रकट किया है। ३ रे मन्त्र में कण्वों का इन्द्र को अपने साथ सोम-पान के लिए बुलाना सूचित है। ७ वें मन्त्र में स्तोता ने इन्द्र से अपना तुर्वश और यदु को देखना प्रकट किया है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र को शहद मिला सोम-रस पीने को बुलाया गया है। १६ वें मन्त्र में स्तोता अपनी बुद्धि को नाई की बाँह में रहने वाले छुरे की तरह तेज़ करने की प्रार्थना करता है। १९ वें मन्त्र में स्तोता, राजा कुरुङ्ग-की स्वर्ग-प्राप्ति के लिए, मनुष्यों के बीच, अपना सौ घोड़े और धन पाना प्रकट करता है। २० वें मन्त्र में देवातिथि अपना, कण्व के पुत्र मेधातिथि और प्रिय मेध नामक ऋषियों के द्वारा सेवित, साठ हज़ार गायों का पाना प्रकट करता है।

५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में कण्व-गोत्र के लोग अपनी रक्षा के लिए अश्विद्वय की प्रार्थना करते हैं। १९ वें मन्त्र में अश्विद्वय से मधु-पूर्ण चर्म-पात्र से मधु पीने की प्रार्थना है। २३ वें मन्त्र में अश्वद्वय का हर्म्य (प्रासाद) के नीचे असुरों द्वारा बांधे गये कण्व की रक्षा करना प्रकट किया है। २५ वें मन्त्र में अश्विद्वय से प्रार्थना की गई है कि जिस प्रकार तुमने कण्व, प्रियमेध, उपस्तुत, और अत्रि की रक्षा की थी, उसी प्रकार हमारी भी रक्षा करो। २६ वें मन्त्र

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में अश्विद्वय से कहा गया है कि जैसे तुमने धन के लिये अंशु की, गायों के लिए अगस्त्य की, और अन्न के लिए सोभरि की रक्षा की थी, वैसे ही हमारी भी करना। २८ वें मन्त्र में अश्विद्वय से सुवर्ण से बने सारथि के स्थान वाले और सुवर्ण की लगाम वाले रथ पर बैठने की प्रार्थना है। ३१ वें मन्त्र में अश्विद्वय से दासों की नगरियों को नष्ट कर दूर देश से अन्न लाने की प्रार्थना है। ३७ वें मन्त्र में अश्विद्वय को सूचित किया है कि चेदि-वंशी कशु ने हमें सौ ऊँट और दस हज़ार गायें दान में दी हैं। ३८ वें में कशु का अपनी (ऋषि की) सेवा के लिए दस राजाओं का देना और सारी प्रजा का कशु के पैरों के नीचे रहना प्रकट किया है। ३९ वें मन्त्र में लिखा है कि चेदि-वंशियों के जाने के मार्ग से दूसरा नहीं जा सकता और स्तोताओं को कशु की अपेक्षा अधिक दान देने वाला कोई नहीं है।

६ ठे सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का कांपते हुए वृत्र के मस्तक को सौ धारों वाले वज्र से छेदन करना प्रकट किया है। १८ वें मन्त्र में इन्द्र से प्रार्थना है कि तुम्हारी जो स्तुति अङ्गिरोगण करते हैं और जो भृगुगण करते हैं, उन सब में तुम मेरा स्तोत्र सुनो। ३९ वें मन्त्र में इन्द्र से शर्यणावत् (कुरु-क्षेत्र ?) के तालाब के पास ऋत्विगों द्वारा प्रारम्भ किये यज्ञ में तृप्त होने की और अपनी स्तुति से आनन्दित होने की प्रार्थना है। ४६ वें मन्त्र में यदुवंशी परशु के पुत्र तिरिन्दिर से अपना धन पाना कहा है। ४७ वें में तिरिन्दिर का पज्र और साम को तीन सौ अश्व और दस हज़ार गायें देना प्रकट किया है। ४८ वें मन्त्र में तिरिन्दिर का स्वर्ण-भार से युक्त ४ ऊँटों को तथा यदुओं को दास-रूप में देना सूचित किया है।

७ वें सूक्त के १८ वें मन्त्र में मारुतों से कहा गया है कि तुमने जो यदु, तुर्वश और कण्व की रक्षा की थी, उसका हम स्मरण करते हैं। २१ वें मन्त्र में मरुतों से कहा गया है कि तुम्हारा दूसरों के स्तोत्रों से प्रसन्न होना उचित नहीं है। २९ वें मन्त्र में मरुतों का ऋजीका देश के शर्यणावत् (कुरुक्षेत्र के पास के तालाब ?) में रथ के चक्कों को झुका कर जाना कहा है।

८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि तुम लोग अन्तरिक्ष से आकर कण्व-वंशियों के यज्ञ में सोम-पान करो। ४ थे में कण्व वंशियों ने सोम-मय मधु के पान के लिए अश्विनीकुमारों को बुलाया है। ८ वें में कहा गया है कि मेरे सिवा दूसरा कौन अश्विद्वय की उपासना कर सकता है ? हे अश्विद्वय ! कण्व का पुत्र वत्स ऋषि तुम्हारा वर्धन करता है। ११ वें

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में कवि के पुत्र (काव्य) और वत्स-ऋषि का अश्विद्वय की स्तुति करना प्रकट किया है। १५ वें मन्त्र में वत्स का अश्विद्वय की स्तुति करना सूचित किया है। १८ वें मन्त्र में प्रियमेध ऋषियों का अश्विद्वय का आह्वान करना प्रकट किया है। १६ वें में वत्स ऋषि का अश्विद्वय की स्तुति करना कहा है। २० वें में अश्विद्वय से कहा गया है कि जिस प्रकार तुमने कण्व, मेधातिधि, वश, दशव्रज और गोशर्य की रक्षा की थी, उसी प्रकार हमारी भी करो। २१ वें में अश्विनीकुमारों से कहा गया है कि जिस तरह तुमने त्रसदस्यु की रक्षा की थी, उसी तरह हमारी भी करो।

६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विद्वय का वत्स ऋषि की रक्षा करना प्रकट कर, उनसे ऋषि को घर देने और उसके शत्रुओं को मारने की प्रार्थना है। २ रे मत्र में 'पञ्च मानुष' शब्द आया है, जिसका अर्थ वही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद किया है। ६ ठे मन्त्र में कहा है कि यह वत्स ऋषि केवल स्तुति द्वारा तुम्हें (अश्विद्वय) को प्राप्त नहीं कर सकता; क्योंकि तुम हवि वाले स्तोताओं के पास जाते हो। ७ वें में वत्स ऋषि का अश्विद्वय के स्तोत्र को जानना प्रकट किया है। ६ वें में अश्विद्वय से कण्व के पुत्र के स्तोत्रों को जानने की प्रार्थना है। १० वें मन्त्र में लिखा है कि हे अश्विद्वय! तुम्हें जिस प्रकार कक्षीवान् ने, व्यश्व ने, दीर्घतमा ने और वेन के पुत्र पृथी ने बुलाया था, उसी प्रकार मैं भी तुम्हारी स्तुति करता हूँ। १४ वें मन्त्र में लिखा है कि हे अश्विनी कुमारों! तुर्वश, यदु और कण्व पुत्रों में वर्तमान रहा यह सोम तुम्हारे लिए दिया गया है। १५ वें में अश्विद्वय से प्रार्थना है कि वे विमद के समान वत्स को भी गृह प्रदान करें।

१० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अश्विद्वय से मनु के यज्ञ को सिक्त करने के समान ही कण्व-पुत्र के यज्ञ को भी सिक्त करने की प्रार्थना है। ५ वें मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि तुम चाहे पूर्व में हो, चाहे पश्चिम में हो और चाहे द्रुह्यु, अनु, तुर्वश और यदु के पास हो, मेरे पास आओ।

११ वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में वत्स ऋषि का अग्नि के मन को अपनी तरफ खींचना प्रकट किया है।

(छठा अष्टक)

१२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिरो गोत्रीय अध्रिगु को और सूर्य को बचाना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

६ वें मन्त्र में इन्द्र का सूर्य की किरणों द्वारा शत्रुओं को जलाना सूचित किया है। २५ वें मन्त्र में इन्द्र के घोड़ों का नाम हरि बतलाया है।

१३ वें सूक्त के १८ वें मन्त्र में त्रिकद्रुक के यज्ञ में देवों द्वारा इन्द्र का मान किया जाना कहा है।

१४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र! यदि मैं तुम्हारी कृपा से गोपति हो जाऊँ, तो इस स्तोता को धन दूँगा। ८ वें मन्त्र में इन्द्र का छिपाई गई गायों को प्रकट कर अङ्गिराओं को देना और चुराने वाले पणियों के नेता बल नामक असुर को मारना सूचित किया है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र का जल के फेन द्वारा नमुचि के मस्तक को काटना बतलाया है।

१५ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का आयु और मनु के लिए ज्योतियों को प्रकाशित करना कहा है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र को शचीपति कहा है।

१७ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र को शिरस्त्राण वाला बताया है। १३ वें मन्त्र में इन्द्र को शृङ्गवृष नामक ऋषि का पुत्र कहा है।

१६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सोभरि स्वयं अपने को सम्बोधन करके[1] इन्द्र की स्तुति करने को कहते हैं। २३ वें मन्त्र में असुर शब्द सूर्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

(इस अष्टक में यह असुर शब्द आठ बार आया है। इनमें ५ बार देवताओं के लिए, १ बार मेघ या परक्रम के लिए और २ बार बलवान् शत्रु के लिए इसका प्रयोग हुआ है।)

३२ वें मन्त्र में सोभरि लोगों का अग्नि को प्राप्त करना और त्रसदस्यु का अग्नि की स्तुति करना कहा है। ३६ वें में पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु का अपने (सोभरि) को पचास कन्यायें देना बताया है। ३७ वें मन्त्र में श्याम-वर्ण बैलों वाले और २१० गायों के स्वामी त्रसदस्यु के दान का उल्लेख है।

२० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मरुतों से सोभरि के यज्ञ में आने की प्रार्थना है। ८ वें में सोभरि लोगों की स्तुति से गो-बन्धु मरुद्गणों की वीणा के प्रकट होने का उल्लेख है।

२६ वें मन्त्र में ओषधि से रोग-चिकित्सा का उल्लेख है।

---

१. इसी प्रकार अन्य अनेक सूक्त कर्त्ता ऋषियों ने अपने सूक्तों में अपने को नाम निर्देश पूर्वक संबोधित किया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२१ वें सूक्त के १७ वें मन्त्र में कहा गया है कि क्या मुभ (सोभरि) को यह दान इन्द्र ने दिया है, या सरस्वती ने दिया है, या चित्र (इस नाम के यजमान राजा) ने दिया है ? १८ वें में राजा चित्र का सरस्वती के तीर पर रहने वाले राजाओं को धन देकर प्रसन्न करना कहा है ।

२२ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अश्विद्वय का त्रसदस्यु के पुत्र तृक्षि को धन देना कहा है । १० वें मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि जिनसे तुमने पक्थ की और अध्रिगु की रक्षा की थी और जिस प्रकार तुमने सोम पान द्वारा बभ्रु को प्रसन्न किया था उन्हीं के साथ उसी प्रकार अति शीघ्र हमारे पास आओ और रोगी को ओषधि प्रदान करो । १५ वें मन्त्र में सोभरि, अपने पिता के समान ही, अपना अश्विद्वय को बुलाना प्रकट करते हैं ।

२३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में (व्यश्व-पुत्र) विश्वमना ऋषि अपने को यजमान के लिए अग्नि की स्तुति करने का कहते हैं । १६ वें मन्त्र में अग्नि से कहा गया है कि धनी बनने के लिए व्यश्व ऋषि ने तुम्हें प्रसन्न किया था । हम भी धन के लिए अग्नि को प्रज्वलित करते हैं । १७ वें मन्त्र में कवि के पुत्र उशना का मनु के घर में अग्नि को होता के रूपमें बिठाना प्रकट किया है । २३ वें में व्यश्व के समान अपना भी अग्नि कीसेवा करना कहा है । व्यश्व-पुत्र विश्वमना ऋषि अपने को स्थूलयूप ऋषि केसमान अग्नि की स्तुति करने को कहते हैं ।

२४ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र से विश्वमना के सारे स्तोत्रों में उपस्थिति होने की प्रार्थना है । १४ वें में इन्द्र से व्यश्व ऋषि के पुत्र की स्तुति सुनने की प्रार्थना है । २२ वें मन्त्र में व्यश्व के समान ही इन्द्र की स्तुति करने का आदेश है । २३ वें मन्त्र में व्यश्व के पुत्र विश्वमना को कहा गया है कि इन्द्र ही मनुष्य का दसवाँ प्राण[1] है । २५ वें में इन्द्र का कुत्स के शत्रुओं को मारना प्रकट किया है । २८ वें में वरु राजा से कहा गया है कि जिस प्रकार पहले तुमने अपने पितर सुषमा के लिए याचकों को धन दिया था, उसी प्रकार इस समय व्यश्वों (स्तोत्र-कर्ताओं) को भी दो । २९ वें में वरु की दक्षिणा के व्यश्व-पुत्रों के पास आने की प्रार्थना है । ३० वें में वरु राजा के स्थान को पूछने वालों के लिए उस (वरु) का गोमती के तीर पर रहना सूचित किया है ।

२५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में मरुतों से दिन-रात अपनी नौका की

(१) तैत्तरीय ब्राह्मण, १, ३, ७ ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रक्षा करने की प्रार्थना है। १२ वें में विष्णु को युद्ध कर्ता कहा है। २२ वें में उक्ष-गोत्रीय सुषमा के पुत्र वरु के दान और रथ का उल्लेख है।

२६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में वरु से कहा गया है कि तुम अश्विद्वय से कहो कि जैसे तुम सुषमा को धन देने को आते थे, वैसे ही आओ। ६ वें में अपना अश्विद्वय को व्यश्व के समान ही बुलाना प्रकट किया है। ११ वें में वरुण, मित्र और अर्यमा से व्यश्व का आह्वान सुनने की प्रार्थना है। २१ वें और २२ वें मन्त्रों में वायु को त्वष्टा का जामाता कहा है।

२७ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में समान मन या क्रोध वाले विश्वेदेवों से अपने को और अपने पुत्रों को धन देने की प्रार्थना की है। २१ वें में देवों का, स्तोता मनु के लिए, तीनों काल में धन धारण करना प्रकट किया है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में त्वष्टा को लोहे के कुठार को धारण करने वाला कहा है। ७ वें मन्त्र में विष्णु का तीन पैरों से तीनों लोकों को व्याप्त करना सूचित किया है। १० वें मन्त्र में साम मन्त्र के उच्चारण का उल्लेख है।

३० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मनु, देवों की संख्या ३३ बतलाते हैं। ३ रे मन्त्र में प्रार्थना है कि पिता मनु से आये मार्ग से हमें भ्रष्ट न करना।

३१ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में कहा है कि यज्ञ करने वाले दम्पत्ती सन्तान लाभ के लिए अपनी इंद्रियों का संयोग करते हैं।

३२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का सृविन्द, अनर्शनि, पिप्रु, दास और अहीशुव को मारना कहा है। १६ वें मन्त्र में कहा है कि निर्धन सोम-पान नहीं कर सकता। २६ वें मन्त्र में इन्द्र का वृत्र, और्णनाभ और अहीशुव को मारना प्रकट किया है।

३३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र से कण्वों के लिए अन्न माँगा गया है। ४ थे मन्त्र में मेध्यातिथि से, सोम-पान से मत्त होकर इन्द्र की स्तुति करने को कहा गया है। १७ वें मन्त्र में इन्द्र का कथन[1] प्रकट किया है कि स्त्री के मन का शासन असंभव है और उसकी बुद्धि अल्प होती है। १९ वें में इन्द्र का प्रायोगि के प्रति कथन है कि तुम नीचे देखा करो ऊपर नहीं। पैरों को

१. मेध्यातिथि का यजमान प्रायोगी जिस समय पुरुष से स्त्री हो गया था, इन्द्र की यह उक्ति उस समय की है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सिकोड़कर रक्खा करो। तुम्हारे ओठ और कमर का नीचे का भाग कोई न देख सके; क्योंकि तुम स्तोत्र कर्ता होकर भी स्त्री हो गये हो।

३४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्यु-लोक के शासक इन्द्र से कण्वों की स्तुति सुनने की प्रार्थना है। ४ थे मन्त्र में भी कण्वों का द्यु-लोक के शासक इन्द्र को बुलाने का उल्लेख है। १८ वें में पारावत का रथ के लिए घोड़े देना कहा है। (इस सूक्त के १ से १५ तक के मन्त्रों का चतुर्थ पाद एक सा ही है।)

३५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अश्विद्वय से, ३३ देवताओं, मरुतों, भृगुओं, उषा और सूर्य के साथ, सोम-पान करने की प्रार्थना है। ५ वें में कहा गया है कि जिस प्रकार युवक लोग कन्याओं की बुलाहट को ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार हे अश्विद्वय! तुम भी इस यज्ञ में स्तोत्र को ग्रहण करो। १८ वें मन्त्र में अश्विद्वय से धेनु और विशों (वैश्यों) को जीतने की प्रार्थना है। १९ वें मन्त्र में अश्विद्वय से, अत्रि की स्तुति सुनने के समान, अपनी (श्यावाश्व की) स्तुति भी सुनने की प्रार्थना है। २० वें और २१ वें मन्त्रों में अश्विद्वय से श्यावाश्व की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के १ से ३ मन्त्रों का चतुर्थ पादएक सा ही है। इसी प्रकार ४ से ६ तक के, ७ से ९ तक के, १० से १२ तक के, १३ से १५ तक के, १६ से १८ तक के, १९ से २१ तक के और २२ से २४ तक के मन्त्रों के चतुर्थ पाद भी क्रमशः एक से हैं।)

३६ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र से अत्रि की स्तुति के समान ही श्यावाश्व की स्तुति सुनने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के १ से ६ मन्त्रों तक के प्रथम भाग (या पाद) ही भिन्न हैं बाकी सारे भाग एक से हैं।)

३७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में भी इन्द्र से अत्रि की स्तुति के समान श्यावाश्व की स्तुति सुनने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के भी १ से ६ मन्त्रों का पहला पाद ही भिन्न है, बाकी तीनों पाद एक से हैं।)

३८ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र और अग्नि से श्यावाश्व के ऋत्विगों के आह्वान को सुनने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के मन्त्र १ से ३, ४ से ६ और ७ से ९ तक के मन्त्रों के चौथे पाद क्रमशः समान हैं।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३९ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में अग्नि को सात नदियों के तट पर रहने वाले सात मनुष्यों तथा तीनों लोकों में व्याप्त बतलाकर, उसका (यौवनाश्व के पुत्र) मान्धाता के लिए अधिक दस्युओं को मारना प्रकट किया है।

(इस सूक्त के सारे ही मन्त्रों का चतुर्थपाद एक है।)

४० वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कवि (क्रान्त कर्मा) का तथा ४ थे और ५ वें मन्त्रों में नाभाक ऋषि का उल्लेख है। ६ ठें में इन्द्र से दास को मारने की प्रार्थना और उसके धन को बाँटने की इच्छा का उल्लेख है। १२ वें मन्त्र में कहा गया है कि मैंने इन्द्र और अग्नि के लिए पिता मान्धाता और अङ्गिरा के समान नवीन स्तुतियाँ उच्चारण की हैं।

(इस सूक्त के पहले ११ मन्त्रों का चतुर्थपाद ३९वें सूक्त के मन्त्रों के चतुर्थ-पाद के समान ही है। इसके १२ वें मन्त्र में त्रिधातु-गृह का उल्लेख है।)

४१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में नाभाक, अपना स्तोत्रों द्वारा पितरों की स्तुति करना प्रकट करता है। (इस सूक्त के दसों मन्त्रों का चतुर्थ पाद भी ३९ वें सूक्त के मन्त्रों के चौथे पाद के समान ही है।)

४२ वें सूक्त के ४ से ६ मन्त्रों का चतुर्थपाद भी वही है।

४३ वें सूक्त के १३ वें मन्त्र में भृगु और मनु के समान ही अपना अग्नि को बुलाना कहा है। २७ वें मन्त्र में मनुष्यों का अङ्गिराओं में श्रेष्ठ अग्नि का मनु के समान ही प्रज्वलित करना दिखाया है।

४५ वें सूक्त के ४ थे और ५ वें मन्त्र में इन्द्र और उनकी माता का संवाद है। १४ वें मन्त्र में इन्द्र को वणिक् कहा है। १७ वें मन्त्र में कहा है कि हे इन्द्र ! तुम बहरे नहीं हो, इसी से हम तुम्हें दूर से बुलाते हैं। २६ वें मन्त्र में इन्द्र का सहस्रबाहु को मारना कहा है। २७ वें में इन्द्र का तुर्वश और यदु के लिये युद्ध में अह्नवाय्य को हराना कहा है। ३० वें मन्त्र में इन्द्र का त्रिशोक ऋषि के लिए मेघ को भेदन करना बतलाया है। ३८ वें मन्त्र में सोम का एवार नामक व्यक्ति को धन न देकर धूर्त के समान इन्द्र के पास जाना कहा है।

(इस सूक्त के पिछले ४० से ४२ तक के मन्त्रों का चतुर्थपाद समान है।)

४६ वें सूक्त के २१ वें मन्त्र में अश्व के पुत्र वश का कन्या के पुत्र पृथु-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रवा से धन पाना सूचित किया है तथा वश को बुलाया है। २२ वें मन्त्र में वश अपना ७० हजार घोड़ों, २ हज़ार ऊँटों, १ हज़ार काले रंग की घोड़ियों और तीन स्थानों पर उज्ज्वल रंग वाली १० हज़ार गायों का पाना प्रकट करता है।

२३ वें मन्त्र में १० काले घोड़ों का रथ को खींचना कहा है। २४ वें में उपर्युक्त दान का कर्त्ता कन्या-पुत्र पृथुश्रवा को बतलाया है और उसका सोने का रथ देना भी कहा है। २६ वें में पृथुश्रवा का आगमन सूचित किया है। २७ वें में पृथुश्रवा का दान के लिए अपने कर्माध्यक्ष अरट्व, अक्ष, नहुष और सुकृत्व को आज्ञा देना सूचित किया है। २८ वें मन्त्र में लिखा है कि वायु ने जो उचथ्य और वपु नाम के राजाओं से भी बड़े राज्य का राजा है, घोड़ों, ऊँटों और कुत्तों पर लाद कर यह अन्न भेजा है। ३२ वें मन्त्र में अपने को ब्राह्मण बतलाकर अपना बल्लूथ नामक दास से सौ गायों और घोड़ों का पाना कहा है। ३३ वें मन्त्र में राजा पृथुश्रवा के दान के साथ दी गई कन्या का अश्व के पुत्र वश के सामने लाया जाना कहा है।

४७ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में योद्धाओं का कवच पहनना सूचित किया है। १३ वें में आप्त्यत्रित आदित्यों से रक्षा की प्रार्थना करता है। १४ वें और १५ वें में आप्त्यत्रित उषा से दुःस्वप्न का अमङ्गल को दूर करने की प्रार्थना करता है। पिछले मन्त्र में स्वर्णकार और मालाकार का उल्लेख भी है। १६ वें मन्त्र में भी आप्त्यत्रित की दुःस्वप्न के अमङ्गल दूर करने की प्रार्थना है। १७ वें मन्त्र में कहा गया है कि जैसे यज्ञ में पशु का हृदय, खुर, सींग सब क्रम से दिये जाते हैं, और जिस प्रकार ऋण क्रम से दिया जाता है, उसी प्रकार हम आप्त्यत्रित के सारे दुःस्वप्न क्रम से दूर करेंगे।

(इस सूक्त के मन्त्रों का अन्तिम पाद एकसा ही है।)

४८ वें सूक्त के २ रे से १५ वें मन्त्र तक सोम की स्तुति है।

४९ वें सूक्त के १५ वें मन्त्र में अग्नि का निवास वन की अरणिद्वय में कहा है।

५१ वें सूक्त के सारे ही मन्त्रों का पिछला भाग समान है।

५२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में पिता मनु का इन्द्र को पाने के उपायों को प्राप्त करना कहा है। ३ रे में इन्द्र का अङ्गिराओं के लिये गायों को प्रकट करना बतलाकर, अपना इन्द्र के उस बल की स्तुति करना कहा है। ९ वें मन्त्र में पशुओं की तरह मनुष्यों का भी जौ ग्रहण करना बताया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

५३वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में शर्यणावत् (कुरुक्षेत्र के निकट के तालाब ?), सुषोमा (सोहान नदी) और आर्जकीया (व्यास नदी) के नाम आये हैं।

५५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र से कहा गया है कि हम तुम्हें भृति (वेतन) के समान ही यह नवीन स्तोत्र प्रदान करते हैं। १५ वें सूक्त में कलि ऋषि के पुत्र का उल्लेख है।

५६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आदित्यों को क्षत्रिय कहा है।

५७ वें सूक्त के १५ वें मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अपना इन्द्रोत, ऋक्ष के पुत्र और अश्वमेध के पुत्र से दो-दो घोड़े पाना कहता है। १६ वें और १७ वें मन्त्रों में वही अतिथिग्व के पुत्र (इन्द्रोत), ऋक्ष के पुत्र और अश्वमेध के पुत्र से घोड़े पाना बतलाता है।

५८ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में आदित्य के २१ स्थानों (१२ महीने, ५ ऋतुओं, ३ लोकों और १ आदित्य) का उल्लेख है। ८ वें मन्त्र में प्रिय-मेध-वंशवालों से कहा गया है कि पुत्रों के समान ही इन्द्र की पूजा करो। ९ वें मन्त्र में गर्गरा (युद्ध के बाजे) का, गोधा (हस्तघ्ननाम के बाजे) का और पिङ्गल वर्ण की ज्या का शब्द करना (बजना) प्रकट किया है। १८ वें मन्त्र में प्रिय-मेध-वंशियों का कुश फैलाना और हव्य-स्थापन करना बतलाया है।

६० वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में पुरुमीढ को रक्षा के लिए अग्नि की स्तुति करने को और सुदिति के लिये घर की याचना करने को कहा है।

६२ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अश्विद्वय से अत्रि की रक्षा करने को कहा है। ७ वें और ८ वें मन्त्रों में भी अत्रि की रक्षा का उल्लेख है। ९ वें में सप्तवध्रि ऋषि का अग्नि की धारा को संदूक से निकालना और फिर उसी में सुलाना कहा है।

(इस सूक्त के मन्त्रों का अन्तिम भाग एक ही है।)

६३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का ऋक्ष के पुत्र श्रुतर्वा को बढ़ाना कहा है। ११ वें में अग्नि का गोपवन को अन्न देना और उस (अग्नि) से गोपवन के आह्वान को सुनने को कहा है। १३ वें में स्तोत्र कर्त्ता कहता है कि मैं बुलाए जाने पर ऋक्ष के पुत्र श्रुतर्वा के दिये लोमवाले ४ घोड़ों के सिरों को धोता हूँ। १४ वें में अश्विद्वय की भेजी ४ नावों ने जिस प्रकार तुग्र

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के पुत्र भुज्यु को ढोया था, उसी प्रकार श्रुतर्वा के ४ घोड़ों का, रथ-द्वारा, अन्न को ढोना बताया है। १५ वें मन्त्र में परुष्णी (रावी) से श्रुतर्वा के अश्व-दान की प्रशंसा की गई है।

६६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का जन्म लेते ही माता से उग्र और प्रसिद्ध व्यक्तियों के विषय में पूछना कहा है, २ रे में माता का ऊर्णनाभ और अहीशुव को बतलाना, प्रकट किया है। ७ वें में इन्द्र के बाण को सौ फाल और हजार परों वाला कहा है। ११ वें मन्त्र में इन्द्र के बाण को सोने का वतलाया है।

६७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र से गाय, घोड़े अभ्यञ्जन (तैल) और गहने माँगे हैं। ३ रे मन्त्र में इन्द्र से कान के आभूषण माँगे हैं। ९ वें में इन्द्र से कहा है कि मेरा मन जौ, गाय, सुवर्ण और घोड़े के लिए तुम्हारे पास जाता है। १० वें में इन्द्र से कहा गया है कि मैं तुम्हारी आशा से ही दात्र (हँसिया) लिये हूँ, अतः पहले काटे हुए जौ की मुट्ठी से आशा को पूर्ण करो।

६८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विश्वजित् और उद्भिद् सोम-यागों के नाम और विप्र तथा काव्य शब्द आये हैं। यहाँ पर काव्य का अथ स्तोत्र माना गया है। ९ वें मन्त्र में लिखा है कि देवों की दुर्मति तुम्हारे घर में न घुसे।

६९ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में एकद्यु ऋषि का देवों और उनकी पत्नियों को तृप्त करना बताया है।

७१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में लिखा है कि हे इन्द्र! जल्दी नशा उत्पन्न करने वाला सोम तैयार है। आओ, पियो और मत्त होकर उसकी सेवा करो।

(इस सूक्त के पिछले ७ से ९ वें मन्त्र तक का पिछला भाग एक ही है।)

७४ वें सूक्त के ३ रे से ५ वें मन्त्रों तक में कृष्ण ऋषि का सोम-पान के लिए अश्विद्वय को बुलाना और उनसे घर देने को कहना कहा है। ७ वें मन्त्र में अश्विद्वय से अपने रथ में रासभ को जोतने की प्रार्थना है। ८ वें मन्त्र में त्रि-वन्धुर (त्रि-फलक वाले) और त्रिवृता (तीन कौनों वाले) रथ का उल्लेख है।

(इस सूक्त के सारे ही मन्त्रों का पिछला भाग एक है।)

७५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विद्वय का दक्ष की स्तुति के समय उपस्थित होना, और उनका स्तोता विश्वक द्वारा संतान के लिए बुलाया जाना कहा है। २ रे मन्त्र में विश्वक का विमना ऋषि के समान ही अश्विद्वय का आह्वान करना कहा है। ३ रे मन्त्र में विश्वक अश्विद्वय से कहता है कि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमने (मेरे पुत्र) विष्णवापु की धनाभिलाषा पूर्ण की है। विश्वक तुम्हें संतान के लिए बुलाता है। ४ थे में विश्वक अपने समान ही अपने पुत्र विष्ण्वाथु की स्तुति की प्रशंसा करता है।

(इस सूक्त के पाँचों मन्त्रों का चतुर्थपाद एक है।)

७६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्युम्नीक ऋषि अपने को अश्विद्वय का स्तोता कहकर उनसे प्रार्थना करता है कि जिस प्रकार गौर मृग तालाब में जल-पान करता है, उसी प्रकार तुम भी सोम-पान करो।

७७ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र से उचथ्य के स्तोत्र को जानने की प्रार्थना है।

७८ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र के लिए साम-गान करने को कहा है।

८० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कन्या (अपाला) का, (अपने चर्म-रोग के विनाश के लिए), स्नान को जाते हुए, मार्ग से इन्द्र के लिए सोम लाना सूचित किया है। २ रे मन्त्र में अपाला इन्द्र से कहती है कि तुम भुने जौ के सत्तू अपूप (पुरोडाश) और स्तुति से युक्त (मेरे) दाँतों द्वारा निकाले सोम-रस का पान करो। ४ थे मन्त्र में अपाला कहती है कि मैं पति द्वारा छोड़ी जाकर यहाँ आई हूँ। मैं इन्द्र के साथ मिलूंगी, ५ वें और ६ ठे मन्त्रों में अपाला कहती है कि हे इन्द्र! मेरे पिता (अत्रि) के (गंजे) मस्तक और खेत को तथा मेरे उदर के पास के स्थान (गर्भाशय) को उर्वर (उत्पादन के योग्य) बनाओ।

८१ वें सूक्त के २५ वें मन्त्र में श्रुतकक्ष का घोड़ा पाने के लिये गान करना कहा है।

८२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में वृत्र को मारने वाले इन्द्र का ९९ पुरियों को विनष्ट करना और मेघ को मारना बतलाया है। १४ वें में देवों का मृग रूपी वृत्र से डर कर भागना कहा गया है।

(इस सूक्त के २५ से २७ वें मन्त्रों तक का, अन्तिम शब्दों को छोड़कर, पिछला भाग एकसा है। २८ से ३० तक के मन्त्रों का पिछला भाग एक है। इसी प्रकार ३१ से ३३ तक के मन्त्रों का अन्तिम भाग भी समान है।)

८३ वें सूक्त के ३ रे और ९ वें मन्त्र का अन्तिम (तीसरा) पाद एक है। इसी प्रकार १० से १२ तक का भी पिछला (तीसरा) भाग समान है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में श्येन-रूपिणी गायत्री का द्यु-लोक से सोम लाना सूचित किया है। ७ वें मन्त्र में साम-गान द्वारा शुद्ध (वृत्र-वधोत्पन्न ब्रह्म-हत्या से मुक्त) इन्द्र की स्तुति करना कहा है।

८५ वें सुक्त के १ ले मन्त्र में सात नदियों का उल्लेख है। २ रे में अकेले इन्द्र का इकट्ठे हुए २१ पर्वतों के शिखरों को तोड़ना बतलाया है। ८ वें में ६३ मरुतों का उल्लेख है। १३ वें मन्त्र में लिखा है कि कृष्ण नाम का असुर दस हज़ार सेना के साथ अंशुमती नदी के पर तीर रहता था। इन्द्र ने वुद्धि के द्वारा उस शब्द करने वाले असुर को पाकर, मनुष्यों के कल्याण के लिए, उसकी सेना का वध किया। १४ वें में इन्द्र की उक्ति है कि अंशुमती के तीर के छिपे स्थान के विस्तृत प्रदेश में फिरने वाले और सूर्य की तरह रहने वाले शीघ्र-गामी कृष्ण को मैंने देखा है। हे मरुतों! तुम युद्ध में उसे मारो। १५ वें में लिखा है कि शीघ्र-गामी कृष्ण अंशुमती नदी के तीर पर दीप्त होकर शरीर धारण करता है। इन्द्र ने बृहस्पति की सहायता से कृष्ण और उसकी सेना को मार डाला। १६ वें मन्त्र में इन्द्र का जन्मते ही सात शत्रुओं (१ कृष्ण, २ वृत्र, ३ नमुचि, ४ शम्बर, ५ शुष्ण, ६ पणि, और ७ मेघ) का शत्रु होना प्रकट किया है। १७ वें में इन्द्र का कुत्स के लिए शुष्ण के बल को नष्ट कर उसे मारना बताया है।

८६ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में रेभ नामक ऋषियों का इन्द्र की स्तुति करना कहा है। १२ वें मन्त्र में कश्यप-गोत्रीय रेभ लोगों का मेंढे के समान उपकर्ता इन्द्र को नमस्कार करना कहा है।

८९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र के विषय में शङ्का करके कहा है कि (भार्गव) नेम ऋषि इन्द्र का होना नहीं मानते। इन्द्र को किसी ने नहीं देखा है। हम किसकी स्तुति करें? ४ थे में इन्द्र का, स्तोता नेम के पास जाकर, अपना अस्तित्व प्रकट करना बताया है। ६ठे मन्त्र में इन्द्र का शत्रु पारावत के धन को ऋषि-बन्धु शरभ के लिए प्रकट करना सूचित किया है। ८ वें मन्त्र में सुपर्ण (गरुड़) का लोहे से बने नगर के पार जाना और स्वर्ग से इन्द्र के लिए सोम लाना कहा है।

९० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में अश्विद्वय से,—जमदग्नि से स्तुत होकर आने की प्रार्थना है। १५ वें और १६ वें मन्त्रों में गो-बध का निषेध है।

९१ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अपना और्व, भृगु और अप्नवान् के समान ही अग्नि को बुलाना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

९२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अग्नि को आर्यों का वर्धन करने वाला कहा है। २ रे में दिवोदास के अग्नि को बल पूर्वक बुलाने से अग्नि का हव्य-वहन न करना सूचित किया है। १४ वें मन्त्र में अग्नि को सोभरि की सुन्दर स्तुति के पास आने को कहा गया है।

(इस अष्टम मण्डल के ४८ वें सूक्त के बाद के ११ सूक्त बालखिल्य सूक्त कहाते हैं। पुराणों में ब्रह्मा के रोमों से इनकी उत्पत्ति, और इनकी संख्या साठ हज़ार कही गई है। इनका शरीर अंगूठे के अगाड़ी के पोर जितना माना गया है। परन्तु सायणाचार्य के ऋग्वेद भाष्य में ये सूक्त छोड़ दिये गये हैं। सायण ने अपने ऐतरेय ब्राह्मण की टीका में इनकी संख्या ८ ही लिखी है।

(ऋग्वेद के १०१७ सूक्तों में इन ११ सूक्तों की संख्या को जोड़ देने से, उसके सूक्तों की कुल संख्या १०२८ हो जाती है।)

आगे ११ बालखिल्य सूक्तों से कुछ अवतरण दिये जाते हैं :—

१ ले सूक्त के ४ थे मन्त्र में दान देने वाली क्षुद्रा का उल्लेख है। ५ वें में इन्द्र का कण्वों को दान देना प्रकट किया है। ९ वें में इन्द्र का धन के विषय में मेध्यातिथि और नीपातिथि की रक्षा करना बतलाया है। १० वें मन्त्र में इन्द्र का कण्व, त्रसदस्यु पक्थ, दशव्रज, गोशर्य, और ऋजिश्वा को गायें और सुवर्ण देना सूचित किया है।

२ रे सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र से पुरु के पुत्र के बुलाने को सन्मान देने की प्रार्थना है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र का धन के लिए, एतश और दशव्रज के साथ, वश की रक्षा करना कहा है।

३ रे सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का सांवरणि (सावर्णि) मनु के लिए और मेध्यातिथि और नीपातिथि के लिए सोम का पान करना बतलाया है। २ रे मन्त्र में पार्षद्वाण ऋषि का वृद्ध और सोये हुए प्रसकण्व को ऊपर बिठाना और इन्द्र का दस्युओं के लिए वृक-स्वरूप ऋषि को रक्षित रख कर, हजार गायों को बचाना कहा है। ८ वें में इन्द्र का शुष्ण को मारते हुए कुएँको भरना सूचित किया है। ९ वें मन्त्र में सारे ही आर्यों और दासों को इन्द्र के स्तोता कहकर इन्द्र का पवीरु के पास आना सूचित किया है।

४ थे सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का विवस्वान् मनु के सोम का पान करना और त्रित के मन की रक्षा करना कह कर, उसका स्तोता आयु के साथ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रमत्त होना कहा है। २ रे में मातरिश्वा (वायु) के पृषध्र (दही मिले घी) का अभिषव करने पर इन्द्र का प्रमत्त होना और दशशिप्र और दशोण्य के सोम का पान करना बताया है। ३ रे मन्त्र में विष्णु के (वामनावतार) के तीन चरण-निक्षेपों का उल्लेख है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र का कण्व का आह्वान सुनना सूचित किया है।

५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का आयु, कुत्स और अतिथिग्व की रक्षा करना कहा है।

६ ठे सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का संवर्त और कृश पर प्रसन्न होना बतलाया है। ८ वें में इन्द्र का प्रस्कण्व को बहुत-सा धन देना कहा है।

७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र का अर्थ १०० वेणु, १०० शुन (श्वा), १०० म्लात चर्म, १०० बल्बजस्तुक और ४०० अरुपी होता है (परन्तु इन सब का तात्पर्य गूढ़ ही रहता है।')

८ वें सूक्त के १ ले और २ रे मन्त्रों में इन्द्र को दस्युओं के लिए वृक (भेड़िया) लिखा है। ३ रे मन्त्र में इन्द्र से १०० गधे, १०० भेड़ें और १०० दास मांगे गये हैं।

९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में देवताओं की संख्या तेंतीस कही है।

११ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कृश ऋषि का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र में सात बहनों का यज्ञ में दानवाली होना प्रकट किया है।

(यहाँ पर आठवाँ मण्डल समाप्त होता है।)

नवम मण्डल के १ ले सूक्त के २ रे मन्त्र में सोम का लोहे से पिष्ट होकर द्रुणा (३२ सेर के कलश) में भरा जाना प्रकट किया है।

५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में भारती, सरस्वती और इला का आह्वान है।

११ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अथर्वा ऋषियों का सोम-रस को गाय के दूध में संस्कृत करना कहा है।

३२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में त्रित का पत्थर से सोम-रस निकालना बतलाया है। ५ वें में स्त्री का जार की स्तुति करने के समान शब्दों का सोम की स्तुति करना कहा है।

३३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सोम को पिङ्गल-वर्ण बताया है।

३४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में त्रित ऋषि के हरे वर्ण के सोम का उनके और इन्द्र के लिए तैयार किया जाना सूचित किया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अत्रि का हरे रंग वाले सोम को पत्थर से पीसना प्रकट किया है। ४ थे मन्त्र में लिखा है कि सोम मनुष्यों के बीच श्येन (बाज) के समान बैठते हैं और जैसे स्त्री के पास उसका जार जाता है, वैसे ही ये भी जाते हैं।

४३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में मेध्यातिथि के लिए सोम का कलश में भरा जाना कहा है। ६ ठे मन्त्र में मेध्यातिथि सोम से पुत्र कामना करते हैं।

(सप्तम अष्टक)

४४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अयास्य का देवों की पूजन के लिए जाना कहा है।

४६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पिता द्वारा अलंकृताक न्या का विवाह में दिया जाना प्रकट होता है।

४८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में सुपर्ण पक्षी का स्वर्ग से सोम को लाना कहा है।

५५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अन्न और धन के साथ जौ देने की प्रार्थना है।

५६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कन्या के अपने जार को बुलाने के समान दसों उंगलियों का सोम को साफ करना कहा है।

५८ वें सूक्त के ३ रे और ४ थे मन्त्रों में ध्वस्र और पुरुषन्ति राजाओं से अपने को सहस्र धन और तीस हजार वस्त्रों का मिलना कहा है।

(इस सूक्त के चारों मन्त्रों का अन्तिम पाद एकसा है।)

६१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सोम का ९९ शत्रु-पुरियों को नष्ट करना सूचित किया है। २ रे मन्त्र में सोम का शम्बर, तुर्वश और यदु को दिवोदास राजा के वश में करना कहा है।

६२ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में सोम से अङ्गिराओं के लिए घी और दूध बरसाने की प्रार्थना है।

६३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में सोम को बभ्रु (पिङ्गल) वर्ण कहा है।

६५ वें सूक्त के २२ वें मन्त्र में शर्यणावत् (कुरुक्षेत्र के पास के तालाब ?) में अभिषुत सोम से ईप्सित फल की याचना की है। २३ वें मन्त्र में आर्जीक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(देश या व्यास नदी ?), कृत्व (देश विशेष), पस्त्य (सरस्वती आदि नदियों), और पंचजनों में प्रस्तुत सोम से अभिमत फल मांगा है। २५ वें मन्त्र में जमदग्नि द्वारा स्तुत और गो-चर्म पर प्रेरित हरे रंग के सोम का कलश में जाना कहा है।

(इस सूक्त के २८ से ३० मन्त्रों तक का अन्तिम-पाद समान है।)

६६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सोम दो के टेढ़े पत्ते होना कहा है। ६ ठे मन्त्र में सात नदियों का उल्लेख है। ९ वें, ११ वें और २८ वें मन्त्रों में सोम-रस का मेष-लोम के बने वस्त्र में छानना बतलाया है। २० वें मन्त्र में 'पांचजन्य' शब्द पञ्चजनों के लिए आया है।

६७ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में सोम से अपने लिए कन्या मांगी गई है। ३० वें मन्त्र में परशु का और ३२ वें में सरस्वती (देवी) का उल्लेख है।

६८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सोम को हरित वर्ण बताया है। ४ थे में सोम का जौ के सत्तू से मिलाया जाना, और ७ वें में सोम का दसों उंगलियों से मलकर मेष लोम के छनने से छाना जाना सूचित किया है।

७० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सोम के लिए २१ गायों का दूध देना कहा है। ७ वें मन्त्र में सोम के शोधन के लिए मेष-चर्म और गो-चर्म का उल्लेख है।

७१ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में गाय को देख कर सांढ के शब्द करने के समान स्तुति सुनकर सोम का शब्द करना कहा है।

७३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में यज्ञ की चार थालियां कही हैं। इस मन्त्र में असुर सोम का विशेषण है।

(इस अष्टक में असुर शब्द ६ बार आया है। ३ बार सोम के लिए, १ बार देवों के लिए, १ बार पुरोहित के लिए और १ बार यज्ञ के लिए।)

७९ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में लिखा है कि सोम को पत्थरों से कूटकर गो-चर्म पर जल में दोहते हैं।

८५ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में वनों का यज्ञ में सोभाभिषव करना कहा है।

८६ वें सूक्त के ३७ वें मन्त्र में घोड़ियों का रथ में जोतना कहा है।

९१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में नहुष वंशियों का सोमाभिपव करना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

९२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सात-ऋषियों (भरद्वाज, कश्यप, गौतम, अत्रि, विश्वामित्र, जमदग्नि और वसिष्ठ) का उल्लेख है। ४ थे मन्त्र में ३३ देवों का स्वर्ग में रहना बताया है। ५ वें मन्त्र में सोम का मनु की रक्षा करना कहा है।

९६ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में सोम को देवों का ब्रह्मा, कवियों का शब्द विन्यासक, ब्राह्मणों का ऋषि, चौपायों का महिष, पक्षियों का श्येन और अस्त्रों का स्वधिति (कुठार) कहा है। २२ वें मन्त्र में लम्पट (पुरुष) का (अपने) मित्र की स्त्री के पास जाने के समान, सोम का गाते हुए कलश में जाना सूचित किया है।

९७ वें सूक्त के ३९ वें मन्त्र में स्तोता अपने पितरों (अङ्गिराओं) का, पणियों द्वारा चुराई, गायों को, सोम के प्रभाव से, लाना प्रकट करता है। ५१ वें मन्त्र में सोम से जमदग्नि के समान आर्ष धन देने की प्रार्थना है। ५३ वें मन्त्र में श्रुत-तीर्थ शब्द यज्ञ के लिए आया है।

९८ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में दुष्ट हुरश्चितों का उल्लेख है।

१०१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कुत्ते को सोम से दूर रखने की सलाह है। ११ वें में सोम का गो-चर्म पर तैयार करना कहा है। १३ वें में सोम से कुत्ते को मारने की प्रार्थना है और स्तोताओं से, भृगुओं का मख को मारने के समान, कुत्ते को मारने को कहा गया है। १४ वें मन्त्र में, जार के व्यभिचारिणी स्त्री के पास जाने के समान, सोम का कलश में जाना सूचित किया है।

१०२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में 'सप्तमातर' शब्द आया है। इसका अर्थ सात नदियाँ, या ७ छन्द किया जाता है।

१०३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में नौकर और उसके वेतन का उल्लेख है।

१०४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र से बच्चों को गहने पहनाने का रिवाज प्रकट होता है।

१०७ वें सूक्त के १८ वें मन्त्र में सोम का काठ के बरतन में दूध से मिश्रित करना कहा है।

१०८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सोम पीकर इन्द्र का वृष की तरह आचरण करना कहा है।

११० वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में सूर्योदय के पूर्व ही वसुरुचों का सोम की स्तुति करना कहा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

११२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वढई का काष्ठ, वैद्य का रोग और ब्राह्मण का यज्ञ-कर्ता यजमान को चाहना लिखा है। ३ रे मन्त्र में लिखा है कि मैं स्तोता हूँ, पुत्र वैद्य है, और कन्या (या माता) नाज पीसने वाली है। हम अनेक काम करते हुए धनाभिलाषी हैं। ४ थे मन्त्र में लिखा है कि घोड़ा रथ की, उपमन्त्री (दरबारी) हास-परिहास की और पुरुषेन्द्रिय स्त्री की रोम वाली[1] इन्द्रिय की इच्छा करती है।

(११२ वें सूक्त के चारों मन्त्रों के अन्तिम पाद समान हैं।)

११३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में (कुरुक्षेत्र के पास के ?) शर्यणावत् तालाब का उल्लेख है। २ रे मन्त्र में आर्जीक (व्यास नदी के पास के) प्रदेश का नाम आया है। ८ वें में लिखा है कि जहाँ वैवस्वत राजा है, जहाँ स्वर्ग का द्वार है, जहाँ नदियाँ वहती हैं, वहाँ पर मुझे अमर करो।

(इस सूक्त के सारे ही मन्त्रों के अन्तिम पाद ११२ वें सूक्त के समान और एक से हैं।)

११४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में कश्यप अपने को कहते हैं कि मन्त्र-कर्ता ऋषियों के स्तोत्रों से अपनी वाणी की वृद्धि करो। सोम वनस्पतियों का राजा है। ४ थे मन्त्र में सोम से शत्रुओं से अपनी और अपने वस्त्रों की रक्षा की प्रार्थना की गई है।

(इस सूक्त के मन्त्रों के अन्तिम पाद भी पहले दो सूक्तों के समान और एक से हैं।)

(इस सारे ही नवम मण्डल में सोम की स्तुति है और इसमें सोम तैयार करने की विधि बतलाई है—

दो टेढ़े पत्तों वाली सोम लता को पत्थर से कूटकर और हाथ से निचोड़ कर उसका रस जल में मिलाया जाता था, और फिर भेड़ के वालों के छनने से, उँगलियों से चलाकर, छाना जाता था, तथा कलश या गो-चर्म निर्मित पात्र में भर लिया जाता था। सोम का वर्ण हरा और पिङ्गल कहा गया है। ये शायद क्रमशः अमिश्रित और दुग्धादि-मिश्रित सोम-रस के परिचायक हों।

इस मण्डल का सामवेद से विशेष सम्बन्ध है।)

(यहाँ पर नवमां मण्डल समाप्त होता है।)

---

१. "शेपो रोमाण्वन्तौ भेदौ"

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१० वें मण्डल[1] के १ ले सूक्त की ३ री ऋचा में स्तोता त्रित अग्नि से अपनी रक्षा की प्रार्थना करता है।

२ रे सूक्त के ६ ठे मन्त्र में अग्नि से दासों से युक्त भूमि की याचना है।

५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में मेघों में विद्युदग्नि का स्थान कहा गया है। ७ वें मन्त्र में अग्नि को बैल और गाय (पुरुष और स्त्री रूप) कहा है।

८ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में त्रित ऋषि ने पिता का ध्यान करके विपत्तियों से छूटने की इच्छा की है। ८ वें में आप्य के पुत्र त्रित का, पिता के अस्त्रों से, सात रस्सियों वाले त्रिशिरा को मारना और त्वष्टा के पुत्र (विश्वरूप) की गायों का हरण करना कहा है। ९ वें में इन्द्र का त्वष्टा के पुत्र (विश्वरूप) के तीन सिरों को काटना सूचित किया है।

१० वें सूक्त में यम-यमी संवाद है। यमी अपने भाई यम से कहती है कि इस समुद्रस्थ निर्जन द्वीप में तुम्हारा सहवास चाहती हूँ; क्योंकि तुम प्रारम्भ से ही मेरे साथी हो। विधाता की इच्छा है कि अपनी सन्तान अपने पिता का उत्तम दौहित्र हो।

यम उसे अपनी सहोदरा भगिनी बतलाकर ऐसे कर्म से इन्कार करता है और प्रजापति के, द्यु-लोक को धारण करने वाले, पुत्रों का सब जगह देखते रहना कहकर उस स्थान को निर्जन-प्रदेश नहीं मानता। इस पर यमी कहती है कि यद्यपि मनुष्यों के लिए ऐसा सम्बन्ध निषिद्ध है, तथापि देवता लोग ऐसा करते हैं। इसलिए तुम मेरी इच्छा पूर्ण करो। यम उत्तर देता है कि हम सहोदर हैं, अतः ऐसा सम्बन्ध त्याज्य है। इस पर यमी फिर कहती है कि प्रजापति ने हमें गर्भ में ही दम्पती (पति और पत्नी) बना दिया है, इसलिए उसको कौन मेट सकता है। पहले दिन की बात कौन जानता है? मित्र और वरुण के धाम (अहोरात्र) के विषय में तुम क्या जानते हो? जिस प्रकार पत्नी पति के सामने शय्या पर अपने शरीर को प्रकट करती है उसी प्रकार मैं भी तुम्हारे पास अपने शरीर को प्रकाशित करती हूँ। यम उत्तर देता है कि देवों के गुप्तचर सब देखते हैं। तुम किसी दूसरे के पास जाओ। भविष्य में ऐसा समय आयगा, जब बहनें भाइयों को पति बनायेंगी। हे सुभगे! मुझे छोड़कर दूसरे को पति बनाओ और वीर्य सेचन के समय उसका आलिङ्गन करो।

---

(१) दशम मण्डल का संपर्क अथर्ववेद से कहा जाता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यमी कहती है कि भाई-बहन का धर्म है कि एक दूसरे का दुःख दूर करें। अतः तुम मुझे काम-मूर्छिता से संभोग करो।

यम, भाई-बहन के सम्भोग का पाप कहा जाना बतलाकर, उसे दूसरे पुरुष के पास जाने की सलाह देता है। इस पर यमी उलाहना देती है कि अन्य स्त्री तुम्हारा आलिङ्गन करती है, परन्तु तुम मुझे नहीं चाहते। यम उसे उसी प्रकार दूसरे पुरुष से आलिङ्गन करने की सलाह देता है और उसे ही कल्याण का मार्ग बतलाता है।

(यम-यमी से दिन और रात का भी तात्पर्य लिया जाता है।)

१३ वें सूक्त के १ ले, २ रे और ५ वें मन्त्रों में यज्ञ-संभार को लादने के उपयोग में आने वाले शकट-द्वय (दो गाड़ियों) की स्तुति है। उन्हें यमज सन्तान की उपमा दी है और यज्ञ के पाँच पद (उपकरण) (धाना, सोम, पशु, पुरोडाश और घी) कहे हैं तथा अक्षर (ओङ्कार ?) का उच्चारण करके कार्य करना कहा है।

१४ वाँ सूक्त पितरों से सम्बन्ध रखता है। उसमें कहा है कि यम अच्छे कर्म वालों को सुखद-देश में ले जाते हैं। उनके पास सब जन एकत्रित होते हैं, अतः उनको हवि से पूजो। यम हमारे शुभाशुभ को जानते हैं। जिस मार्ग से हमारे पूर्वज गये हैं, उसी मार्ग से, अपने कर्मानुसार सब प्राणी जायँगे। मातलि (सारथि) के स्वामी इन्द्र कव्य वाले पितरों की, यम अङ्गिरा नाम के पितरों की और बृहस्पति ऋक्व नामक पितरों की सहायता से बढ़ते हैं। कोई स्वाहा और कोई स्वधा द्वारा प्रसन्न होते हैं। इसके अनन्तर यम के पिता विवस्वान् और यम से अङ्गिराओं के साथ यज्ञ में आने की प्रार्थना है। फिर अङ्गिरा, अथर्वा और भृगु नामक पितरों का तत्काल यज्ञ में आना सूचित किया है। इसके बाद मृत पिता से कहा गया है कि जहाँ हमारे पूर्वज गये हैं, वहीं तुम भी जाओ, स्वधा से प्रसन्न यम और वरुण को देखो, अपने शुभ कर्मों द्वारा स्वर्ग में अपने पितरों से मिलो और पाप का त्याग कर अस्त (गृह-विशेष) में प्रविष्ट होओ।

आगे श्मशान का पितरों द्वारा मृतक के लिए बनाया जाना और यम का उस स्थान को मृत व्यक्ति को देना बतलाकर, वहाँ पर स्थित पिशाचों को चले जाने की आज्ञा दी है। फिर मृत व्यक्ति से, ४ आँखों वाले शबल (छपकेदार) दो कुत्तों से शीघ्र हट कर, यम के साथ रहने वाले पितरों के

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पास जाने की प्रार्थना है। बाद में यम से उन दोनों कुत्तों से उस मृत व्यक्ति को बचाने और उसे कल्याण और नैरोग्य देने की प्रार्थना है। आगे लम्बी नाक वाले उन दोनों यम दूतों (कुत्तों) से अपने लिए सूर्य के दर्शन करने का सामर्थ्य मांगा है। फिर यम के लिए यज्ञ करने को कहा गया है। और यम का ६ स्थानों (द्यु-लोक, भू-लोक, जल, उद्भिज, उर्क और सूनृत) में रहना बतलाया है।

१५ वाँ सूक्त भी पितरों से ही सम्बन्ध रखता है। १ ले मन्त्र में उत्तम, मध्यम और अधम तीन तरह के पितर कहे हैं और उनसे यज्ञ में अपनी रक्षा करने को कहा है। २ रे में सब पितरों को नमस्कार किया गया है। ३ रे में पितरों से कुशों पर बैठकर स्वधा द्वारा हव्यादि ग्रहण की प्रार्थना है। ६ ठे में पितरों से यज्ञ की दक्षिण ओर घुटने टेककर बैठने की और यज्ञ की प्रशंसा करने की प्रार्थना है। ९ वें मन्त्र में स्तोत्र रचयिता पितरों का उल्लेख है।

१६ वां सूक्त भी पितरों से सम्बद्ध है। इसके १ ले मन्त्र में अग्नि से मृत व्यक्ति को उसके शरीर के जलने के पूर्व ही पितरों के पास भेज देने की प्रार्थना है। २ रे में मृत व्यक्ति का दुबारा सजीव होकर देवों के वश में रहना बतलाया है। ३ रे में मृत-व्यक्ति से कहा गया है कि तुम्हारा नेत्र सूर्य में और श्वास वायु में जाय तथा तुम अपने धर्म से आकाश और पृथ्वी में, या जल में जाओ तुम्हारे शरीर के अङ्ग ओषधियों में रहें। ४ थे में अग्नि से मृत व्यक्ति के अज (जन्म रहित) भाग को ही तपाने की प्रार्थना है। ५ वें में अग्नि से कहा गया है कि मृत का जो भाग स्वधा द्वारा तुम्हारी आहुति होता है, उसे पितरों के पास भेजो और अवशिष्ट को जीवन-दान दो। वह फिर से शरीर पावे। ६ ठे में अग्नि से मृत व्यक्ति के उन अङ्गों को, जिनको कौए, चींटी, सांप या हिंस्र जन्तुओं ने पीड़ा पहुँचाई है, नीरोग करने की प्रार्थना है।

७ वें में मृत व्यक्ति को गो-चर्म सहित अग्नि-शिखा का कवच धारण करने और अपने मेद और मांस से आच्छादित होने की सलाह दी गई है, जिससे अग्नि उसके संर्वांश में व्याप्त न हो सके। ९ वें और १० वें में क्रव्याद (मांस-भोजी) अग्नि को दूर करना कहा है। १३ वें में अग्नि से मृतक के जलाने के स्थान पर दूब उत्पन्न करने की प्रार्थना है। १४ वें में वहाँ की पृथ्वी से शीतल होने की, मेंढकी को सन्तोष देने वाली वर्षा होने की और अग्नि को सन्तुष्ट करने की कामना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा है कि त्वष्टा (देवता) अपनी कन्या सरण्यू का विवाह करने वाले हैं। उसमें सारा संसार आया है।--जिस समय यम की माता का विवाह हुआ था, उस समय वह (विवस्वान् की स्त्री) अदृश्य हो गई थी। २ रे में कहा है कि सरण्यू को मनुष्यों के पास छिपाया गया और उसी के समान दूसरी स्त्री बनाकर विवस्वान् को दी गई। उस समय घोड़ी का रूप धारण करने वाली सरण्यू ने अश्विद्वय को गर्भ में धारण कर यमज संतान को जन्म दिया। ११ वें मन्त्र में सात हवनकर्त्ताओं का सोम का हवन करना कहा है।

१८ वें सूक्त का अधिकांश भी मृतक से सम्बन्ध रखता है। १ ले मन्त्र में मृत्यु को देवयान से भिन्न मार्ग (पितृयान) से जाने को और अपनी संतान तथा वीरों को न मारने को कहा है। २ रे में मृत व्यक्ति के संबन्धियों से मृत्यु-मार्ग (पितृयान) को छोड़कर दीर्घायु प्राप्त करने को कहा है। ४ थे मन्त्र में मृत्यु को रोकने के लिए पत्थर की आड़ करना कहा है। ५ वें में बड़े के रहते छोटे का नहीं मरना बतलाया है। ६ ठे में मृत-व्यक्ति की संतान को वृद्धावस्था प्राप्त करने और दीर्घायु होने तथा बड़े के पीछे छोटे के कार्य में लगने की कामना है। ७ वें में सधवा स्त्रियों को (आंखों में) कज्जल और (केशों में) घी लगाकर तथा आँसुओं को बन्द करके सबसे पूर्व घर जाने को कहा गया है। ८ वें में मृत-व्यक्ति की पत्नी को, जीवित पुत्रादि का विचार करके, मृत-पति के पास न सोने और उठ कर घर जाने को कहा गया है और यह भी कहा गया है कि इस (पति) के साथ तुम पत्नी का कर्तव्य पूरा कर चुकी हो। ९ वें मन्त्र में मृत (क्षत्रिय) व्यक्ति के हाथ से धनुष लेना सूचित किया है। १० वें में मृतक से कहा गया है कि तुम मातृ रूपिणी पृथ्वी के पास जाओ, वह मृत्यु से (अस्थि रूप में) तुम्हारी रक्षा करेगी। ११ वें में पृथ्वी से, जिस प्रकार माता पुत्र को आंचल से ढकती है, उसी प्रकार मृतक (के शेषांश) को ढकने को कहा गया है। १२ वें में पृथ्वी से मृतक पर स्तूपाकार होकर अवस्थित होने की प्रार्थना है। १३ वें मन्त्र में अस्थि-कुम्भ पर पत्थर रखकर और उसे मिट्टी से ढककर अस्थियों को सुरक्षित रखने और वहाँ पर (निशान के लिए) खूँटी गाड़ने का उल्लेख हैं।

१९ वें सूक्त में गायों की स्तुति और कामना है।

२० वें सूक्त के १० वें मन्त्र में विमद ने अपने को स्तोत्र-कर्ता कहकर अग्नि से धनादिक माँगा है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विमद ऋषि का अपनी स्तुतियों द्वारा यज्ञ के लिए अग्नि को प्रेरित करना कहा है। ५ वें में अग्नि का अथर्वा से उत्पन्न होना कहा है। ६ ठे में अग्नि का, विमद को धन देने के कारण, महान् होना बतलाया है।

२२ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में (भार्गव) उशना, इन्द्र और अग्नि के अपने यहाँ आने से, अपने पर उनकी कृपा का होना सूचित किया है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र से अपने चारों तरफ रहने वाले यज्ञादि से शून्य दस्युओं को मारने की प्रार्थना है।

२३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सोम-पान के वाद इन्द्र का श्मश्रु (दाढ़ी-मूंछ) झाड़ना कहा है। ४ थे में इन्द्र का हरे सोम रस से श्मश्रु (दाढ़ी-मूंछ) भिगोना और झाड़ना बतलाया है। ६ ठे में विमद वंशियों का इन्द्र का सूक्त बनाना कहा है। ७ वें में विमद और इन्द्र की मैत्री के स्थिर रहने की कामना है।

२४ वें सूक्त के १ ले और २ रे मन्त्रों में विमद इन्द्र को महान् बतलाता है। ४ थे में विमद का अश्विद्वय की स्तुति करना कहा है। इस मन्त्र में और इसके अगले (५ वें) मन्त्र में अश्विद्वय का अरणि मन्थन द्वारा अग्नि उत्पन्न करना सूचित किया है।

२५ वें सूक्त में विमद-कृत सोम की स्तुति है।

(२४ वें सूक्त के प्रथम ३ मन्त्रों और इस सूक्त के सारे ही (११) मन्त्रों के अन्तिम ४ अक्षर एक से हैं।)

२६ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में पूषा का मेष-लोम का कंबल बुनना कहा है। ७ वें मन्त्र में पूषा का श्मश्रु (दाढ़ी-मूंछ) को झाड़ना सूचित किया है।

२७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में स्तोता कहता है कि हे इन्द्र! जिस समय मैं अयाज्ञिकों से लड़ने जाता हूँ, उस समय तुम्हारे लिए, स्थूल शरीर वाला वृषभ पकाता हूँ। ९ वें मन्त्र में 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की अनुभूति है। १२ वें मे २ तरह की स्त्रियाँ कही हैं। एक वे जो धनी पुरुष पर आसक्त होती हैं और दूसरी वे जो सभ्य स्त्रियाँ अनेक पुरुषों में से मनोनुकूल पति चुनती हैं। १५ वें में इन्द्र-रूप प्रजापति के शरीर से (विश्वामित्र आदि) सात ऋषियों, (बालखिल्य, आदि) आठ ऋषियों, (भृगु आदि) नौ ऋषियों और (अङ्गिरा आदि) दस ऋषियों का उत्पन्न होना कहा है। १६ वें में

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दस (अङ्गिराओं) में एक कपिल कहे हैं। १७ वें में अङ्गिराओं का मोटे-ताजे मेष को पाना और द्यूत-क्रीड़ा करना बताया है। १८ वें में आधे अङ्गिराओं का प्रजापति के लिए हवि का पाक करना और आधों का नहीं करना कहा है।

२२ वें मन्त्र में धनुष में गोस्नायु की प्रत्यंचा का लगाना सूचित किया है।

२८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में वसुक्र की स्त्री, यज्ञ में अपने श्वशुर इन्द्र का नहीं आना सूचित कर, कहती है कि यदि वे आते, तो भुना जौ खाकर और सोम पीकर घर लौट जाते। ३ रे में यजमान का वृषभ-पाचन और इन्द्र का उसे खाना सूचित किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र की इच्छा से खरगोश का सिंह, आदि का सामना करना, ढेले से पर्वत का तोड़ा जाना और बछड़े का सांढ़ से लड़ना संभव कहा है। १० वें मन्त्र में पञ्जर-बद्ध सिंह के पंजा रगड़ने के समान सुपर्ण (श्येन) पक्षी का नख रगड़ना और इन्द्र की इच्छा से तृषातुर महिष के लिए गोह (गोधा) का पानी लाना सूचित किया है।

२९ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का स्तोत्र करके त्रिशोक ऋषि का सौ मनुष्यों की सहायता पाना और कुत्स ऋषि का इन्द्र के साथ रथ पर बैठना प्रकट किया है।

३० वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में लिखा है कि जिस प्रकार युवकों के युवतियों की ओर जाने पर, वे उनके अनुकूल होती हैं, उसी प्रकार जल सोम के प्रति अनुकूल होता है '

३१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में द्यावा-पृथिवी के उपादान को जानने की इच्छा की गई है। ८ वें में कहा है कि द्यावा-पृथिवी ही अन्तिम नहीं है। इनके ऊपर भी कुछ है, जो प्रजा उत्पन्न करने वाला और द्यावा-पृथिवी को धारण करने वाला है। वह सूर्य से भी पूर्व विद्यमान हो चुका था। १० वें मन्त्र में अरणि (अग्नि उत्पन्न करने वाली लकड़ी-पीपल) का शमी वृक्ष पर जन्म बतलाया है। ११ वें में सूचित किया है कि कण्व को नृसद का पुत्र कहा है। इसी श्याम वर्ण कण्व के लिए अग्नि ने अपना रोचक रूप-प्रकट किया था।

३२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में स्तोत्रों की (माता) गायत्री के सात छन्द (महाव्याहृतियाँ) कहे हैं।

३३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अपनी पसलियों का सपत्नी के समान दुःख देना कहा है। ४ थे में कवप अपना त्रसदस्यु के पुत्र कुतश्रवण राजा के पास याचना करने जाना प्रकट करता है। ७ वें में मित्रातिथि का स्तोता, मित्रातिथि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के पुत्र उपमश्रवस् को अपने पास आने, शोक न करने और अपने को धन देने को कहता है। ८ वें में वह कहता है कि यदि मैं देवों और मनुष्यों का स्वामी होता तो मित्रातिथि जीवित रहता।

३४ वां सूक्त द्यूत-क्रीड़ा से संबन्ध रखता है। उसमें लिखा है:—

बहेड़े की लकड़ी के बने बड़े-बड़े पासे जिस समय फेंके जाते हैं, उस समय उन्हें देखकर मुझे, मूजवान् पर्वत पर उत्पन्न सोम को पीने से उत्पन्न आनन्द के समान, प्रसन्नता होती है।

मैंने अपनी रूपवती स्त्री को, जो मेरी और मेरे बन्धुओं की बराबर सेवा करती थी, केवल पासे के कारण छोड़ दिया।

जुआरी की सास उसकी निन्दा करती है, पत्नी उसे छोड़ देती है, कोई उसे कुछ नहीं देता और बूढ़े घोड़े के समान उसका आदर नहीं होता।

पासे का आकर्षण ज़बरदस्त है। यदि पासे की ललचाई नज़र किसी के धन पर पड़ जाय, तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी हो जाती हैं; माता पिता और भाई उसको जानने से इनकार करते हैं और उसे पकड़कर ले जाने को कहते हैं।

पासे खेलने से विरत होकर मैं जुआरियों से दूर हो जाता हूँ। परन्तु जब जुए के स्थान पर पीले पासों को देखता हूँ तो भ्रष्टा स्त्री के उप-पति के पास जाने के समान, जुआरियों के घर चला जाता हूँ।

जुआरी छाती फुलाकर जुए के अड्डे पर आता है और कहता है कि मैं जीतूंगा। कभी पासा जुआरी की अभिलाषा पूर्ण करता है और विपक्षी के प्रति उसके भावों को सिद्ध कर देता है।

परन्तु कभी वही पासा अंकुश के समान दुःख देता है। पासा जीतने वाले को पुत्र-जन्म के समान आनन्द देता है और हारने वाले को मार डालता है।

सूर्य के संसार में विचरण के समान त्रेपन पासे एक साथ नक्शे पर खेलते हैं। पासे किसी के वश के नहीं होते। राजा भी इन्हें नमस्कार करता है।

पासे कभी नीचे और कभी ऊँचे उठते हैं। हाथ वाले भी इन बे हाथ वालों से हार खाते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जुआरी की दीन स्त्री दुःख पाती है। पुत्र के मारे-मारे फिरने से माता भी दु.खी रहती है। जुआरी को उधार देने वाला अपने धन की पुनः प्राप्ति में शङ्कित रहता है और जुआरी दूसरों के घर रात काटता है।

जुआरी का हृदय, अपनी स्त्री की दशा तथा अन्य स्त्रियों का सौभाग्य और गृहादि देखकर, दुःख पाता है। जो जुआरी प्रातः काल घोड़ों पर सवारी करता था, वह सायंकाल (वस्त्र तक हार जाने से) आग से जाड़ा मिटाता है।

मैं पासों के मुखिया को दसों उंगलियाँ जोड़कर नमस्कार करता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि मैं तुमसे धन नहीं चाहता।

हे जुआरी ! जुआ न खेलकर, खेती करना और उसकी आय से सन्तुष्ट रहना। इसी से तुम स्त्री और अनेक गायें पाओगे। यह वात सूर्य ने मुझे कही है।

हे पासों ! हमसे मित्रता करो। हमारा कल्याण करो। हमारे ऊपर अपना प्रभाव न डालो। हमारा शत्रु तुम्हारा कोप भाजन हो। दूसरे तुम में फँसे रहें।

(इस सूक्त का ऋषि कवष और देवता अक्ष और द्यूतकार हैं।)

३५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र से १२ वें तक का चौथा पाद एकसा है।

३६ वें सूक्त के २ रे से १२ वें तक के मन्त्रों का चतुर्थ पाद भी एक ही है।

३७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में सत्य-वचन से ही संसार की स्थिति कही है।

३८ वें सूक्त के ५ वे मन्त्र में इन्द्र से अपने को कुत्स के हाथ से छुड़ाने की प्रार्थना है। और उनसे कहा गया है कि तुम्हारा सा व्यक्ति मुष्कद्वय का वन्धन क्यों सहता है।

३९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि एक स्त्री (इस सूक्त की ऋषि कुष्ठ रोगिणी घोषा) पिता के घर में ही बुढ़िया हो रही थी, परन्तु तुम उसके सौभाग्य-स्वरूप वर को ले आये। तुम्हें अन्धे और दुर्वलों का चिकित्सक कहा जाता है। ७ वें में कहा है कि हे अश्विद्वय ! पुरुमित्र राजा की कन्या शुन्ध्युव को तुम रथ पर चढ़ा कर ले गये थे और उसे विमद को व्याह दिया था। वध्रिमती ने तुमको बुलाया था और तुमने उसकी प्रसव-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वेदना दूर कर दी थी। ८ वें में अश्विद्वय का कलि नाम के वृद्ध स्तोता को फिर से युवा बनाना, बन्दन को कुँए से निकालना और लंगड़ी विश्वपला को लोहे की टाँग देकर चलाना कहा है। ९ वें में अश्विद्वय का शत्रुओं द्वारा मृत-प्राय कर गुहा में फेंके हुए रेभ को बचाना और सात बन्धनों से बँधे अत्रि को जलते हुए अग्निकुण्ड में से निकालना कहा है। १० वें में अश्विद्वय का पेदु को १०० घोड़े देना बताया है। १३ वें मन्त्र में अश्विद्वय से शयु की बूढ़ी गाय को दूधवाली बनाने को कहा गया है और उनका भेड़िये के मुख में पड़ी चिड़िया के प्राणों की रक्षा करना सूचित किया है।

१४ वें मन्त्र में भृगु की संतान का रथ बनाना कहकर, कहा गया है कि जिस प्रकार जामाता को देते समय कन्या अलंकृत की जाती है, उसी प्रकार हमने इस स्तोत्र को अलंकृत किया है।

४० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि तुम दिन में और रात में कहाँ जाते हो ? कहाँ समय बिताते हो ? जिस प्रकार शयन के समय विधवा देवर का और पत्नी पति का समादर करती है, उसी प्रकार तुम्हें यज्ञ में कौन आदर के साथ बुलाता है ? ५ वें में घोषा अश्विद्वय से कहती है कि मैं राजकुमारी घोषा और तुम्हारी कथा कहने वाली हूँ। तथा तुम मेरे यहाँ रहकर मेरे भतीजे का दमन करते हो। ६ ठें में अश्विद्वय का, कुत्स के समान रथ पर बैठकर स्तोता के घर जाना कहकर, व्यभिचार-रत स्त्री के समान मधु-मक्खियों का उन (अश्विद्वय) के मधु में रत रहना प्रकट किया है। ७ वें में अश्विद्वय का भुज्यु, वश, अत्रि और उशना को बचाना सूचित किया है। ८ वें में अश्विद्वय का कृश, शयु, अपने परिचारक और विधवा की रक्षा करना बतलाया है। ९ वें मन्त्र में अपना घोषा होना और अपने विवाह के लिए वर का आना कहा है।

४१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अपने को (घोषा-पुत्र) सुहस्त बतलाकर अश्विद्वय से कहा गया है कि या तो मेरे पास आओ, या पुरोहित अग्निध्र के पास जाओ।

४२ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में कहा है कि जिस प्रकार जुआरी अपने हराने वाले को ढूँढ़कर हराता है, वैसे ही इन्द्र अनिष्ट करने वाले को हराते हैं।

४३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में लिखा है कि जैसे जुआड़ी अपने हराने वालों को ढूँढकर हराता है, वैसे ही इन्द्र वृष्टि-रोधक सूर्य को परास्त करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१० वें मन्त्र में गायों द्वारा दरिद्रता को दूर करना और जौ द्वारा भूख को निवृत्त करना कहा है।

४४ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में अंकुश द्वारा हाथियों को वश में करना सूचित किया है।

४५ वें सूक्त के १२ वें मन्त्र में मनुष्यों में अग्नि की सुन्दर मूर्ति होना कहा है।

(आठवां अष्टक)

४६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में ऋषियों का जल के नीचे छिपे अग्नि को ढूंढ़ना और भृगुवंशियों का उसको पाना कहा है। ३ रे मन्त्र में विभूवस् के पुत्र त्रित ऋषि का अग्नि को भूमि पर पाना बताया है। ६ वें मन्त्र में जल, त्वष्टा और भृगुओं का अग्नि को प्राप्त करना और मातरिश्वा (वायु) और दूसरे देवों का अग्नि को मनु के यज्ञ के लिए बनाना प्रकट किया है।

४७ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अपने को अङ्गिरा-गोत्रोत्पन्न और अपना नाम सप्तगु बतलाता है और धन की याचना करता है।

४८ वें सूक्त में इन्द्र के मुख से अपनी ही प्रशंसा करवाई गई है। २ रे मन्त्र में इन्द्र कहता है कि मैंने (मेरे मना करने पर भी अश्विद्वय को मधु-विद्या सिखाने वाले) अथर्वण (दध्यङ्) ऋषि का सिर काटा था। कुँए में गिरे त्रित के उद्धार के लिए मेघ को जल दिया था और मातरिश्वा के पुत्र दधीचि के लिए वृष्टि करने को मेघों को मारा था। ३ रे में इन्द्र त्वष्टा द्वारा अपने लिए लोहे का वज्र बनाया जाना सूचित करते हैं। ५ वें में इन्द्र अपने को सब धनों का स्वामी कह कर अपने से ही धन माँगने का उपदेश देते हैं, तथा यह भी कहते हैं कि हे पुरुषों! मनुष्य मेरी मैत्री नष्ट न करें। ८ वें में इन्द्र कहते हैं कि मैंने ही गुङ्गुओं के देश में प्रजा के बीच अतिथिग्व के पुत्र दिवोदास को बसाया था और मैं पर्णय और करञ्ज को युद्ध में मारने के कारण प्रसिद्ध हुआ था।

४९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र ने अपना उशना के लिए अत्क को मारना, कुत्स को बचाना, वज्र द्वारा शुष्ण को मारना और दस्युओं का नाम आर्य न रखना कहा है। ४ थे में इन्द्र ने कहा है कि मैंने वेतसु (प्रदेश) को, तुग्र को और स्मदिभ को कुत्स के वश में कर दिया था। ५ वें में इन्द्र अपना मृगय असुर को श्रुतर्वा के लिए, वेश को आयु के लिए और षड्गृभि को सव्य

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के लिए वश करना प्रकट करते हैं। ६ ठे में इन्द्र अपना, वृत्र-को मारने के समान ही, नववास्त्व और बृहद्रथ को मारना प्रकट करते हैं। ८ वें में इन्द्र अपना ७ पुरियों और ९९ नगरों को नष्ट करना बतला कर, तुर्वश और यदु को प्रसिद्ध करना कहते हैं।

५१ वें सूक्त में अग्नि और देवों का संवाद है। इसमें अग्नि हवि-वहन करने की प्रार्थना करते हैं। अग्नि अपने तीन बड़े भाइयों का इस कार्य को करते हुए मर जाना सूचित करते हैं। देवता अग्नि को अमरत्व प्रदान कर, प्रयाज, अनुयाज के साथ ही हवि के मुख्य भाग को अग्नि का हिस्सा निश्चित कर देते हैं।

५२ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में तीन हजार तीन सौ उनतालीस देवों का अग्नि की सेवा करना कहा है।

५३ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में त्वष्टा का देवों के लिए सुन्दर पान-पात्र बनाना और लोहे के कुठार की धार को तीक्ष्ण करना तथा उसी से ब्रह्मणस्पति का पात्र के लिए लकड़ी काटना बतलाया है।

५४ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में बृहदुक्थ ऋषि का स्तोत्र बनाना प्रकट किया है।

५५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में 'पञ्च' पञ्चजनों के लिए आया है। ३ रे मन्त्र में देवों की संख्या ३४ लिखी है। (८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ प्रजापति, १ वषट्कार, और १ विराट्)

५६ वां सूक्त बृहदुक्थ के पुत्र वाजी की अन्त्येष्टि से सम्बन्ध रखता है। पिता अपने मृत-पुत्र से कहता है:—

तुम्हारा एक अंश अग्नि है, दूसरा अंश वायु और तीसरा ज्योतिर्मय (आत्मा) है। इन तीनों अंशों के द्वारा तुम अग्नि, वायु और सूर्य में प्रवेश करो। प्रवेश के समय कल्याण मूर्ति बनो और देवों में श्रेष्ठ पितृ-रूप सूर्य के लोक में प्रिय होओ।

हे वाजी! तुम्हारे शरीर को ग्रहण करने वाली पृथ्वी हमारे और तुम्हारे लिए कल्याण कारिणी हो। तुम ज्योति धारण करने के लिए अपनी आत्मा को देवों और आकाशस्थ सूर्य में मिला दो।

पुत्र! तुम अपने उत्तम स्तोत्र करने के प्रभाव से उत्तम स्वर्ग को जाओ। अपने उत्तम कर्म के कारण उत्तम देवताओं और सूर्य के साथ मिलो।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमारे पितर देवत्व प्राप्त कर देवों के शरीर में प्रवेश कर चुके हैं। वे पितर अपनी शक्ति से सारे ब्रह्माण्ड में घूम चुके हैं, सारे भुवनों को व्याप्त कर चुके हैं और अपनी संतान के लिए अपना प्रभाव फैला चुके हैं।

सूर्य-पुत्र देवों ने तृतीय कर्म (पुत्रोत्पत्ति) के द्वारा सूर्य को दो (प्रात: सायं) प्रकार से स्थापित किया है। पितरों ने अपनी संतान में पैतृकबल रक्खा है। वे चिरस्थायी वंश छोड़ गये हैं।

जैसे नाव से जल को पार करते हैं, वैसे ही बृहदुक्थ ने अपनी शक्ति से अपने (मृत) पुत्र को (अग्नि, आदि) पार्थिव और (सूर्य, आदि) दूरस्थ पदार्थों में मिला दिया।

५८ वें सूक्त में स्तोत्र-कर्ता अपने भ्राता सुबन्धु के दूर-गत मन को लौटा लाकर, उसका संसार में जीवित होना कहता है।

५९ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में सुबन्धु की कल्याण-कामना है।

६० वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा है कि (राजा) असमाति का जनपद श्रेष्ठ है। बड़े लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। हम नम्र होकर उस देश में गये। २ रे में बताया है कि शत्रु-संहारक असमाति की मूर्ति प्रभावशाली है। उनके पास जाने से मनोरथ सिद्ध होते हैं, वे भजेरथ-वंशी और सत्पुरुषों के पालक हैं। ३ रे में प्रकट किया है कि वे खड्ग लेकर, यान लेकर भी मनुष्यों को मार गिराते हैं। ४ थे में कहा है कि इक्ष्वाकु (राजा) रक्षा-कार्य में नियुक्त हैं। पञ्चकृष्टि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद) स्वर्ग का सा सुख भोगें। ६ ठे में लिखा है कि अगस्त्य के दौहित्रों के लिए दो रक्त वर्ण घोड़ों को रथ में जोड़ो और कृपण व्यापारियों को हराओ। ७ वें में कहा है कि यह आगत अग्नि ही माता-पिता और प्राणदाता है। हे सुबन्धु! तुम्हारा यही शरीर है। इसमें प्रवेश करो। १० वें में कहा है कि मैंने विवस्वान् के पुत्र यम से सुबन्धु का मन छीना है। इससे उसकी मृत्यु दूर होगी।

६१ वें सूक्त के ५ वें और ६ ठे मन्त्रों में प्रजापति का अपनी कन्या (उषा) के शरीर में वीर्य का सेचन करना कहा है। ७ वें में उपर्युक्त संगम से देवों का वास्तोष्पति का निर्माण करना सूचित किया है। १८ वें में नाभानेदिष्ट अपने को सूर्य का वन्धु बतलाते हैं। (सूर्य के पुत्र मनु थे और मनु के नाभानेदिष्ट हुए।) २३ वें में नाभानेदिष्ट अपना अङ्गिराओं, के यज्ञ में स्तोत्र रचना कर, उनका प्रिय-पात्र बनना सूचित करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

६२ वें में सूक्त के १ से ४ थे मन्त्रों तक मनु-पुत्र (नाभानेदिष्ट) अङ्गिराओं से अपने को अङ्गीकार करने की प्रार्थना करते हैं। (इन चारों मन्त्रों का चतुर्थपाद समान है।) ५ वें से ७ वें मन्त्रों तक अङ्गिरोगण की प्रशंसा है। ८ वें और ९ वें मन्त्रों में सार्वाण मनु की प्रशंसा है। १० वें में दास-भूत यदु और तुर्व राजाओं का मनु के भोजनार्थ पशु देना कहा है। ११ वें मन्त्र में देवों में सार्वाण मनु की आयु-वृद्धि की प्रार्थना है।

६३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में मनु-संतान को धारण करने वाले और नृहुष-पुत्र ययाति के यज्ञ में जाने वाले देवों से अपने को संमानित करने की प्रार्थना है। १७ वें में प्लुति के पुत्र गय का देवों की स्तुति करना प्रगट किया है।

६४ वें सूक्त के ८ वें और ९ वें मन्त्रों में सरस्वती, सरयू और सिन्धु आदि २१ नदियों का उल्लेख है। १६ वें और १७ वें मन्त्रों में गय का देवों की स्तुति करना कहा है।

६५ त्रें सूक्त के १२ वें मन्त्र में अश्विद्वय का भुज्यु की रक्षा करना, वध्रि-मती को पिङ्गल वर्ण का पुत्र देना, विमद ऋषि को सुन्दर पत्नी देना और विश्वक ऋषि को विष्णाप्व नाभक पुत्र देना बताया है। १५ वें में वसिष्ठ-वंशी ऋषि का देवों की स्तुति करना सूचित किया है।

६६ वें सूक्त के ५ वें और ७ वें मन्त्रों में तीन तल्ले के घर का उल्लेख है। १२ वें में स्तोत्र-कर्ता अपने को मनु की संतान बतलाता है। १४ वें और १५ वें मन्त्र में वसिष्ठ के समान ही वसिष्ठ वंशियों का स्तुति और देव-पूजन करना कहा है।

६७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अयास्य का इन्द्र का स्तोत्र बनाना कहा है। २ रे में अङ्गिरा लोगों की प्रशंसा है।

६८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में जौ रखने की नाज की कोठी का उल्लेख है।

६९ वें सूक्त के १ से ५ वें मन्त्र तक बध्र्यश्व-पुत्र सुमित्र द्वारा अग्नि-स्थापना करना वर्णन कर, मङ्गल कामना की गई है। ३ रे मन्त्र में मनु के समान ही अपना भी अग्नि को प्रदीप्त करना प्रकट किया है। ७ से १२ वें मन्त्रों तक बध्र्यश्व और सुमित्र-वंशियों का अग्नि को प्रदीप्त करना, आदि वर्णित है।

७० वें सूक्त के १० वें मन्त्र में यज्ञीय पशु के बाँधने के खम्भे (यूप-काष्ठ) की स्तुति है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

७१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में, सूप से सत्तू को परिष्कृत करने के समान विद्वानों का भाषा को परिष्कृत कर प्रस्तुत करना कहा है। ९ वें मन्त्र में अविद्वानों का पाप वाली (अपरिष्कृत) भाषा की शिक्षा पाना और खेती करना कहा है।

(इससे ऋग्वेद-काल में भी संस्कृत और असंस्कृत भाषाओं का प्रचार होना प्रकट होता है।)

७२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में कहा है कि ब्रह्मणस्पति ने देवों को उत्पन्न किया। पहले युग में असत् (नाम रूप रहित) से सत् (नाम रूप सहित) उत्पन्न हुआ। ३ रे में कहा है कि पहले पहल असत् से सत् उत्पन्न हुआ। फिर दिशायें और बाद में वृक्ष हुए। ४ थे में वृक्षों से पृथ्वी और पृथ्वी से दिशाओं का तथा अदिति से दक्ष का और दक्ष से अदिति का होना[1] बतलाया है। ५ वें में दक्ष कन्या अदिति का देवों को जन्म देना कहा है। ८ वें और ९ वें मन्त्र में अदिति के ८ पुत्र (मित्र, वरुण, धाता, अर्यमा, अंश, भग, विवस्वान् और आदित्य का) होना कहा है। साथ ही यह भी कहा है कि वह (अदिति) सूर्य को आकाश में जन्म तथा मृत्यु के लिए छोड़कर सात पुत्रों को देवलोक में ले गई।

७५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा गया है कि नदियाँ, सात-सात करके तीन प्रकार (द्यु, आकाश और पृथ्वी) से चलीं। सबसे बड़ी सिन्धु (नदी) है। २ रे से ४ थे मन्त्र तक सिन्धु (नदी) की प्रशंसा है और सिन्धु की दो उपनदियों का होना बतलाया है। ५ वें मन्त्र में गङ्गा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्रि (सतलज), परुष्णी (रावी), असिक्नी (चिनाव), मरुद्वृधा (मरुवर्दन, चिनाव और झेलम के बीच की सहायक नदी), वितस्ता (झेलम) आर्जीकीया (व्यास) और सुषोमा (सोहान) की स्तुति की है। (ये सब नदियाँ सिन्धु के पूर्व की हैं।) ६ ठे मन्त्र में सिन्धु का क्रमशः तृष्टामा, सुसर्तु, रसा और श्वेत्या से मिलना बतलाकर, उससे कहा गया है कि तुम कुभा (काबुल नदी) को गोमती (गोमल) से और क्रमु (कुर्रम) को मेहत्नू से मिलाती हो।

(ये सब सिन्धु की पश्चिम की तरफ की सहायक नदियाँ हैं।) ७ वें से ९ वें मन्त्र तक सिन्धु की प्रशंसा है।

---

१. यह एक दूसरे से एक दूसरे का जन्म भिन्न-भिन्न कल्पों या जन्मों में हुआ होगा।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

७९ वें सूक्त में सोम को कूटकर रस निकालने वाले पत्थर की प्रशंसा और स्तुति है। ५ वें में उस पत्थर की पूजा करना कहा है।

८० वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि का जरत्कर्ण की रक्षा करना, जरूथ को जल से निकालकर जलाना, अग्नि-कुण्ड में गिरे अत्रि को बचाना और नृमेध को सन्तान देना कहा है। ५ वें मन्त्र में ऋषियों, मनुष्यों और पक्षियों का अग्नि को बुलाना कहा है। ६ ठे में मनु की संतान का नहुष-वंशियों का और गन्धर्वों का अग्नि की स्तुति करना सूचित कर, अग्नि का मार्ग घी में बताया है। ७ वें मन्त्र में ऋभुओं का और अपना अग्नि के स्तोत्र बनाना कहा है।

८५ वें सूक्त के १३ वें मन्त्र में कहा है कि पति-गृह को जाते समय सूर्य ने सूर्या को जो चादर दी थी, वह आगे चली। मघा नक्षत्र में (चादर के साथ दी गई) गायें डंडे से हांकी जाती हैं और पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी में वह चादर रथ पर ले जाई जाती है। ३० वें मन्त्र में कहा है कि पति यदि वधू के वस्त्र से अपने अङ्ग को ढकने का प्रयत्न करता है, तो उस (पति) को हानि पहुँचती है। ४६ वें मन्त्र में वधू को ससुर, सास, ननद, और देवरों की सम्राज्ञी होने का उपदेश है।

८६ वें सूक्त में प्रथम इन्द्र, इन्द्राणी और वृषाकपि का संवाद है और फिर उस वृषाकपि को बुलाया गया है। १ ले मन्त्र में इन्द्र कहता है कि-स्तोताओं को सोमाभिषव करने को कहा था; परन्तु उन्होंने मेरी (इन्द्र की) स्तुति न कर वृषाकपि की स्तुति की। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। २ रे से ४ तक में, इन्द्र की उदारता और श्रेष्ठता तथा वृषाकपि की हीनता दिखला कर, कहा है कि वृषाकपि के कान को वराह की अभिलाषा करने वाला, कुत्ता काटे, ५ वें में इन्द्राणी कहती है कि—मेरे लिए जो सामग्री रक्खी गई थी, उसे वृषाकपि ने दूषित कर दिया है। मैं इस दुष्ट का सिर काटना चाहती हूँ। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। ६ ठे में इन्द्राणी कहती है कि—न तो कोई स्त्री मुझ से अधिक सौभाग्य वाली है, न सुपुत्रवाली ही है। इसी प्रकार न कोईं स्त्री पति के पास मुझसे अधिक शरीर को प्रफुल्ल ही कर सकती है, न रति-समय दोनों जांघों को ही उठा सकती है इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। ७ वें में वृषाकपि कहता है—हे सुन्दर लाभवाली माता (इन्द्राणी) तुम्हारा अङ्ग, जङ्घा, मस्तक आवश्यकतानुसार हो जायगा। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। ८ वें में इन्द्र इन्द्राणी से वृषाकपि पर क्रुद्ध होने का कारण पूछता है। ९ वें में इन्द्राणी कहती है कि यह हिंसक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(वृषाकपि) मुझे पति और पुत्र से हीन-सी समझता है। परन्तु मैं पति पुत्र-वाली इन्द्र की पत्नी हूँ। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। १० वें में इन्द्राणी की महिमा है। ११ वें में इन्द्र, स्त्रियों में इन्द्राणी को सौभाग्यशालिनी बतलाता है; क्योंकि उसका पति बुड्ढा होकर नहीं मरता। १२ वें में कहा गया है कि—मैं अपने सखा वृषाकपि के बिना प्रसन्न नहीं रहता। वृषाकपि का प्रिय द्रव्य ही देवों के पास जाता है।

१३ वें में वृषाकपि की स्त्री को सुपुत्रा और सुपुत्रवधू कहा है और फिर कहा है कि तुम्हारे सांड़ों को और तुम्हारे प्रिय हवि को इन्द्र खा जाय। १४ वें में इन्द्र कहता है कि—यज्ञ करने वाले मेरे लिए पंद्रह-बीस सांड़ पकाते हैं। उन्हें खाकर मैं मोटा होता हूँ। मेरी दोनों कुक्षियों को सोम से भरा जाता है। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। १५ वें में इन्द्र को, गायों के बीच शब्द करते हुए, सांड़ की तरह रमण करने को कहा गया है। १६ वें में इन्द्राणी की उक्ति है कि—जिसकी पुरुषेन्द्रिय जांघों के बीच लटकती है, वह रमण नहीं कर सकता। रमण वही कर सकता है जिसके बैठने पर रोमवाली पुरुषेन्द्रिय बल-प्रकाश करती है। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। १७ वें में इन्द्र उत्तर देता है—वह पुरुष रमण करने में समर्थ नहीं होता, जिसका रोमवाला पुरुषाङ्ग बैठने पर बल-प्रकाश करता है। परन्तु वही कर सकता है जिसका पुरुषाङ्ग जांघों के बीच लटकता है। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। १८ वें में कहा है कि—वृषाकपि दूसरे के धन चुराने वाले को मरा पावे। वह खड्ग, बध स्थान, नया चरु और शकट (गाडी) प्राप्त करे। इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है। १९ वें में इन्द्र कहता है कि मैं आर्यों को ढूंढ़ते हुए यज्ञ में आता हूँ। २० वें में कहा है कि मरु-देश और सघन वन में कितने योजन का अन्तर है। हे वृषाकपि ! पास के घर में आश्रय लो। २१ वें में इन्द्र और इन्द्राणी ने वृषाकपि को वापस घर आने को कहा है। २२ वें में वृषाकपि और इन्द्र से अपने घर आने की प्रार्थना है। २३ वें में कहा है कि मनु की पुत्री पर्शु ने बीस पुत्रों को जन्म दिया। जिस (पर्शु) का उदर बढ़ा हुआ था, उसका कल्याण हो।

(इस सूक्त के सारे ही मन्त्रों का चतुर्थ पाद एक है, जिसका अर्थ—'इन्द्र सबसे श्रेष्ठ है' होता है।)

८७ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में अग्नि को लोह-दंष्ट्र कहा है। १२ वें में अग्नि से सत्य को झुठलाने वाले राक्षस को, दध्यङ् अथर्वा ऋषि के समान, अपने तेज से भस्म कर डालने की प्रार्थना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का पक्षियों, गतिशील सर्पों और चराचर जगत् को पैदा करना कहा है। ९ वें मन्त्र में सर्वमेध यज्ञ का उल्लेख है। १५ वें में माता-पिता से उत्पन्न होने वाले सर्वों के लिए देवयान या पितृ-यान दो ही मार्ग कहे हैं।

८९ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में गायों के वध-स्थान का उल्लेख है। १७ वें में, अपने को विश्वामित्र की संतान बताकर, इन्द्र के नये स्तोत्र प्राप्त करने की कामना की है।

९० वां सूक्त पुरुष-सूक्त कहाता है। इसमें ईश्वर और उसके विराट् रूप की महिमा और उसी से सारे जगत् की उत्पत्ति कही है।

९१ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में कहा है कि—जिस अग्नि में घोड़ों, सांढ़ों, और पौरुष-हीन मैंढ़ों की आहुति दी जाती हैं, मैं उसकी स्तुति बनाता हूँ। (ये सब पशु अश्वमेध-यज्ञ में होमे जाते हैं।)

९३ वें सूक्त के १४ वें मन्त्र में कहा है कि जैसे देवता ५०० रथों में बैठकर यज्ञ में जाते हैं, वैसे ही मैंने दुःशीम, पृथवान्, वेन और राम नाम के राजाओं के पास उन (देवों) के स्तोत्रों का पाठ किया है। १५ वें मन्त्र में तान्व, पार्थ्य और मायव ऋषियों का उक्त राजाओं से ७७ गायें मांगना सूचित किया है।

९४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कहा है कि जैसे माँस के पकने पर माँस-भक्षी पुरुष आनन्द ध्वनि करते हैं, वैसे ही ये (सोम को कूटने के) पत्थर भी शब्द करते हैं।

(यह सारा ही सूक्त सोमाभिषवकारी पत्थरों की स्तुति से संबन्ध रखता है।)

९५ वें सूक्त में उर्वशी और पुरूरवा का संवाद है। पुरूरवा उर्वशी से बात करना चाहता है, परन्तु वह पुरूरवा से कहती है कि मैं तुम्हारे पास से ही आ रही हूँ। तुम घर लौट जाओ। मैं तुम्हें नहीं मिल सकती। इस पर पुरूरवा कहता है कि तुम्हारे विरह में मैं दुर्बल हो गया हूँ। उर्वशी कहती है कि उषा, यदि मैं श्वसुर को भोजन देने की इच्छा करती, तो पास के घर से पति के घर में जाती और दिन-रात रमण सुख भोगती। हे पुरूरवा ! तुम मुझे दिन में तीन बार पुरुष-दण्ड से ताड़ित करते थे। किसी सपत्नी से मेरी प्रतिद्वन्द्विता नहीं थी। तुम मुझे ही सन्तुष्ट करते थे। पुरूरवा कहता है कि तुम्हारे आने

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के बाद से सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्न, आपि, हृद्‌चक्षु, ग्रन्थिनो और चरण्यू नामक स्त्रियाँ वेशभूषा करके मेरे पास नहीं आती थीं। इस पर उर्वशी पुरूरवा के रूप और बल की प्रशंसा करती है।

आगे पुरूरवा अपना अप्सराओं की ओर जाना और उनका भाग जाना प्रकट करता है और कहता है कि उर्वशी से जो मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ है, उर्वशी उसे दीर्घायु करे। उर्वशी उत्तर देती है कि पृथ्वी की रक्षा के लिए तुमने मुझसे पुत्र उत्पन्न किया। मैंने तुमसे कह दिया था कि क्या होने से मैं तुम्हारे पास नहीं रहूँगी। परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अब पृथ्वी की पालना छोड़कर वृथा बातें क्यों करते हो। इस पर पुरूरवा कहता है कि तुम्हारा पुत्र मुझे कब चाहेगा ? क्या मेरे पास आने पर वह नहीं रोवेगा ? उर्वशी उत्तर देती है कि तुम्हारे पुत्र को मैं तुम्हारे पास भेज दूंगी। मैं उसकी कल्याण कामना करूँगी। वह तुम्हारे पास आकर नहीं रोवेगा। अब तुम मुझे नहीं पा सकते, घर लौट जाओ। इस पर पुरूरवा अपनी मृत्यु की कामना करता है और कहता है कि मुझे वृक (भेड़िया) खा जाय। परन्तु उर्वशी उसे ऐसा सोचने से मना करती है और कहती है कि स्त्रियों की मैत्री स्थायी नहीं होती। उनका और भेड़ियों का हृदय एक सा होता है। मैं अनेक रूपों से मनुष्यों में घूमी हूँ। मैंने उनके साथ चार वर्ष तक रातें बिताई हैं और दिन में एक बार थोड़ा सा घी पीकर क्षुधा-निवृत्ति करते हुए भ्रमण किया है। इस पर फिर पुरूरवा अपनी हृदय-पीड़ा को प्रकट कर उर्वशी से लौट आने की प्रार्थना करता है। परन्तु उर्वशी इला पुत्र पुरूरवा को कहती है कि ये सब देवता तुम्हारा मृत्यु विजयी, हवि से देवों को तृप्त करने वाला, और स्वर्ग में आमोद करने वाला, होना सूचित करते हैं।

९६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र के वज्र को लोहे का और हरा कहा गया है। ८ वें मन्त्र में इन्द्र की दाढ़ी-मूंछ को उज्जवल बताया है।

९७ वें सूक्त में ओषधियों की स्तुति और उनसे रोग-मुक्ति की कामना की गयी है। इसके १ ले मन्त्र में लिखा है कि देवों ने पहले के तीन युगों में जो ओषधियाँ बनाई हैं, वे सब पिङ्गल वर्ण ओषधियाँ १०७ स्थानों में विद्यमान हैं। ४ थे में ओषधियों के सामने स्वीकार किया गया है कि मैं चिकित्सक को घोड़ा, गाय, वस्त्र और अपने को भी दे दूँगा। ५ वें में ओषधियों का स्थान अश्वत्थ और पलाश वृक्ष पर बतलाया है। ६ ठे में कहा है कि जिसके पास ओषधियाँ हैं और जो उन्हें जानता है उसे भिषक् कहते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह रोगों को नष्ट करता है। ७ वें में अपना, रोग-नाश के लिए, अश्वावती, सोमावती, ऊर्जयन्ती और उदीजस् ओषधियों को जानना सूचित किया है। ९ वें में ओषधियों की माता का नाम इष्कृति (नीरोग करने वाली) बतलाया है। १३ वें में रोग से कहा है कि जैसे नीलकण्ठ और श्येन पक्षी वेग से उड़ते हैं, जैसे वायु वेग से चलता है और जैसे गोधा (गोह) तेजी से दौड़ती है, वैसे ही तुम भी शीघ्र दूर हो जाओ। १४ वें में कहा है कि एक ओषधि दूसरी के और दूसरी तीसरी के पास जाय और वे सब एक मत होकर मेरी प्रार्थना को पूर्ण करें। १५ वें में बृहस्पति का फलवाली और फलरहित तथा पुष्पवाली और पुष्परहित ओषधियों को उत्पन्न करना कहा है। १८ वें में सोम को ओषधियों का राजा कहा है।

९८ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में बृहस्पति से शन्तनु राजा के लिए वृष्टि करने की प्रार्थना है। २ रे में देवापि के दूत के अपने पास आने की कामना की गई है। ३ रे में बृहस्पति से प्रार्थना है कि वह हमारी वाणी में ऐसा स्तोत्र डाल दे, जिससे हम शन्तनु के लिए वृष्टि को उपस्थित कर सकें। ४ थे में देवापि को यज्ञ में आकर बैठने को कहा गया है। ५ वें, ६ ठे, ७ वें और ८ वें मन्त्रों में ऋषिषेण के पुत्र देवापि का यज्ञ द्वारा वृष्टि को ले आना सूचित किया है। १० वें मन्त्र में अग्नि में निन्नानवे हज़ार और ११ वें मन्त्र में नव्वे हज़ार आहुतियाँ देना कहा है।

९९ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि मैंने शत्रुओं को रुलाया और उनका धन छीन लिया है, इससे मुझ वम्र के माता-पिता का कष्ट दूर हो गया है। ६ ठे में लिखा है कि इन्द्र ने दासों का शासन किया, तथा ६ आँखों वाले और ३ सिर वाले (त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप) को मारा। इन्द्र से तेज प्राप्त कर त्रित ने तीखे नखों वाली उंगलियों से वराह का नाश किया। ९ वें में इन्द्र का कुत्स के लिए शुष्ण को मारना और उशना के शत्रुओं को वश करना कहा है। ११ वें में उशिज के पुत्र ऋजिश्वा का इन्द्र की स्तुति कर वज्र द्वारा विप्रु के गोष्ठ को तोड़ना और ऋजिश्वा की स्तुति से इन्द्र का शत्रु-पुरियों को नष्ट करना सूचित किया है। १२ वें मन्त्र में वम्र इन्द्र को हवि देने के लिए अपना पैदल ही उसके पास जाना कहता है।

१०० वें सूक्त के १२ वें मन्त्र में दवस्यु ऋषि का रज्जु-द्वारा गाय के अग्र भाग को खींचना सूचित किया है।

१०१ वें सूक्त के २ रे से ८ वें मन्त्र तक खेती से संबन्ध रखने वाले

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

साधनों और कार्यों का उल्लेख है। इस सूक्त में जुताई, हल, हल के डण्डे, हल के फाल, युग (जुआड़ा), खेत, बीज, हंसुआ, पके धान्य, पशुओं के जल पीने के स्थान, चमड़े की रस्सी, पानी के गड्ढे, घोड़े, रथ, मनुष्यों के जल पीने की जगह, गोष्ठ, कवच, लोह-पात्र, चमस, काष्ठ-पात्र, पत्थर के कुठार, शकट और शकट के आधार का उल्लेख है। (७ वें मन्त्र में पशुओं के जल पीने के जलाधार को एक द्रोण (३२ सेर) का बतलाया है और उसमें पत्थर के चक्र का होना कहा है।) ११ वें मन्त्र में लिखा है कि रथ के दोनों धुरों को शब्दायमान करता हुआ रथ को खींचने वाला पशु युद्ध में ऐसे चलता है, जैसे दो स्त्रियों का पति रति-क्रीड़ा करता है।

१०२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में मुद्‌गल स्वयं को कहते हैं कि जिस समय तेरा रथ असहाय हो, उस समय इन्द्र उसकी रक्षा करे। २ रे में इन्द्र-सेना नामक मुद्‌गलानी (मुद्‌गल की स्त्री) का रथ पर चढ़कर शत्रुओं से सहस्र गायों को जीतना और रथी बनना कहा है। ३ रे में इन्द्र से शत्रु को, वह चाहे दास-जाति का हो चाहे आर्य-जाति का, मारने को कहा गया है। ४ थे मन्त्र में कहा है कि यह वृषभ जल पी चुका और सींगों से मिट्टी खोदकर शत्रुओं की तरफ लपका। इसका अण्डकोष लटक रहा है। आहार के लिए यह दौड़ा आ रहा है। ५ वे में मनुष्यों का उस वृष के पास जाकर उसे गरजाना और युद्ध के बीच उससे मूत्र त्याग करवाना तथा इससे मुद्‌गल का सैकड़ों-हजारों गायें जीतना प्रकट किया है। आगे के ११ वें मन्त्र तक मुद्‌गल और मुद्‌गलानी का शत्रुओं को हरा कर उनकी गायें छीनना और मुद्‌गल का युद्धमें गिरना आदि वर्णित है।

१०३ वें सूक्त में इन्द्र, बृहस्पति, आदि से युद्ध में सहायता करने की प्रार्थना है। इसके १२ वें मन्त्र में (पापाभिमानी देव) आप्वा से शत्रुओं के मन को विचलित करने की प्रार्थना है।

१०४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में उशिज्-वंशियों का यज्ञ करना जानना बतलाया है।

१०५ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में इन्द्र की दाढी-मूँछ का हरी या उज्ज्वल होना कहा है। ११ वें मन्त्र में सुमित्र और दुर्मित्र का कुत्स के पुत्र की रक्षा करने वाले इन्द्र की स्तुति करना कहा है।

१०६ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में अश्विद्वय से कहा है कि तुम लोग अंकुश

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के समान जर्भरी (रोकने वाले) और तुर्फरी (मारने वाले) हो। नैतोश (हन्ता) के समान शत्रुओं के तुर्फरी (मारने वाले) और पर्फरीका (विदारण करने वाले) हो। मेरी मरणशील देह को फिर से युवा करो। ७ वें में कहा है कि जैसे लंबी टांगों वाला व्यक्ति दूसरे को जल से पार कर देता है, वैसे ही तुम मेरी नश्वर देह को विपत्ति से पार कर दो। ऋभु के समान तुम्हारा सुन्दर रथ उड़कर शत्रु का धन ले आया है। (इन मन्त्रों में ज़र्भरी, तुर्फरी, पर्फरी, आदि शब्द कुछ अनोखे से प्रतीत होते हैं।) १० वें में अश्विद्वय से कहा गया है कि जैसे भन-भनाती दो मधु-मक्खियाँ छत्ते में मधु संचित करती हैं, वैसे ही तुम गाय के स्तनों में मधुर दुग्ध का सेचन करो। जैसे मज़दूर पसीने से तर हो जाता है, वैसे ही तुम भी पसीने से तर होकर जल-से करो। ११ वें में कहा है कि भूतांश (ऋषि) ने इस स्तोत्र के द्वारा अश्विद्वय की इच्छा पूर्ण की।

१०७ वें सूक्त में दक्षिणा की और दक्षिणा देने वाले की महिमा है। ८ वें मन्त्र में लिखा है कि दक्षिणा देने वाला गायें, सुन्दरी स्त्री, और सुरा (मदिरा) प्राप्त करता है तथा शत्रुओं को जीतता है।

१०८ वें सूक्त में पणिगणों और सरमा (देवकुक्कुरी) का संवाद है। पणिगण कहते हैं—सुरमा तुम क्या किसी इच्छा से यहाँ आई हो ? यह मार्ग बड़े दूर का है। हमारे पास कौनसी वस्तु है, जिसके लिए तुम आई हो ? कितनी रातों में यहाँ पहुँची हो ? तुमने नदी जल को कैसे पार किया ? सरमा उत्तर देती है—मैं इन्द्र की दूती होकर आई हूँ। तुमने जो गायें, इकट्ठी की हैं, उन्हें लेना चाहती हूँ। पणि कहते हैं—तुम्हारे इन्द्र कैसे हैं ? वे कितने बली हैं ?—वे आवें। हम उन्हें मित्र समझेंगे। वे हमारी गायें ले सकते हैं।

उरमा कहती है—इन्द्र को कोई जीत या रोक नहीं सकता। इन्द्र पणियो को मार कर सुला देंगे। पणि कहते हैं—हे सरमा। तुम स्वर्ग की सीमा से आ रही हो। इसलिए इन गायों में से जिन-जिन को चाहो ले लो। बिना युद्ध के कौन तुम्हें गायें देता। हमारे पास भी तीखे शस्त्र हैं।

सरमा कहती है—यदि तुम गायें नहीं दोगे, तो देवता तुम्हारे यहाँ आने के मार्ग-पर आक्रमण कर देंगे। वृहस्पति तुम्हें दुःख देंगे। पणि कहते हैं—सरमा ! हमारी सम्पत्ति जिसमें गायें, घोड़े और अन्य धन है, पर्वतों से सुरक्षित है। रक्षा-समर्थ पणि लोग उसकी रक्षा करते हैं। तुम यहाँ व्यर्थ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ही आई हो। सरमा उत्तर देती है—अङ्गिरस आयास्य ऋषि और नवगु-गण सोम पान कर यहाँ आयेंगे और इन सारी गायों को भगा कर ले जायेंगे, उस समय तुम्हें यह घमण्ड की बात छोड़ देनी होगी। पणि कहते हैं—देवों ने भयभीत होकर ही तुम्हें यहाँ भेजा है। तुम्हें हम बहन के समान समझते हैं। तुम अब लौटकर न जाना। हम तुम्हें गायों का हिस्सा देते हैं। सरमा उत्तर देती है—मैं भाई-बहन की बात नहीं समझती। इन्द्र और अङ्गिरो-गण ने मुझे रक्षित करके यहाँ भेजा है। पणियों यहाँ से दूर भाग जाओ। गायें कष्ट पा रही हैं। वे इस स्थान से लौट चलें। बृहस्पति, सोम, सोमाभिषव-कारी पत्थर, ऋषि और विद्वान् इस गुप्त स्थान में स्थित गायों की बात जान गये हैं।

१०९ वें सूक्त में बृहस्पति का अपनी पत्नी जुहू को त्यागना और देवों का उसे शुद्ध चरित्र वाली बतलाकर फिर बृहस्पति को देना वर्णित है। उसमें लिखा है :—जिस समय बृहस्पति ने अपनी पत्नी जुहू को त्याग दिया, उस समय सूर्य, वायु, अग्नि, सोम, वरुण और प्रजापति की सन्तानों ने उन्हें ब्रह्म-किल्विष (पाप) का लगना कहा।

सबसे पहले सोम ने सती-साध्वी पत्नी को बृहस्पति को दिया। मित्र और वरुण ने उसका अनुमोदन किया तथा अग्नि उसे हाथ पकड़ कर ले आये।

सबने कहा कि इस विवाहिता पत्नी के शरीर को हाथ से ग्रहण करना चाहिए। यह (इसे ढूंढ़ने को भेजे हुए) दूत के प्रति अनासक्त रही है।

तपस्वी सप्तर्षियों और पहले के देवों ने इस पत्नी के विषय में कहा—यह शुद्ध-चरित्रा है और बृहस्पति ने इससे विवाह किया है।

स्त्री के न रहने पर बृहस्पति ब्रह्मचर्य-पालन करते हैं। वह देवों के साथ एक अङ्ग हो गये हैं। जैसे उन्होंने पहले सोम के द्वारा पत्नी को पाया था, वैसे ही फिर जुहू नाम की भार्या को पाया है।

देवों, मनुष्यों और राजाओं ने फिर से बृहस्पति को उनकी साध्वी भार्या सौंप दी।

देवों ने शुद्ध-चरित्रा पत्नी को फिर से लाकर बृहस्पति का पाप दूर किया। इसके बाद पृथ्वी का अन्न बाँट कर सब ही सुख से रहने लगे।

११२ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में इन्द्र का सबसे पहला काम जल के लिए मेघ को विदीर्ण करना और स्तोता के लिए गायों को सुलभ करना बताया है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

११३ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में कहा है कि इन्द्र ने जो मित्र के से कार्य किये हैं, उनकी सुन्दर वचनों और छन्दों द्वारा प्रशंसा करो। इन्द्र ने धुनि और चुमुरी नाम के असुरों को मारा है और दभीति नरेश की प्रार्थना सुनी हैं १० वें में इन्द्र से कहा गया है कि हम जो स्तोत्र वना रहे हैं, उस पर ध्यान दो।

११४ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में (ऋग्देव के उक्थों)[1] मन्त्रों की संख्या १५,००० बतलाई है।

११५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में उपस्तुत ऋषि अग्नि की स्तुति कर दीर्घायु होने की और पुत्र-प्राप्ति की कामना करता है। ९ वें मन्त्रमें वृष्टिहव्य के पुत्र उपस्तुत, आदि का 'वषट्' और 'नमो नमः' से अग्नि की स्तुति करना कहा है।

११७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा है कि देवों की बनाई भूख प्राण को नष्ट करती है। परन्तु भोजन करने पर भी प्राणों को मृत्यु आ घेरती है। दाता के धन की कमी नहीं होती। नहीं देने वाले को कोई सुखी नहीं कर सकता। २ रे में कहा है कि भूखे के अन्न मांगने को आने पर, जो अन्न वाला पुरुष अन्न नहीं देता और उसके सामने ही स्वयं भोजन करता है, उसे कोई सुखी नहीं कर सकता। (इन दोनों मन्त्रों के अन्तिम भाग एक से हैं।) ३ रे में दुर्बल व्यक्ति को अन्न देने वाले को यज्ञ के फल का मिलना बताया है। ४ थे में अपने मित्र के आने पर भी अन्न न देने वाले को मित्र कहाने योग्य नहीं माना है और उसके पास से चले जाने की सलाह दी है। ५ वें में याचक को धन दान देने की सम्मति दी है और धन को चक्र के समान घूमने वाला कहा है। ६ठे में दान-हीन पुरुष का भोजन करना भी उसकी मौत के समान बतलाया हैं। ७ वें में दाता को अदाता से श्रेष्ठ कहा है। ८ वें में लोगों का क्रमशः अपने से अधिक धनवान् के पास जाना सूचित किया है। ९ वें में कहा है कि हमारे दोनों हाथ समान होने पर भी उनकी शक्ति समान नहीं है। एक माँ से उत्पन्न दो गायें समान दूध नही देतीं। दो यमज भ्राताओं का बल एकसा नहीं होता। एक वंश के दो पुरुष समान दानी नहीं होते।

११९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में 'पञ्चकृष्टिः' शब्द चारों वर्णों और निषाद के लिए आया है।

---

१. सायणाचार्य यहाँ पर उक्थ का अर्थ प्राण्यङ्ग करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१२० वें सूक्त के ८ और ९ वें मन्त्रों में अथर्वा के पुत्र बृहद्दिव का इन्द्र के लिए वेद-पाठ और स्तुति-पाठ करना कहा है।

१२१ वें सूक्त में हिरण्यगर्भ (परमात्मा) की महिमा का वर्णन है। उसे सबसे पहला और सबका स्वामी तथा पृथ्वी और आकाश को यथा-स्थान स्थापित करने वाला कहा है। और ऐसे किसी देव के लिए हवन करने की इच्छा की है। आगे कहा है कि जो जीवात्मा को और बल को देने वाला, अमृत-रूपिणी छायावाला, देवताओं से भी आज्ञा को मनवाने वाला, मृत्यु को वश में रखने वाला, सब जीवों का अकेला राजा, सारे दो पैर वालों और चार पैर वालों का स्वामी है, जिसकी महिमा से हिमाच्छादित पर्वत और पृथ्वी से युक्त समुद्र उत्पन्न हुए हैं, जिसकी भुजायें दिशायें हैं, जिसने आकाश और पृथ्वी को दृढ़ता से रक्खा है, जिसने स्वर्ग और सूर्य को रोक रक्खा है, जो अन्तरिक्ष में जल उत्पन्न करता है, जिसके द्वारा शब्दायमान आकाश और पृथ्वी स्थिर हुए हैं और उन्होंने जिसे महिमाशाली समझा है, जिसके आश्रय से सूर्य उगते और प्रकाशित होते हैं, ऐसे किसी देवता के लिए हम हवन करें। फिर कहा है—पहले जल सारे भुवन को ढके हुए था। इसके बाद जल से अग्नि और अग्नि से देवों का प्राण-वायु उत्पन्न हुआ। जिस समय जल ने अग्नि को उत्पन्न किया, उस समय जिस ने जल के ऊपर चारों तरफ देखा और जो देवों का भी देव हुआ, ऐसे किसी महिमाशाली के लिए हम हवन करें। जिस सत्य-धर्म वाले ने पृथ्वी, आकाश और जल को उत्पन्न किया, ऐसे किसी देवता का हम हवन करें, वह हमें न मारे। हे प्रजापति! तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई भी इन सारी उत्पन्न हुई वस्तुओं को वश में नहीं रख सकता। जिस इच्छा से हम तुम्हारा हवन करते हैं, वह पूर्ण हो और हम धनवान हों। (इस सूक्त के १० मन्त्रों में से प्रथम ९ मन्त्रों का अन्तिम-पाद,—'कस्मै देवाय हविषा विधेम' किसी देवता या प्रजापति के लिए हम हवि से यज्ञ करें, है।)

१२२ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में वसिष्ठ-वंशियों का अग्नि को बुलाना कहा है।

१२३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में जल-वर्षक वेन देव का उल्लेख है।

१२५ वें सूक्त में वाग्देवी ने अपनी महिमा वर्णन की है।

१२७ वें सूक्त में रात्रि का वर्णन और स्तुति है तथा उषा से अन्धकार को नष्ट करने की प्रार्थना है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१२९ वां सूक्त नासदीय सूक्त कहाता है। उसमें लिखा है—उस समय असत्, सत्, पृथ्वी, आकाश और सातों भुवन नहीं थे। आवरण (ब्रह्माण्ड) नहीं था। किसी के स्थान का पता न था। क्या उस समय गहरा जल था ? उस समय मृत्यु, अमरता और रात-दिन का भेद नहीं था। वायु से शून्य, अपने आत्मावलम्वन से प्रश्वसित, ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ न था। अन्धकार (माया या अज्ञान) से अन्धकार (जगत् का कारण) ढका हुआ था। सभी अज्ञात और जलमय था। अविद्यमान वस्तु से वह सर्वव्यापी आछच्न्न था। तप के द्वारा वही एक तत्त्व पैदा हुआ था। सर्व-प्रथम परमात्मा के मन में काम (सृष्टि की इच्छा) उत्पन्न हुआ। उससे बीज (उत्पत्ति का कारण) निकला। विद्वानों ने असत् (अविद्यमान) से सत् (विद्यमान) का होना निश्चित किया है। वीज-धारण कर्त्ता पुरुष (भोक्ता) उत्पन्न हुआ। महिमायें (भोग्यं वस्तुएँ) उत्पन्न हुईं। उन (भोक्ताओं) का कार्य दोनों तरफ फैला। नीचे स्वधा (अन्न) और ऊपर प्रयति (भोक्ता) रहा। प्रकृति के तत्त्व को कौन जानता हैं ? कौन उसका वर्णन कर सकता है ? यह सृष्टि किस (उपादान) से बनी ? किस (निमित्त-कारण) से इसमें विविधता आई ? देवता लोग इन सृष्टियों के वाद उत्पन्न हुए। कहाँ से सृष्टि हुई यह कौन जानता है ? ये अनेक सृष्टियाँ कहाँ से हुईं ? किसने कीं और किसने नहीं कीं ? यह सब वही जानता हो, जो इनका स्वामी परमधाम में रहता हैं। परन्तु यह भी सम्भव है कि वह भी न जानता हो।

१३२ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में शकपूत ऋषि, मित्रदेव की कृपा के कारण अपने पाप द्वारा शत्रुओं का नष्ट होना प्रकट करता है। ७ वे मन्त्र में नृमेध ऋपि का विपत्ति से छूटना सूचित किया है।

१३५ वें सूक्त में कुमार नचिकेत और यम का संवाद और यम लोक का वर्णन है।

कुमार नचिकेत कहता है—जिस वृक्ष पर देवों के साथ यम पान करता है, मेरे विश्वपति पिता की इच्छा है कि मैं उसी वृक्ष पर जाकर पूर्वजों का साथी बनूं। मैंने इसके लिए पहले पिता को विरक्ति के साथ देखा था, परन्तु अब मैं तैयार हूँ।

यम उत्तर देता है—हे कुमार ! तुमने ऐसा नया रथ चाहा था, जिसमें चक्का न हो, जिसमें एक ही डण्डा हो और जो सब जगह जा सके। बिना समझे ही तुम ऐसे रथ पर चढ़े हो। तुमने, बुद्धिमान बान्धवों को छोड़कर,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उस रथ को चलाया है। वह तुम्हारे पिता के सान्त्वना-पूर्ण उपदेश के अनुसार चला और फिर उसी उपदेश-रूपी नौका पर स्थित होकर चला गया।

आगे पूछा गया है—इस बालक का जन्म-दाता कौन है? किसने इस रथ को भेजा है, जिससे यह बालक यम द्वारा जीव लोक में लौटाया जायगा? उस बात को हमें आज कौन कहेगा?

उत्तर में कहा गया है—जिससे यह बालक यम द्वारा जीव लोक में लौटाया जायगा, वह बात पहले ही कह दी गई थी। पहले पिता का उपदेश पैदा हुआ और बाद में लौटने का उपाय कहा गया।

आगे यम के स्थान के विषय में कहा है :—यही यम का स्थान है। यह देवों द्वारा बनाया गया कहा जाता है। यहाँ यम के लिए वीणा बजाई जाती है और यम की स्तुति की जाती है।

१३६ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में वातरशन-वंशज मुनियों का पीले वल्कल पहनना और देवत्व प्राप्त कर, वायु के पीछे चलने वाले होना कहा है।

१३८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कहा है कि सूर्य ने देखा कि आर्य लोग दासों से हारने वाले नहीं हैं। इन्द्र ने ऋजिश्वा से बन्धुत्व करके मायावी असुर पिप्रु के बल को नष्ट कर दिया।

१४२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में जरिता, अग्नि की स्तुति कर, उसकी ज्वाला को अपने से दूर रखने की प्रार्थना करता है। ४ थे मन्त्र में अग्नि से कहा है कि तुम वायु की सहायता से उसी प्रकार असीम पृथ्वी का मुण्डन कर देते हो, जिस प्रकार नाई दाढ़ी-मूँछ मूँड देता है।

१४३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विद्वय का अत्रि को और कक्षीवान् को युवा बना देना प्रकट किया है। २ रे में अश्विद्वय का अत्रि को शत्रुओं के बन्धन से मुक्त करना कहा है। ३ रे में अत्रि अश्विद्वय से कहते हैं कि तुम मुझे बुद्धि दो, जिससे मैं फिर तुम्हारी स्तुति कर सकूँ। ४ थे मन्त्र में अश्विद्वय से कहा गया है कि जब तुमने हमारे यज्ञारम्भ होने पर रक्षा की, तब हम जान गये कि तुमने हमारे स्तोत्र को सुन लिया है। ५ वे मन्त्र में कहा है कि भुज्यु समुद्र में गिरकर तरंगों के साथ ऊपर नीचे हो रहे थे। तुमने परों (पाल) वाली नौका द्वारा उनका उद्धार किया।

१४४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में लिखा है कि जैसे ऋभु यज्ञ करने वाले का पालन करते हैं, वैसे ही इन्द्र स्तोता ऊर्ध्वकृशन का पालन करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३ रे में श्येन (सुपर्ण) ऋषि, इन्द्र का अपनी वंश-वृद्धि करना सूचित करते हैं। ४ थे में श्येन (गरुड़) के पुत्र सुपर्ण का दूर देश से सोम को लाना सूचित किया है।

१४५ वें सूक्त में सपत्नी का मान-मर्दन करने वाली लता-रूप ओषधि से सपत्नी को नीचे गिराने और पति को अपने वश में करने की प्रार्थना है। इसके ६ ठे मन्त्र में पति से कहा गया है कि इस शक्तिवाली औषधि को मैंने तुम्हारे सिरहाने तकिये के नीचे रख दिया है, अतः तुम्हारा मन मेरी तरफ दौड़े।

१४६ वें सूक्त में अरण्यानी (वन) का वर्णन है। इसमें कहा गया है कि तुम देखते-देखते गायब हो जाती हो। तुम गाँव का मार्ग क्यों नहीं पूछती? क्या अकेले रहने में तुम्हें डर नहीं लगता? तुम्हारे यहाँ कोई बैल की तरह शब्द करता है कोई 'चीं चीं' कर उसका उत्तर देता है। वे सब मानो तुम्हारा यशोगान करते हैं। कही गायें चरती हैं, और कहीं लता गृह हैं। संध्या को उधर से कितनी ही गाड़ियाँ निकल रही हैं। एक व्यक्ति गाय को बुला रहा है, एक लकड़ी काट रहा है। जो व्यक्ति रात को वहाँ रहता है, वह आवाजें सुनता है। यदि दूसरे (व्याघ्र, चोर, आदि) न आवे तो अरण्यानी किसी को नहीं मारती। वहाँ पर सुस्वाद वाले फल खाकर समय बिताया जा सकता है। वहाँ पर कस्तूरी के समान सुगन्धि आती है। वहाँ भोजन सामग्री है; परन्तु खेती नहीं होती। वह हरिणों की मातृ रूपा है। इस प्रकार मैंने अरण्यानी (वन) की स्तुति की है।

१४८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि हे इन्द्र! वेन के पुत्र पृथि के स्तोत्र से तुम्हारी स्तुति की जाती है।

१४९ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में अर्चत् कहता है कि हे सविता! (मेरे पिता) अङ्गिरोवंशीय हिरण्यस्तूप तुम्हें इस यज्ञ में बुलाते थे।

१५० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि अग्नि ने युद्ध में अत्रि, भरद्वाज, गविष्ठिर, कण्व और त्रसदस्यु की रक्षा की। पुरोहित वसिष्ठ अग्नि को बुलाते हैं।

१५१ वें सूक्त में श्रद्धा की महिमा वर्णित है।

१५४ वें सूक्त में पितरों का वर्णन है और यम से प्रेत को पुण्यशाली पितरों के पास भेजने की प्रार्थना है। इसमें कुछ पितरों को सोम पीने वाले

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और कुछ को घी पीने वाले बतलाया है और उनका तपस्या, दान, पुण्य और युद्ध में वीरत्व-प्रदर्शन से स्वर्ग जाना कहा है ।

१५५ वें सूक्त में अलक्ष्मी का रूप, उसके कार्य और उसको भगाने की प्रार्थना है । इसके १ ले मन्त्र में शिरिम्बिठ ऋषि कहता है कि मैं उपाय द्वारा तुम्हें अवश्य ही दूर कर दूंगा । अगले ४ मन्त्रों का विषय भी अलक्ष्मी को दूर करना ही है (शिरिम्बिठ का अर्थ मेघ भी किया है ।)

१५६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा गया है कि जैसे घुड़दौड़ की जगह तेज दौड़ने वाले घोड़े दौड़ाये जाते हैं, वैसे ही हमारे स्तोत्र अग्नि को दौड़ा रहे हैं ।

१५८ वें सूक्त के ३ रे से ५ वें मन्त्र तक चक्षू-रक्षा की प्रार्थना है ।

१५९ वां सूक्त सपत्नी-नाशक सूक्त है । इसमें अपना सपत्नियों को जीत-कर पति को वश में करना सूचित किया है ।

१६१ वां सूक्त राजयक्ष्मा-नाशक सूक्त है । इसमें रोगी को यज्ञ-द्वारा अज्ञात यक्ष्मा और राज-यक्ष्मा से बचाने और उसकी सौ वर्ष की आयु होने की कामना है । (इस सूक्त के १ ले मन्त्र में 'ग्राहिर्जग्राह' का अर्थ-दुष्ट ग्रहों से गृहीत किया गया है ।)

१६२ वां सूक्त गर्भ-रक्षण सूक्त है । इसमें अग्नि से स्त्री के गर्भ की, गर्भ-घातक राक्षसों और रोगों आदि से, रक्षा करने की प्रार्थना है । इसके ३ रे मन्त्र में कहा है कि वीर्य-पात के समय, गर्भ में वीर्य-स्थिति के समय, उसके चलने के समय, या गर्भ के जन्म के समय, जो तुम्हारे गर्भ को नष्ट करना चाहता है, उसे हम यहाँ से दूर कर देते हैं । ४ थे में कहा है कि जो गर्भ नष्ट करने को तुम्हारी दोनों जाँघों को फैला देता है, या जो पति-पत्नी के बीच में सो जाता है, अथवा जो वीर्य-पात के समय योनि को चाट लेता है, उसे यहाँ से दूर करते हैं । ५ वें मन्त्र में कहा है कि जो तुम्हारा भाई, पति, या जार बनकर तुम्हारे पास आता है और तुम्हारी संतान को नष्ट करना चाहता है, उसे यहाँ से दूर कर देते हैं । ६ ठे में लिखा है कि जो तुम्हें स्वप्न में, या निन्द्रा में मोहित करके तुम्हारे पास आता है और तुम्हारी संतान को नष्ट करना चाहता है, उसे हम यहाँ से दूर कर देते हैं ।

१६३ वां सूक्त सर्वाङ्ग-रोग-नाशक है । इसमें नेत्रों, कानों, नासा-रन्ध्रों, चिबुक, सिर, मस्तिष्क और जीभ से यक्ष्मा को दूर करना कहा है । इसी

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकार गर्दन की धमनियों, स्नायु, अस्थि-सन्धि, दोनों भुजाओं, दोनों हाथों, दोनों कन्धों, अन्न-नाड़ी, क्षुद्रनाड़ी, बृहद्दण्ड, हृदय स्थान, मूत्राशय, यकृत, मांसपिण्डों, दोनों जांघों, घुटनों, एड़ियों, नितम्बों, कमर, मलद्वार, मूत्रेन्द्रिय, लोम, नख और सब अङ्गों से रोग को दूर करना कहा है।

१६४ वें सूक्त में स्वप्नावस्था और जाग्रत् अवस्था में हुए अमङ्गलों और पाप, आदि के नाश की कामना की गई है।

१६५ वें सूक्त में कपोत[1] के अपने घर में घुसने के और उल्लू की बोली के अमङ्गल को दूर करने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त से प्रकट होता है कि उस समय कपोत को 'निर्ऋति' का दूत और अपशुकन-कारक माना जाता था।)

१६६ वें सूक्त में शत्रुओं को हर प्रकार से पराजित करने की कामना है।

१६७ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र ने, विश्वामित्र और जमदग्नि को, अपने धन लेकर आपने पर, अपनी स्तुति करने का आदेश दिया है।

१६९ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कहा है कि गायें अपने शरीर को देवों के यज्ञ के लिए दिया करती हैं। सोम उनकी सम्पूर्ण आहुतियों को जानते हैं। इन्द्र उन्हें दूध और सन्तान युक्त करके हमारे लिए गोष्ठ में भेज दें।

१७१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र का सोम वाले इट की पुकार सुनना प्रकट किया है। २ रे में इन्द्र का यज्ञ के सिर को काटना और सोम वाले इट के घर में जाना सूचित किया है। ३ रे मन्त्र में इन्द्र का अस्त्रबुन्ध-पुत्र के बार-बार स्तुति करने से वेन-पुत्र पृथु को उसके वश में करना कहा है।

१७३ वें सूक्त में नवाभिषिक्त राजा के राज्य के स्थिर होने की कामना है। इसके १ ले मन्त्र में कहा है कि हे राजा ! तुम्हें राष्ट्रपति बनाया है, तुम इस देश के स्वामी बनो, अविचल होकर रहो और तुम्हारा राजपना नष्ट न हो। अन्तिम (६ ठे) मन्त्र में कहा है—हम अक्षय हवि के साथ अक्षय सोमरस को मिलाते हैं। अतः इन्द्र ने तुम्हारी प्रजा को तुम्हारे अकेले के अधीन और कर-देने वाली बना दिया है।

१७७ वें सूक्त में जीवात्मा और परमात्मा का विचार है। इस सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा है कि विद्वानों ने मन में सोचकर मानस चक्षु से एक पतङ्ग (जीवात्मा) को देखा कि उसे आसुरी माया घेर चुकी है। विद्वानों ने कहा कि यह समुद्र (परमात्मा) के बीच हो रहा है। विद्वान् लोग विधाता की

---

१. यहाँ कपोत से शायद कुररी (कबेड़ी, या फ़ाख्ता) का तात्पर्य होगा।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किरणों के स्थान (परमात्मा के आलोकमय धाम) में जाना चाहते हैं। २ रे में कहा है—कि पतंग (जीवात्मा) के मन में सारे ही शब्द स्थित हैं। गन्धर्व ने इन (शब्दों) को उसे गर्भ में ही सिखा दिया था। विद्वान् उसकी सत्य में ही रक्षा करते हैं। ३ रे मन्त्र में कहा है कि मैंने देखा कि गोपालक (जीवात्मा) का पतन नहीं होता। वह कभी निकट और कभी दूर के मार्गों (ऊँची और नीची योनियों) से भ्रमण करता है। वह कभी एक साथ ही अनेक वस्त्र (गुण) धारण करता है और कभी जुदा-जुदा पहनता है। इस प्रकार वह संसार में बार-बार आता-जाता रहता है।

१८१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कहा है कि जिस (वसिष्ठ) के वंशज प्रथ और जिस (भरद्वाज) के वंशज सप्रथ हैं, उनमें से वसिष्ठ धाता, सविता, और विष्णु के पास से 'रथन्तर' (साम-मन्त्र) ले आये। वह अनुष्टुप् छन्द और हवि को शुद्ध करने वाला है। २ रे मन्त्र में लिखा है कि जिस प्रच्छन्न और महान् (साम-मन्त्र) के द्वारा यज्ञ किया जाता है, वह छिपा हुआ था। भरद्वाज उसे धाता, सविता, विष्णु और अग्नि के पास से ले आये।

१८२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में बृहस्पति से दुर्गति, पाप, अमङ्गल, दुर्मति तथा यजमान के रोग और भय को दूर करने की प्रार्थना है। २ रे में कहा है कि प्रयाज में और अनुयाज में नराशंस अग्नि हमारा मङ्गल करे। वह अमङ्गल, दुर्मति और यजमान के रोग तथा भय का नाश करे। ३ रे में बृहस्पति से राक्षसों, अमङ्गल, दुर्मति तथा यजमान के रोग और भय को दूर करने की प्रार्थना है।

(इस सूक्त के तीनों मन्त्रों का चौथा पाद एक है।)

१८३ वें और १८४ वें सूक्तों में गर्भाधान की कामना और देवताओं से उस गर्भ की रक्षा की प्रार्थना है। १८३ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कहा है कि मैं ओषधियों में गर्भाधान का कारण हूँ। मैं अन्य सब भुवनों (प्राणियों) में गर्भाधान करता हूँ। मैं पृथ्वी पर प्रजा उत्पन्न करता हूँ। मैं अन्य स्त्रियों में भी पुत्र उत्पन्न करता हूँ। (यहाँ पर यज्ञ द्वारा पुत्रोत्पन्न करने का तात्पर्य है।)

१९१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में कहा है कि जैसे पूर्वकाल में देवता लोग एक मत होकर अपना भाग लेते थे, वैसे ही तुम भी साथ मिलो, साथ बोलो और तुम्हारा मन एक हो। ३ रे मन्त्र में कहा है इनकी स्तुति एकसी हो,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इनका आना एकसा हो और इनका मन तथा चित्त एकसा हो। मैं तुम्हें एक ही मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ और तुम्हारे समान हवि से हवन करता हूँ। ४ थे मन्त्र में कहा है—तुम्हारा अध्यवसाय एक हो, तुम्हारे हृदय एक हों, तुम्हारा मन एक हो और तुम पूर्ण रूप से आपस में संगठित होओ।

(यहां पर दसवां मण्डल और आठवां अष्टक समाप्त होते हैं।)

(यहीं पर ऋग्वेद-संहिता संपूर्ण होती है।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

परिशिष्ट 'अ'

मण्डल-सूची

मण्डल	पृष्ठ
प्रथम	१
द्वितीय	१८
तृतीय	२१
चतुर्थ	२६
पञ्चम	३१
षष्ठ	४१
सप्तम	४८
अष्टम	५७
नवम	७२
दशम	७७

अष्टक-सूची

अष्टक	पृष्ठ
प्रथम	१
द्वितीय	१२
तृतीय	२१
चतुर्थ	३३
पञ्चम	४६
षष्ठ	६०
सप्तम	७३
अष्टम	८६

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

परिशिष्ट 'ब'

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
प्राक्कथन	१५	नाम सायण	नाम मायण
,,	१८	१३७३	१३७२
,,	१९	१४०६	१४३६
,,	२३	पुस्तक का	पुस्तक को
२	२२	१२ स्वाहा	१२ स्वाहा । ऋग्वेद में कुल १० आप्री सूक्त हैं ।
४	३	लिये	किये
६	१	शयाति	शर्याति
६	२८	वत्रवध	वृत्रवध
८	१७	इसी से	इससे
९	६	इन्द्र की	इन्द्र का
९	११	दस्युओं को	दस्युओं का
१०	१८	विरवन-पुत्र	विखन-पुत्र
१८	२१	व्राह्मणाच्छसी	ब्राह्मणाच्छसी
२२	२	धिष्या	धिष्ण्या
२४	३०	की कट	कीकट
२९	१४	के समान	समान
३६	२६	आह्वन	आह्वान
३७	१२	सरमा की	सरमा का
३७	१९	मरुद्‌ण	मरुद्‌गण
३७	२२	कुछ	कुछ
३८	५	गायों	गायें
३८	२८	शशीयशी	शशीयसी
४०	१४	सतप्वध्रि	सप्तवध्रि
४२	२२-२३	पुरूकुत्स	पूरुकुत्स
४२	२४	पुत्र उशना	कवि-पुत्र उशना
४२	२९	स्तवन	इन्द्र का स्तवन

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४४	२	सञ्जय	सृञ्जय
४५	६	(गाङ्गयः)	(गाङ्गचः)
४५	२१	स्रोत्र	स्तोत्र
४७	२७	प्रशंशा	प्रशंसा
४८	२६	नहुप (राजा) को कर-दाता करना	प्रजा को नहुष (राजा) की कर-दाता करना
५०	२४	स्तुति का	स्तुति को
५६	१६	मण्ड्रका	मण्डूका
५६	२६	असत्य दवों	असत्य देवों
५७	७	मुग्दर	मुद्गर
५७	२२	अरुरवरम्बमाणः	ऊरुरवरम्बमाणः
५९	२२	मारुतों से	मरुतों से
६१	८	वल	वल
६३	११	२८ वें सूक्त	२९ वें सूक्त
६३	२८	प्रायोगी	प्रा (प्ला) योगि आसंग
६६	१६	दुःस्वप्न का	दुःस्वप्न के
६८	१५	अथ	अर्थ
६९	२	विष्ण्वायु	विष्ण्वापु
७०	७	परतीर	तीर पर
७३	११	अलंकृताक न्या	अलंकृता कन्या
७३	१९	घ्वत्र	घ्वस्र
७४	६	दो के टेढे	के दो टेढे
७४	२६	वनों का	वेनों का
७७	७	आप्य	आप्त्य
७८	२	मुझे	मुझ
८०	२	सरष्यू	सरण्यू
८५	२	वन्दन को	वन्दन को
८५	३१	वृष्टि-रीधक	वृष्टि-रोधक
८६	२९	स्मदिम	स्मदिभ
६	३०	सत्व्य	सव्य

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८७	६	करने की प्रार्थना करते हैं।	करने से इनकार करते हैं और देवता उनसे हवि-वहन करने की प्रार्थना करते हैं।
८७	२६	हे बाजी	हे वाजी
८८	१७	खङ्ग लेकर, यान लेकर	खड्ग लेकर, या न लेकर
८९	६	देवों में	देवों से
८९	२४	बध्यश्व-पुत्र	वध्यश्व-पुत्र
९२	१९	खङ्ग	खड्ग
९३	३	सबों के	सवों के
९४	१	हृद्चक्षु	हृदेचक्षु
९४	२४	उज्जवल	उज्ज्वल
९५	२	उदीजस्	उदोजस्
९६	२३	आप्वा	अप्वा
९७	१०	जल से करो	जल सेचन करो
९७	१७	सुरमा	सरमा
९७	२३	उरमा	सरमा
९८	१	अङ्गिरस आयास्य	आङ्गिरस आयास्य
१०१	७	आछच्न्न	आच्छन्न
१०४	१०	चक्षू-रक्षा	चक्षु-रक्षा
१०४	२७	निन्द्रा में	निद्रा में
१०५	२	क्षुद्रनाड़ी	क्षुद्र (गुदा) नाड़ी
१०५	१३	आपने पर	आने पर
१०५	१९	अस्त्रबुन्ध-पत्र	अस्त्रबुध्न-पुत्र

(इनके अतिरिक्त अनेक स्थानों पर 'व' के स्थान में 'ब' छाप दिया गया है। जैसे पृ ९, पं २२ में 'केवल' के स्थान पर 'केबल'; पृ १०, पं १३ में 'वन्दन' के स्थान पर 'बन्दन', आदि।)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal